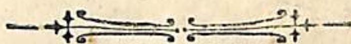
BAL-BODH-JYOTISH-SAR-SANGHRA
SANSKRIT

BAL-BODH Jyotish
— Sar-Sanghra
Sanskrit

॥ श्रीः ॥

बालबोधज्योतिषसारसंग्रहः ।



अयोध्यामण्डलान्तर्वर्तिलखीमपुरखीरीनिवासि-
ज्योतिर्वित्पण्डितनारायणप्रसादमिश्र-
लिखितभाषाटीकासहितः ।

अयं च
श्रीकृष्णदासात्मज–गङ्गाविष्णोः
स्वकीये " लक्ष्मीवेंकटेश्वर " मुद्रणयन्त्रालये
रामचंद्र राघो इत्यनेन स्वाम्यर्थं
मुद्रितः प्रकाशितश्च

संवत् १९७०, शके १८३५.

कल्याण–मुंबई.

भूमिका ।



विफलान्यन्यशास्त्राणि विवादस्तेषु केवलम् ॥
सफलं ज्योतिषं शास्त्रं चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ ॥ १ ॥

अन्य शास्त्र सब निष्फल हैं क्योंकि ज्योतिषशास्त्रकी अपेक्षा अन्य शास्त्रोंमें केवल विवादही है । ज्योतिषशास्त्र सफल है जिसमें चन्द्र सूर्य साक्षी हैं ।

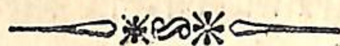
जिन लोगोंको ज्योतिषशास्त्रमें अभ्यास कमती है उनके उपकार निमित्त यह 'बालबोधज्योतिषसारसंग्रह' ग्रन्थ भाषाटीकासहित हमने लिखकर प्रकाशित किया है, ज्योतिषशास्त्रके प्रायः सबही आवश्यक विषय इसमें आगये हैं. यद्यपि इस विषयका ग्रन्थ श्रीभट्टाचार्य काशिनाथजीने संग्रह करके 'शीघ्रबोध' नामसे प्रकाशित किया, तथापि शीघ्रबोध क्रमविरुद्ध ग्रन्थ है, क्योंकि प्रथम होडाचक्रकी आवश्यकता थी सो भट्टाचार्यजीने चौथे (अन्तिम) प्रकरणमें लिखा है, इस बालबोधमें सम्वत्सरादि क्रमसे सब विषय समझकर लिखे गये हैं, पांच रत्नोंसे विभूषित यह बालबोध ग्रन्थ ज्योतिषशास्त्राध्ययनाभिलाषियोंको प्रथम पढनेके योग्य है, इसमें पांच रत्न हैं, १ प्रथम संज्ञारत्न, २ द्वितीय योगरत्न, ३ तृतीय मुहूर्तरत्न, ४ चतुर्थ संस्काररत्न, ५ पंचम मिश्ररत्न । लेखदोषसे यदि इसमें कहीं कुछ अशुद्ध लेख हो गया हो उसको पण्डितजन क्षमा करें, यह हमारी विद्वज्जनोंसे प्रार्थना है ।

सत्कृपाभाजन—

पण्डित नारायणप्रसादमिश्र,
लखीमपुर (खीरी अवध.)

श्रीः ।

अथ बालबोधज्योतिषसारसंग्रहस्थ-विषयानुक्रमणिका ।



इति विषयानुक्रमणिका समाप्त ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,

"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" **छापाखाना,**

कल्याण-मुंबई.

श्रीः ।

अथ भाषाटीकासहितः

बालबोधज्योतिषसारसंग्रहः ।

आदौ गुरुवरं नत्वा बालबोधविवृद्धये ॥
नारायणप्रसादेन क्रियते सारसंग्रहः ॥ १ ॥

भाषा–प्रथम सद्गुरुको प्रणाम करके बालकोंके बोधकी वृद्धिके निमित्त मिश्रनारायणप्रसादने ' ज्योतिषग्रन्थोंका ' सारसंग्रह किया ॥ १ ॥

पंचरत्नसमायुक्ते बालबोधाख्यसंग्रहे ॥
संज्ञारत्नं च प्रथमं द्वितीयं योगसंज्ञकम् ॥ २ ॥
मुहूर्ताख्यं तृतीयं तु संस्काराख्यं चतुर्थकम् ॥
पंचमं मिश्ररत्नं च समासेन विलिख्यते ॥ ३ ॥

भाषा–पांच रत्नोंसे संयुक्त बालबोधनामक इस संग्रहग्रन्थमें पहला संज्ञारत्न, दूसरा योगरत्न, तीसरा मुहूर्त्तरत्न, चौथा संस्काररत्न पांचवां मिश्ररत्न ये संक्षेपसे लिखे जाते हैं ॥ २ ॥ ३ ॥

तत्रादौ संज्ञारत्नं प्रथमं प्रारभ्यते ।

संवत्सरज्ञान ।

सम्वत्कालो ग्रहयुतः कृत्वा शून्यरसैर्हृतः ॥
शेषाः संवत्सराः ज्ञेयाः प्रभवाद्या बुधैः क्रमात् ॥ ४ ॥

भाषा–विक्रमीय संवत्सरके अंकोंमें नव संयुक्त करे और साठका भाग देवे, जो शेष अंक रहे सो प्रभव आदि संवत्सरका नाम क्रमपूर्वक पंडितोंकरके जानना ॥ ४ ॥

सम्वत्सरनाम ।

प्रभवो विभवः शुक्लः प्रमोदोऽथ प्रजापतिः ॥
अङ्गिराः श्रीमुखो भावो युवा धाता तथैव च ॥ ५ ॥
ईश्वरो बहुधान्यश्च प्रमाथी विक्रमो वृषः ॥
चित्रभानुः सुभानुश्च तारणः पार्थिवो व्ययः ॥ ६ ॥
सर्वजित्सर्वधारी च विरोधी विकृतिः खरः ॥
नन्दनो विजयश्चैव जयो मन्मथदुर्मुखौ ॥ ७ ॥
हेमलम्बी विलम्बी च विकारी शार्वरी प्लवः ॥
शुभकृच्छोभनः क्रोधी विश्वावसुपराभवौ ॥ ८ ॥
प्लवंगः कीलकः सौम्यः साधारणविरोधकृत् ॥
परिधावी प्रमादी च ह्यानन्दो राक्षसो नलः ॥ ९ ॥
पिङ्गलः कालयुक्तश्च सिद्धार्थी रौद्रदुर्मती ॥
दुन्दुभी रुधिरोद्गारी रक्ताक्षी क्रोधनः क्षयः ॥ १० ॥

भाषा–अब साठ संवत्सरोंके नाम लिखते हैं, १ प्रभव, २ विभव, ३ शुक्ल, ४ प्रमोद, ५ प्रजापति, ६ आंगिरा, ७ श्रीमुख, ८ भाव, ९ युवा, १० धाता, ११ ईश्वर, १२ बहुधान्य, १३ प्रमाथी, १४ विक्रम, १५ वृष, १६ चित्रभानु, १७ सुभानु, १८ तारण, १९ पार्थिव, २० व्यय, २१ सर्वजित, २२ सर्वधारी, २३ विरोधी, २४ विकृति, २५ खर, २६ नन्दन, २७ विजय, २८ जय, २९ मन्मथ, ३० दुर्मुख, ३१ हेमलम्बी, ३२ विलंबी, ३३ विकारी, ३४ शार्वरी, ३५ प्लव, ३६ शुभकृत, ३७ शोभन, ३८ क्रोधी, ३९ विश्वावसु, ४० पराभव, ४१ प्लवंग, ४२ कीलक, ४३ सौम्य, ४४ साधारण, ४५ विरोधकृत, ४६ परिधावी, ४७ प्रमादी, ४८ आनन्द, ४९ राक्षस, ५० नल, ५१ पिंगल, ५२ कालयुक्त, ५३ सिद्धार्थी, ५४ रौद्र, ५५ दुर्मति, ५६ दुन्दुभि, ५७ रुधिरोद्गारी, ५८ रक्ताक्षी, ५९ क्रोधन, ६० क्षय ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥

अयनज्ञान ।

शिशिरपूर्वमृतुत्रयमुत्तरं ह्ययनमाहुरहश्च तदामरम् ॥ भवति दक्षिणमन्यदृतुत्रयं निगदिता रजनी मरुतां च सा ॥ ११ ॥

भाषा-शिशिरऋतुसे तीन ऋतु (शिशिर, वसन्त, ग्रीष्म) में सूर्यकी गति उत्तर दिशाको होती है, इसको उत्तरायण कहते हैं यही देवताओंका दिवस है । शेष तीन ऋतुओं (वर्षा, शरद्, हेमन्त) में सूर्यकी गति दक्षिणको होती है इस कारण इसको दक्षिणायन कहते हैं यही देवताओंकी रात्रि कहाती है ॥ ११ ॥

संक्रांत्यनुसार ऋतुज्ञान ।

मृगादिराशिद्वयभानुभोगात् षडर्तवः स्युः शिशिरो वसन्तः ॥ ग्रीष्मश्च वर्षा च शरच्च तद्वद्धेमन्तनामा कथितश्च षष्ठः ॥ १२ ॥

भाषा-मकर आदि दो दो राशियोंमें सूर्यके भोगनेसे शिशिर आदि छः ऋतु होती हैं अर्थात् मकर कुंभके सूर्य हो तो शिशिर ऋतु, मीन मेषके सूर्य हो तो वसन्त ऋतु, वृष मिथुनके सूर्य हों तो ग्रीष्म ऋतु, कर्क सिंहके सूर्य हो तो वर्षा ऋतु, कन्या तुलाके सूर्य हो तो शरदृतु, वृश्चिक धनके सूर्य हो तो हेमन्त ऋतु होवे है ऐसा कहा है ॥ १२ ॥

मासानुसार ऋतुज्ञान ।

चैत्रादिद्विद्विमासाभ्यां वसन्ताद्यृतवश्च षट् ॥ दाक्षिणात्याः प्रगृह्णन्ति दैवे पित्र्ये च कर्मणि ॥ १३ ॥

भाषा-चैत्र आदि दो दो मासमें एक एक ऋतु होती है इस प्रकार बारह मासमें छः ऋतुयें होती हैं, जैसे चैत्र वैशाखमें वसन्त, ज्येष्ठ आषढमें ग्रीष्म, श्रावण भाद्रपदमें वर्षा, आश्विन (कुंवार)

कार्तिकमें शरद्, मार्ग पौषमें हेमन्त, माघ फाल्गुनमें शिशिर ऋतु जानना, ये दक्षिणदेशमें देवपितृकर्ममें प्रसिद्ध हैं ॥ १३ ॥

मासज्ञान।

मधुस्तथा माधवसंज्ञकश्च शुक्रः शुचिश्चाथ नभोनभस्यौ ॥ तथेषु ऊर्जश्च सहःसहस्यौ तपस्तपस्याविति ते क्रमेण ॥ १४ ॥

भाषा-मधु (चैत्र), माधव (वैशाख), शुक्र (ज्येष्ठ), शुचि (आषाढ), नभ (श्रावण), नभस्य (भाद्रपद), इषु (आश्विन), ऊर्ज (कार्तिक), सहः (मार्गशिर), सहस्य (पौष) तप (माघ) और तपस्य (फाल्गुन) ये बारह मास हैं ॥ १४ ॥

मासभेदज्ञान।

दर्शावधिं मासमुशन्ति चान्द्रं सौरं तथा भास्कर राशिभोगात् ॥ त्रिंशद्दिनं सावनसंज्ञमार्या नाक्षत्रमिन्दोर्भगणाश्रयाच्च ॥ १५ ॥

भाषा-मास चार प्रकारके होते हैं १ चान्द्रमास, २ सौरमास, ३ सावनमास, ४ नाक्षत्रमास, शुक्लपक्षकी प्रतिपदासे अमावास्यातक चान्द्रमास कहाता है, सूर्यके एक राशी भोगनेसे सौरमास कहाता है, कृष्णपक्षकी प्रतिपदासे पौर्णमासीतक सावनमास कहता है, अश्विनीसे रेवतीपर्यन्त नक्षत्रोंके भोगको नाक्षत्रमास कहते हैं ॥ १५ ॥

विवाहादौ स्मृतः सौरो यज्ञादौ सावनः स्मृतः ॥ पितृकार्येषु चान्द्रः स्यादार्क्षं दानव्रतेषु च ॥ १६ ॥

भाषा-विवाह आदि कार्योंमें सौरमास कहा है, यज्ञ आदि कार्योंमें सावनमास कहा है, पितृकार्यमें चान्द्रमास और दानव्रतमें नाक्षत्रमास ग्रहण करना ऐसा कहा है ॥ १६ ॥

अधिमासक्षयमासज्ञाने आदौ अधिकमाससम्भवः।

द्वात्रिंशद्भिर्गतैर्मासैर्दिनैः षोडशभिस्तथा॥
घटिकानां चतुष्केण पतत्यधिकमासकः॥ १७॥

भाषा–३२ महीने, १६ दिवस, ४ घडी व्यतीत हो जानेपर अधिकमासका संभव होता है॥ १७॥

शाके बाणकराङ्कके विरहिते नन्देन्दुभिर्भाजिते।
चैत्रे माधवकेऽनले शिवशिते ज्येष्ठेऽम्बरे चाष्टके॥
आषाढे नृपतौ शरे च नभसि भाद्रे च विश्वाङ्कके।
नेत्रे चाश्विनकेऽधिमास उदितः शेषेऽन्यके स्यान्नहि १८

भाषा–वर्तमान शालिवाहनशाकेकी अंकसंख्यामें नौ सौ पचीस घटावे शेष अंकोंमें उन्नीसका भाग देवे जो शेष तीन वा ग्यारह रहे तो चैत्र वा वैशाख अधिक मास जानना, शून्य अथवा आठ शेष रहे तो ज्येष्ठ अधिक मास जानना, सोलहका अंक शेष रहे तो आषाढ अधिक मास जानना, पांच शेष रहे तो श्रावण अधिक मास जानना, तेरह अंक शेष रहे तो भाद्रपद अधिक मास जानना, तथा दो शेष रहे तो आश्विन (कुँवार) अधिक मास जानना। इस प्रकार विचारकर अधिक मास कहना। शेष अंक रहनेसे अधिक मास नहीं होता है। उदाहरण–शाके १८२६ में ९२५ घटानेसे शेष अंक ९०१ में १९ का भाग दिया तो शेष ८ बचे इससे ज्येष्ठ अधिक मास आया सो जानना॥ १८॥

क्षयमास।

असंक्रान्तिमासोऽधिमासः स्फुटं स्याद्वि-।
संक्रांतिमासः क्षयाख्यः कदाचित्॥
क्षयः कार्तिकादित्रये नान्यतः स्या-।
त्तदा वर्षमध्येऽधिमासद्वयं च॥ १९॥

भाषा-जो चान्द्रमास संक्रान्तिरहित हो अर्थात् शुक्लप्रतिपदाके प्रारंभसे (एक मासभर) अमावास्याके अन्ततक संक्रांतिका प्रवेश न हो वही अधिकमास होता है और जो चान्द्रमासमें कदाचित् दो संक्रांति हों तो क्षयमास जानना । कार्तिक आदि तीन मास (कार्तिक, मार्ग, पौष) क्षय होते हैं, चैत्र आदि सात मास अधिक होते हैं, अन्य माघ फाल्गुन क्षय वा अधिक नहीं होते हैं, और जिस संवत्सरमें क्षयमास होगा उसी वर्षमें अधिक मास दो होंगे, परंतु यहां दो अमावास्याओंके बीच दो संक्रांतियोंके प्रवेश होनेसे क्षयमास जानना ॥ १९ ॥

सौरादिमासप्रयोजन ।

वर्षायनर्तुयुगपूर्वकमत्र सौरात् ।
मासास्तथा च तिथयस्तुहिनांशुमानात् ॥
यत्कृच्छ्रसूतकचिकित्सितवासराद्यं ।
तत् सावनाच्च घटिकादिकमार्क्षमानात् ॥ २० ॥

भाषा-वर्ष, अयन, ऋतु, युग आदि सौरमाससे जानना । महीना और तिथियोंका ज्ञान चान्द्रमाससे और व्रत उपवास सूतक तथा औषधी आदि कार्मोंमें दिनका विचार सावनमाससे तथा घडी आदिकका विचार नाक्षत्रमाससे जानना ॥ २० ॥

पक्षज्ञान ।

पूर्वापरं मासदलं हि पक्षौ पूर्वापरौ तौ
सितनीलसंज्ञौ ॥ पूर्वस्तु देवश्च परश्च
पित्र्यः केचित् तु कृष्णे सितपंचमीतः ॥
॥ २१ ॥ आदौ शुक्लः प्रवक्तव्यः केचित्
कृष्णेऽपि मासके ॥ २२ ॥

भाषा–एक मासके दो भाग पूर्व और पर नामसे शुक्ल और कृष्ण नामवाले दो पक्ष कहाते हैं, तहां शुक्ल प्रतिपदासे पौर्णमासीतक शुक्लपक्ष, फिर कृष्णप्रतिपदासे अमावास्यातक कृष्णपक्ष होता है। शुक्लपक्ष देवताओंका और कृष्णपक्ष पितरोंका होता है। किसी आचार्यका यहभी मत है कि शुक्ल (शुदी) पंचमीसे वदी पंचमीतक शुक्लपक्ष, उपरान्त पन्द्रह दिन अर्थात् वदी पंचमीसे शुदी पंचमीतक कृष्णपक्ष। यहां कोई शुक्लप्रतिपदासे अमावास्यातक, कोई कृष्णप्रतिपदासे अमावास्यातकका मास मानते हैं, ये दोनों प्रकारके मास और पक्ष देशानुसार प्रचलित हैं ॥ २१ ॥ २२ ॥

तिथिज्ञान ।

मासभाच्चन्द्रभं यावत् गणयेत्तावदेव तु ॥
यावन्ति गणनाङ्कानि तावंत्यस्तिथयः क्रमात् ॥ २३ ॥

भाषा–मासके नक्षत्रसे चन्द्रमाके नक्षत्र अर्थात् दिनके नक्षत्रतक गिननेसे जितनी संख्या हो अर्थात् जितने नक्षत्र गणनामें आवे उतनी संख्याकी तिथि क्रमसे जानना, परन्तु यह स्थूल क्रम है। मासनक्षत्र इस प्रकार है कि चैत्रका चित्रा, वैशाखका विशाखा, ज्येष्ठका ज्येष्ठा, आषाढका पूर्वाषाढा, श्रावणका श्रवण, भाद्रका पूर्वाभाद्रपदा, आश्विनका अश्विनी, कार्तिकका कृत्तिका, मार्गशिरका मृगशिरा, पौषका पुष्य, माघका मघा, फाल्गुनका पूर्वाफाल्गुनी। जो नक्षत्र जिस मासका है वह नक्षत्र उस मासकी पूर्णिमाको होता है अर्थात् पूर्णिमान्त महीनेसे गिनती बराबर होती है ॥ २३ ॥

प्रतिपच्च द्वितीया च तृतीया तदनन्तरम् ॥
चतुर्थी पंचमी षष्ठी सप्तमी चाष्टमी तथा ॥ २४ ॥
नवमी दशमी चैवेकादशी द्वादशी ततः ॥
त्रयोदशी ततो ज्ञेया ततः प्रोक्ता चतुर्दशी ॥ २५ ॥
पौर्णिमा शुक्लपक्षे तु कृष्णपक्षे त्वमा स्मृता ॥ २६ ॥

भाषा-प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी चतुर्दशी, शुक्लपक्षमें पौर्णिमा और कृष्णपक्षमें अमवास्या ये दोनों पक्षमें पन्द्रह पन्द्रह तिथियां कही हैं ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥

तिथिस्वामी ।

क्रमात्तिथीनां पतयोऽग्निधातृगौरी गणेशोऽहिगुहो रविश्च ॥ महेशदुर्गान्तकविश्वविष्णुकामेशसोमाः पितरो हि दर्शे ॥ २७ ॥

भाषा-अब क्रमसे तिथियोंके स्वामी कहते हैं । प्रतिपदाका स्वामी अग्नि, द्वितीयाका ब्रह्मा, तृतीयाकी गौरी, चतुर्थीके गणेश पंचमीके सर्प, षष्ठीके स्वामि कार्तिक, सप्तमीके सूर्यदेव, अष्टमीके महादेव, नवमीकी दुर्गादेवी, दशमीके यम, एकादशीके विश्वेदेव, द्वादशीके विष्णु, त्रयोदशीके कामदेव, चतुर्दशीके शिव, पूर्णिमाका स्वामी चन्द्रमा, अमावास्याका स्वामी पितर जानना ॥ २७ ॥

नन्दा च भद्रा च जया च रिक्ता पूर्णेति सर्वास्तिथयः क्रमात्स्युः ॥ कनिष्ठमध्येष्टफलाश्च शुक्ले कृष्णे भवन्त्युत्तममध्यहीनाः ॥ २८ ॥

भाषा-नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता, पूर्णा प्रतिपदा आदि सब तिथियोंके ये नाम क्रमसे होते हैं, सो इस प्रकार कि प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशीको नन्दा; द्वितीया, सप्तमी, द्वादशीको भद्रा; तृतीया अष्टमी, त्रयोदशीको जया; चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशीको रिक्ता; पंचमी, दशमी, पूर्णिमा और अमावास्याको पूर्णा कहते हैं । ये तिथि शुक्ल पक्षमें तो क्रमसे प्रत्येक तीनों तिथि अनिष्ट, मध्यम, इष्ट फल देनेवाली होती हैं और कृष्णपक्षमें सब कार्योंमें उत्तम, मध्यम, अधम फल देनेवाली होती हैं । जैसे शुक्लपक्षमें प्रतिपदासे पंचमीतक अशुभ, षष्ठीसे दशमीतक मध्यम और एकादशीसे

पूर्णमासीतक उत्तम होती हैं। कृष्णपक्षमें प्रतिपदासे पंचमीतक उत्तम, षष्ठीसे दशमीतक मध्यम और एकादशीसे अमावास्यातक अधम होती हैं॥ २८ ॥

वर्जित पदार्थ ।

कूष्माण्डं बृहतीफलानि लवणं वर्ज्यं तिलाम्लं तथा । तैलं चामलकं दिवं प्रवसता शीर्षं कपालान्त्रकम् ॥ निष्पावाश्च मसूरिका फलमथो वृन्ताकसंज्ञं मधु । द्यूतं स्त्रीगमनं क्रमात् प्रतिपदादिष्वेवमाषोडश ॥ २९ ॥

भाषा–प्रतिपदाको कुम्हडा, द्वितीयाको कटेरीका फल, तृतीयाके लवण, चतुर्थीको तिल, पंचमीका खटाई, षष्ठीको तेल, सप्तमीको आंवला, अष्टमीको नारियल, नवमीको काशीफल, दशमीको परवल, एकादशीको निष्पाव, द्वादशीको मसूर, त्रयोदशीको बैंगन, चतुर्दशीको मधु, पूर्णिमाको जुवां, अमावास्याको स्त्रीसंग वर्जित हैं, इस प्रकार प्रतिपदासे पूर्णिमापर्यन्त सोलहों तिथियोंमें ये वर्जित हैं॥२९॥

वारज्ञान ।

आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधश्चाथ बृहस्पतिः ॥
शुक्रः शनैश्चरश्चैते वासराः परिकीर्तिताः ॥ ३० ॥

भाषा–आदित्य (सूर्य,) चन्द्र, भौम, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनैश्चर ये सातवार कहे हैं ॥ ३० ॥

गुरुश्चन्द्रो बुधः शुक्रः शुभा वाराः शुभे स्मृताः ॥
क्रूरास्तु क्रूरकृत्ये स्युः सदा भौमार्कसूर्यजाः ॥ ३१ ॥

भाषा–बृहस्पति, चन्द्र, बुध, शुक्र ये वार शुभ कहे सो शुभ कार्यमें शुभ फलको देते हैं। और मंगल, सूर्य, शनैश्चर ये क्रूर वार हैं सो क्रूर कर्ममें सदा ग्रहण किये जाते हैं ॥ ३१ ॥

रविः शुक्रो महीसूनुः स्वर्भानुर्भानुजो विधुः ॥
बुधो बृहस्पतिश्चैव दिशामीशास्तथा ग्रहाः ॥ ३२ ॥

भाषा-पूर्वदिशाका स्वामी रवि, आग्नेयदिशाका स्वामी शुक्र, दक्षिण दिशाका स्वामी मंगल, नैर्ऋत्यका स्वामी राहु, पश्चिमका स्वामी शनि, वायव्यका स्वामी चंद्र, उत्तरका स्वामी बुध, ईशानका स्वामी गुरु इस प्रकार ये दिशाओंके स्वामी हैं ॥ ३२ ॥

वारकृत्य ।

सोमसौम्यगुरुशुक्रवासराः सर्वकर्मसु भवन्ति सिद्धिदाः ॥ भानुभौमशनिवासरेषु च प्रोक्तमेव खलु कर्म सिद्ध्यति ॥ ३३ ॥

भाषा-चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शुक्र ये वार सब कार्योंमें सिद्धिदायक होते हैं और रवि, मंगल, शनि इन वारोंमें जो काम करना कहा है वही काम सिद्ध होता है ॥ ३३ ॥

वारदोषादोष ।

न वारदोषा प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणाम् ॥ दिवा शशाङ्काऽर्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः ॥ ३४ ॥

भाषा-देवेज्य (बृहस्पति), दैत्येज्य (शुक्र), दिवाकर (सूर्य) इन वारोंका रात्रिमें दोष नहीं है और शशाङ्क (चन्द्र) शनि, मंगल इन वारोंका दिनको दोष नहीं है और बुधवारका दोष सर्वदा सब कामोंमें निन्दनीय है ॥ ३४ ॥

दिनज्ञान ।

चैत्रादिद्विगुणा मासा गताश्च तिथिभिर्युताः ॥
सप्तभिस्तु हरेद्भागं शेषांके दिन उच्यते ॥ ३५ ॥

श्रीदिनं कलहश्चैव आनन्दः कालकण्टकः ॥
धर्मदिनं तपश्चैव सप्तमो जयनन्दनः ॥ ३६ ॥

भाषा—चैत्र आदि माससंख्याको दूना करे और गत तिथि मिला देवे और सातका भाग देवे जो अंक शेष रहे वही दिन जानना, एक शेष रहे तो श्रीदिन, दो शेष रहे तो कलह, तीन शेषसे आनन्द, चार शेषसे कालकंटक, पांच शेषसे धर्मदिन, छः शेषसे तप, सात शेषसे जयनन्दन नाम दिन जानना, ये दिन अपने अपने नामके समान फल देते हैं ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

नक्षत्रज्ञान ।

द्विनिघ्नमासस्तिथियुग्विधूनो भशेषितः स्याद्दु-
डुशेषसंख्या ॥ मासस्तु शुक्लादित एव बोध्यः
कृष्णे द्विहीने मुनयो वदन्ति ॥ ३७ ॥

भाषा—चैत्र आदिसे वर्तमान माससंख्यातक गणना करके उस संख्याको दूना करे और तिथिसंख्याको जोड देवे, शुक्लपक्ष हो तो एक घटा देवे, कृष्णपक्ष हो तो दो घटा देवे, माससंख्या चैत्र-शुक्लसे गिने, तिथिकी संख्या भी शुक्लप्रतिपदासे मिलावे, उसमें सत्ता-ईसका भाग देवे जो शेष रहे वही अश्विनी आदिसे गिनकर नक्ष-त्रसंख्या जानिये ऐसा मुनिजन कहते हैं। उदाहरण—सम्वत १९६२ में फाल्गुनशुक्लद्वादशी बुधवारको नक्षत्र जानना है तो चैत्रसे फाल्गुनतक बारहमास हुए तो बारहको दूना किया तो चौवीस हुए शुक्ल प्रतिपदासे द्वादशीतक बारह संख्या जोड देनेसे छत्तीस हुए शुक्लपक्ष होनेसे एक घटाया तो पैंतीस रहे, इसमें सत्ताईसका भाग दिया तो ८ शेष रहे तो अश्विनीसे आठवां नक्षत्र पुष्य हुआ ॥ ३७ ॥

अश्विनी भरणी चैव कृत्तिका रोहिणी मृगः ॥
आर्द्रा पुनर्वसुः पुष्यस्ततोऽश्लेषा मघा तथा ॥ ३८ ॥

पूर्वाफाल्गुनिका तस्मादुत्तराफाल्गुनी ततः ॥
हस्तश्चित्रा तथा स्वाती विशाखा तदनन्तरम्॥३९॥
अनुराधा ततो ज्येष्ठा ततो मूलं निगद्यते ॥
पूर्वाषाढोत्तराषाढस्त्वभिजिच्छ्रवणस्तथा ॥ ४० ॥
धनिष्ठा शततारारुयं पूर्वाभाद्रपदा ततः ॥
उत्तराभाद्रपाच्चैव रेवत्येतानि भानि च ॥ ४१ ॥

भाषा–१ अश्विनी, २ भरणी, ३ कृत्तिका, ४ रोहिणी, ५ मृगशिरा, ६ आर्द्रा, ७ पुनर्वसु, ८ पुष्य, ९ आश्लेषा, १० मघा, ११ पूर्वाफाल्गुनी, १२ उत्तराफाल्गुनी, १३ हस्त, १४ चित्रा, १५ स्वाति, १६ विशाखा, १७ अनुराधा, १८ ज्येष्ठा, १९ मुल, २० पूर्वाषाढा, २१ उत्तराषाढा, २२ अभिजित्, २३ श्रवण, २४ धनिष्ठा, २५ शतभिषा, २६ पूर्वाभाद्रपदा, २७ उत्तराभाद्रपदा २८ रेवति ये अट्ठाईस नक्षत्र हैं ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥

नक्षत्रस्वामी ।

दस्रो यमोऽनलो धाता चन्द्रो रुद्रोऽदितिर्गुरुः ॥
भुजंगमश्च पितरो भगोर्यमदिवाकरौ ॥ ४२ ॥
त्वष्टा वायुश्च शक्राग्नी मित्रः शुक्रश्च निर्ऋतिः ॥
जलं विश्वे विधिर्विष्णुर्वासवो वरुणस्तथा ॥ ४३ ॥
अजैकपादहिर्बुध्न्यः पूषेति कथितो बुधैः ॥
अष्टाविंशतिसंख्यानां नक्षत्राणामधीश्वराः ॥ ४४ ॥

भाषा–अब नक्षत्रोंके स्वामी कहते हैं, अश्विनीके स्वामी अश्विनीकुमार, भरणीके यम, कृत्तिकाका अग्नि, रोहिणीके ब्रह्मा, मृगशिराका चन्द्रमा, आर्द्राके शिव, पुनर्वसुका अदिति, पुष्यके बृहस्पति, आश्लेषाके सर्प, मघाके पितर, पूर्वाफाल्गुनीका स्वामी भगदेवता,

उत्तराफाल्गुनीका अर्यमा, हस्तके सूर्य, चित्राके विश्वकर्मा, स्वातीका वायु, विशाखाके इन्द्र और अग्नि, अनुराधाके सूर्य, ज्येष्ठाका इन्द्र, मूलका निर्ऋति, पूर्वाषाढाका जल, उत्तराषाढाके विश्वेदेव, अभिजित्का विधि, श्रवणके विष्णु, धनिष्ठाका वसु, शतभिषाका वरुण, पूर्वाभाद्रपदाका अजचरण, उत्तराभाद्रपदाका अहिर्बुध्न्य, रेवतीका पूषा ये नक्षत्रोंके स्वामी हैं ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

द्वादश राशि ।

चू चे चो लाश्विनी ज्ञेया ली लू ले लो भरण्यथ ॥
आ ई ऊ ए कृत्तिका स्याद्रो वा वी वू तु रोहिणी ॥४५॥
वे वो का की मृगशिरा कु घ ङ छार्द्रका मता ॥
के को हा ही पुनर्भं च हू हे हो डा च पुष्यभम् ॥४६॥
डी डू डे डो तथाऽश्लेषा मा मी मू मे मघा तथा ॥
मो टा टी टू भवेत्पूर्वा टे टो पा प्युत्तरास्मृता ॥ ४७ ॥
हस्तः पू ष ण ठ प्रोक्ता चित्रा पे पो र रि स्मृता ॥
रू रे रो ता स्मृता स्वाती ती तू ते तो विशाखिका ४८
ना नी नू नेऽनुराधा स्याज्ज्येष्ठा नो या यि यु स्मृता ॥
ये यो भा भी भवेन्मूलं पूर्वाषाढा भु धा फ ढा ॥४९॥
भे भो जा ज्युत्तराषाढा जू जे जो खाऽभिजित्स्मृता ॥
खी खू खे खो श्रवणभं गा गी गू गे धनिष्ठिका ॥५०॥
गो सा सी सू शतभिषा पूभा से सो द दि स्मृता ॥
उभा दू था झ ञा ज्ञेया दे दो चा ची तु रेवती ॥५१॥

भाषा—एक नक्षत्रमें चार चरण होते हैं यथा चू चे चो ला अश्विनी ली लू ले लो भरणी इत्यादि पूर्वोक्त श्लोकोंका अर्थ चक्रपरसे जान लेना सो आगे लिखते हैं ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७॥४८॥४९॥५०॥५१॥

होडाचक्र ।

चू चे चो ला	अश्विनी ।	हू हे हो डा	पुष्य ।	रू रे रो ता	स्वाती ।	जू जे जो खा	अभिजित।
ली लू ले लो	भरणी ।	डी डू डे डो	आश्लेषा ।	ती तू ते तो	विशाखा ।	खी खू खे खो	श्रवण ।
आ ई उ ए	कृत्तिका ।	मा मी मू मे	मघा ।	ना नी नू ने	अनुराधा ।	गा गी गू गे	धनिष्ठा ।
ओ वा वी वू	रोहिणी ।	मो टा टी टू	पूर्वाफा-ल्गुनी ।	नो या यी यू	ज्येष्ठा ।	गो सा सी सू	शतभिषा ।
वे वो का की	मृगशिर ।	टे टो पा पी	उत्तराफा-ल्गुनी ।	ये यो भा भी	मूल ।	से सो दा दी	पूर्वाभाद्र-पदा ।
कू घ ङ छ	आर्द्रा ।	पू ष ण ठ	हस्त ।	भू ध फ ढा	पूर्वाषाढा।	दू थ झ ञ	उत्तराभा-द्रपदा ।
के को हा ही	पुनर्वसु ।	पे पो रा री	चित्रा ।	भे भो जा जी	उत्तरा-षाढा।	दे दो चा ची	रेवती ।

मेषो वृषश्च मिथुनः कर्कः सिंहश्च कन्यका ॥
तुलालिधनुषश्चैव मृगकुंभझषा इति ॥ ८२ ॥

भाषा—१ मेष, २ वृष, ३ मिथुन, ४ कर्क, ५ सिंह, ६ कन्या, ७ तुला, ८ वृश्चिक, ९ धनु, १० मकर, ११ कुंभ, १२ मीन ये बारह राशियां हैं ॥ ८२ ॥

राशिस्वामी ।

मेषवृश्चिकयोर्भौमः शुक्रो वृषतुलाधिपः ॥
बुधः कन्यामिथुनयोः कर्कस्याधिपतिर्विधुः ॥५३॥
स्यान्मीनधनुषोर्जीवः शनिर्मकरकुम्भयोः ॥
सिंहस्याधिपतिः सूर्यः कथितो गणकोत्तमैः ॥५४॥

भाषा–मेष और वृश्चिकका स्वामी भौम (मंगल), वृष और तुलाका स्वामी शुक्र, कन्या और मिथुनका स्वामी बुध, कर्कका स्वामी चन्द्रमा, मीन और धनुका स्वामी जीव (बृहस्पति), मकर और कुंभका स्वामी शनि, सिंहका स्वामी सूर्य है यह उत्तम पंडितोंने कहा है ॥ ५३ ॥ ५४ ॥

राशिज्ञान ।

सप्तविंशतिभानां च नवभिर्नवभिः पदैः ॥
अश्विनिप्रमुखानां च मेषाद्या राशयः स्मृताः॥५५॥

भाषा–अभिजित्को छोडकर अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रोंके नौ नौ चरणकी एक राशि मेष आदि कही है सो आगे लिखे अनुसार जानना ॥ ५५ ॥

अश्विनी भरणी कृत्तिकापादमेकं मेषः १ । कृत्तिकायास्त्रयः पादा रोहिणिमृगशिरार्द्धं वृषभः २ । मृगशिरार्द्धमार्द्रा पुनर्वसुपादत्रयं मिथुनः ३ । पुनर्वसुपादमेकं च पुष्यमाश्लेषान्तं कर्कः ४ । मघा पूर्वा उत्तराफाल्गुनीपादमेकं सिंहः ५ । उत्तराफाल्गुनीत्रयः पादाः हस्तश्चित्रार्द्धं कन्या ६ । चित्रार्द्धं स्वाती विशाखापाद-

त्रयं तुला ७। विशाखापादमेकमनुरा ज्ये-
ष्ठान्तं वृश्चिकः ८। मूलं च पूर्वाषाढोत्तराषाढा-
पादमेकं धनुः ९। उत्तरायास्त्रयः पादाः श्रवणध-
निष्ठार्द्धं मकरः १०। धनिष्ठार्द्धं शतभिषा पूर्वा-
भाद्रपदापादास्त्रयः कुंभः ११। पूर्वाभाद्रपदा-
पादमेकमुत्तराभाद्रपदारेवत्यन्तं मीनः ॥ १२ ॥

भाषा–अश्विनीके और भरणीके चार २ चरण, कृत्तिकाका एक चरण मेषराशि होती है। कृत्तिकाके तीन चरण, रोहिणीके चारों चरण और मृगशिरा आधी अर्थात् दो चरण आदिके इन नव चरणोंकी वृषराशि होती है। इसी प्रकार मिथुन आदि राशियोंको जानना सो चक्रमें स्पष्ट समझ लेना। नौ नौ चरणोंकी एक एक राशि सो चक्रसे जानना। जैसे चुन्नीलालका पहला अक्षर अश्वि-नीके प्रथम चरणमें है और मेषराशि है एवं चिरौंजीलाल नामसे मीनराशि जानना इसी प्रकार नामके पहले अक्षरसे राशि जान लेना॥

मेष	वृष.	मिथु.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन	राशि०
चू	ई	का	ही	मा	टो	रा	तो	ये	भो	गू	दी	नवचरण-(नामाक्षर)
चे	उ	की	हू	मी	पा	री	ना	यो	जा	गे	दू	
चो	ए	कु	हे	मू	पी	रू	नी	भा	जी	गो	थ	
ला	ओ	घ	हो	मे	पू	रे	नू	भी	खी	सा	झ	
ली	वा		डा	मो	ष	रो	ने	भू	खू	सी	ञ	
लू	वी	छ	डी	टा	ण	ता	नो	धा	खे	सू	दे	
ले	वू	के	डू	टी	ठ	ती	या	फा	खो	से	दो	
लो	वे	को	डे	टू	पे	तू	यी	ढा	गा	सो	चा	
आ	वो	हा	डो	टे	पो	ते	यू	भे	गी	दा	ची	

झभ मीने धने फाढा घङ युग्मे ठणा सुता ॥
न प्रोक्ता ङञणा वर्णा गजडः स्याद्यथाक्रमात् ॥१॥

भाषा-झ ञ ... मीनराशिमें हैं । फा ढा धनुराशिमें और घ ङ मिथुनराशिमें तथा ठा णा कन्याराशिमें हैं और ङ ञ ण इन तीन अक्षरोंका नाम धरते नहीं बनता सो ङके स्थानमें ग अक्षरका नाम धरे, ञके स्थानमें ज अक्षरका नाम धरे और णके स्थानमें ड अक्षरका नाम धरे ॥ १ ॥ आला मेष, उवा वृष, काछा मिथुन, डाहा कर्क, माटा सिंह, पाठा कन्या, राता तुला, नोया वृश्चिक, भाधा धनु, खागा मकर, गोमा कुंभ, दोचा मीन ॥ ५५ ॥

अधोमुखनक्षत्र ।

मूलाग्नेयमघाद्विदैवभरणी सार्पाणि पूर्वात्रयं ।
ज्योतिर्विद्भिरधोमुखं हि नवकं भानामिदं कीर्तितम् ॥
वापीकूपतडागगर्तपरिखाखातं विधेरुद्धृति- ।
क्षेपौ द्यूतबिलप्रवेशगणितारम्भः प्रसिद्ध्यन्तिच ॥५६॥

भाषा-मूल, कृत्तिका, मघा, विशाखा, भरणी, आश्लेषा, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्रपदा ये नव नक्षत्र पंडितोंने अधोमुखसंज्ञक कहे हैं । इन अधोमुखसंज्ञावाले नक्षत्रोंमें वापी (बावडी), कूप (कुवां), तडाग (तालाव), गर्त (गड्ढा), परिखा (खाई) इनका खोदना, द्रव्य निकालना और रखना, द्यूत (जुआं खेलना); बिलमें प्रवेश होना, गणितका आरम्भ ये काम करनेसे सिद्ध होते हैं ॥ ५६ ॥

तिर्यङ्मुखनक्षत्र ।

ज्येष्ठादित्यकराश्विनी मृगशिरः पूषाऽनुराधा-
निलत्वष्टाख्यानि वदन्ति भानि मुनयस्तिर्य-
ङ्मुखान्येषु च ॥ अश्वेभोष्ट्रलुलायरासभवृषोर-
भ्रादिदान्त्याश्विना । गन्त्रीयन्त्रहलप्रवाहगमना-
रम्भाः प्रसिद्ध्यन्ति च ॥ ५७ ॥

भाषा–ज्येष्ठा, पुनर्वसु, हस्त, अश्विनी, मृगशिरा, रेवती, अनुराधा, स्वाति, चित्रा ये नव नक्षत्र मुनियोंने तिर्यङ्मुख संज्ञक कहे हैं । इन तिर्यङ्मुखसंज्ञावाले नक्षत्रोंमें अश्व (घोडा), इभ (हाथी), उष्ट्र (ऊंट), लुलाय (भैंसा), रासभ (गधा), वृष (बैल), मेढा, सूकर, कुत्ता इनका ग्रहण करना और गंत्री, यंत्र (कोल्हू आदि), हल इनका चलाना तथा यात्रा आदिक कार्य सिद्ध होते हैं ॥ ९७ ॥

ऊर्ध्वमुखनक्षत्र ।

पुष्यार्द्राश्रवणोत्तराशतभिषक्ब्राह्मश्रविष्ठाह्वया-
न्यूर्ध्वास्यानि नवोदितानि मुनिभिर्धिष्ण्या-
न्यथैतेषु च ॥ प्रासादध्वजधर्मवारणगृहप्राकार-
सत्तोरणोच्छ्रायारामविधिर्हितो नरपतेः पट्टा-
भिषेकादि च ॥ ९८ ॥

भाषा–पुष्य, आर्द्रा, श्रवण, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपदा, शतभिषा, रोहिणी, धनिष्ठा ये नव नक्षत्र मुनियोंने ऊर्ध्वमुखसंज्ञक कहे हैं । इन ऊर्ध्वमुखसंज्ञावाले नक्षत्रोंमें देवमन्दिर बनवाना, ध्वजा बनवाना तथा घर, कोट, भीतका निर्माण करना, तोरण (वन्दनवार) बंधवाना, बाग लगवाना, राज्याभिषेक (राजतिलक) ये कार्य सिद्ध होते हैं ॥ ९८ ॥

ध्रुवस्थिरनक्षत्र ।

रोहिणीसहितमुत्तरात्रयं कीर्तयन्ति मुनयो ध्रुवा-
ह्वयम् ॥ बीजहर्म्यनगराभिषेचनारामशान्तिषु
हितं स्थिरेषु च ॥ ९९ ॥

भाषा–रोहिणी, तीनों उत्तरा (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपदा) ये नक्षत्र मुनियोंने ध्रुवस्थिरसंज्ञक कहे हैं । इन ध्रुवस्थिरसंज्ञावाले नक्षत्रोंमें बीज बोना, हर्म्य (मंदिर) तथा

नगरमें प्रवेश, राजतिलक, बाग लगाना ये कार्य शुभ होते हैं, भावार्थ यह कि ध्रुव स्थिर नक्षत्रोंमें स्थिर कार्य करना ॥ ५९ ॥

मृदुनक्षत्र ।

त्वाष्ट्रमित्रशशिपूषदैवतान्यामनन्ति मुनयो मृदून्यथ ॥ मित्रकार्यरतिभूषणाम्बरोद्गीतिमङ्गलविधानमेषु तु ॥ ६० ॥

भाषा-चित्रा, अनुराधा, मृगशिरा, रेवती इन नक्षत्रोंको मुनियोंने मृदुसंज्ञक कहा है, इन मृदुसंज्ञावाले नक्षत्रोंमें मित्रकार्य, स्त्रीप्रसंग, आभूषण और वस्त्रधारण, गाना आदि अनेक मङ्गल कार्य करना ६०

लघुनक्षत्र ।

अश्विनीगुरुभमर्कदैवतं साभिजिल्लघुचतुष्टयं मतम् ॥ पण्यभूषणकलारतौषधज्ञानाशिल्पगमनेषु सिद्धिदम् ॥ ६१ ॥

भाषा-अश्विनी, पुष्य, हस्त, अभिजित ये चार नक्षत्र लघुसंज्ञक हैं इनमें दूकान खोलना, आभूषण धारण करना, क्रीडा करना, औषधी बनाना, कारीगरीका काम खोलना, यात्रा करना ये काम सिद्ध होते हैं ॥ ६१ ॥

तीक्ष्णनक्षत्र ।

मूलशुक्रशिवसार्पदैवतान्युल्लपन्त्यथ च तीक्ष्णसंज्ञया ॥ भूतयक्षनिधिमंत्रसाधनं भेदबन्धवधकर्म चात्र तु ॥ ६२ ॥

भाषा-मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, अश्लेषा इन नक्षत्रोंकी तीक्ष्णसंज्ञा कही है । इनमें भूत और यक्ष आदिकोंकी पीडाका निवारण करना, द्रव्य निकालना, मंत्रसाधन, भेद, बन्धन ये कर्म शुभ होते हैं॥६२॥

चरनक्षत्र ।

वैष्णवत्रययुतः पुनर्वसुमारुते च चरपंचकं त्विदम् ॥ दन्तवाजिकरभादिवाहनारामयानविधिषु प्रशस्यते ॥ ६३ ॥

भाषा–श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पुनर्वसु, स्वाति ये पांच नक्षत्र चरसंज्ञक हैं, इनमें हाथी, घोडा आदि अनेक प्रकारके वाहन रखना, बागमें जाना, पालकी रथ आदिकी सवारी करना इन कामोंमें ये चरनक्षत्र शुभ जानना ॥ ६३ ॥

उग्रनक्षत्र ।

पूर्विकात्रितयमान्तकं मघात्युग्रपञ्चकमिदं जगुर्बुधाः ॥ शाठ्यनाशविषघातबन्धनोत्साहशस्त्रदहनादिषु स्मृतम् ॥ ६४ ॥

भाषा–तीनों पूर्वा (पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्रपदा,), भरणी, मघा ये पांच नक्षत्र पंडितोंने उग्रसंज्ञक कहे हैं, इनमें शठता करना, नाश, विषघात, बन्धन, उत्साह, शस्त्र चलाना, जलाना आदि कर्म करना कहा है ॥ ६४ ॥

मिश्रनक्षत्र ।

हव्यवाहभयुतं द्विदैवतं मिश्रसंज्ञमथ मिश्रकर्मसु ॥ स्वाभिधानसमकर्मसाधनं कीर्तितानि सकलानि सूरिभिः ॥ ६५ ॥

भाषा–कृत्तिका, विशाखा इन दो नक्षत्रोंकी मिश्रसंज्ञा है, सो मिश्र कर्मोंमें अर्थात् मिले हुए कार्य इन नक्षत्रोंमें करना, इन नक्षत्रोंके समान कर्म करने योग्य हैं ऐसा सम्पूर्ण पंडितोंने कथन किया है ॥ ६५ ॥

पंचक ।

वासवोत्तरदलादिपंचके याम्यदिग्गमनगेहगोपनम् ॥ प्रेतदाहतृणकाष्ठसंग्रहः शय्यकाविरचनं च वर्जयेत् ॥ ६६ ॥

भाषा–धनिष्ठाके उत्तरार्धसे लेके रेवतीपर्यन्त नक्षत्रोंको पंचक कहते हैं, अर्थात् कुंभ और मीनका चन्द्रमा पंचक कहाता है, इस पंचकमें दक्षिण दिशाकी यात्रा, घरका छवाना, प्रेतदाह, तृण (घासफूस) और काष्ठ (लकडी) का संग्रह (इकट्ठा करना) तथा शय्या (खाट) आदि बनवाना, बिनवाना इत्यादि कार्य नहीं करे ॥ ६६ ॥

पुष्यनक्षत्रगुणदोषवर्णन ।

परकृतमखिलं निहन्ति पुष्यो न खलु निहन्ति परन्तु पुष्यदोषम् ॥ ध्रुवममृतकरोऽष्टमेऽपि पुष्ये विहितमुपैति सदैव कर्मसिद्धिम् ॥ ६७ ॥

भाषा–पुष्य दूसरेके दोष और अष्टमस्थानस्थित चन्द्रके दोषको दूर करता है परन्तु पुष्यके दोषको दूसरा दूर नहीं कर सकता है, पुष्यमें किया हुआ सब कार्य सिद्ध होता है, आठवें चन्द्रमा हो तोभी पुष्यमें कार्य करे ॥ ६७ ॥

सिंहो यथा सर्वचतुष्पदानां तथैव पुष्यो बलवानुडूनाम् ॥ चन्द्रे विरुद्धेऽप्यथ गोचरेऽपि सिद्ध्यन्ति कार्याणि कृतानि पुष्ये ॥ ६८ ॥

भाषा–जिस प्रकार सब चतुष्पदों (चौपायों) में सिंह बलवान् है उसी प्रकार नक्षत्रोंमें पुष्य नक्षत्र बलवान् है, चन्द्रमा अनिष्ट अर्थात् चौथा, आठवां, बारहवां हो और गोचरमेंभी अरिष्ट हो तोभी पुष्यमें किया हुआ कार्य सिद्ध होता है ॥ ६८ ॥

ग्रहेण विद्धोऽप्यशुभान्वितोऽपि विरुद्धतारोऽपि विलोमगोऽपि ॥ करोत्यवश्यं सकलार्थसिद्धिं विहाय पाणिग्रहणं तु पुष्यः ॥ ६९ ॥

भाषा–ग्रहोंसे विद्ध, अशुभ ग्रहसे युक्त अथवा तारा इसके प्रतिकूल हो तोभी पुष्यमें किया हुआ कार्य सिद्ध होता है, परन्तु विवाहमें पुष्य वर्जित है ॥ ६९ ॥

योगज्ञान ।

वाक्पतेरर्कनक्षत्रं श्रवणाच्चन्द्रमेव च ॥
गणयेत् तद्युतिं कुर्याद्योगः स्यादृक्षशेषतः ॥ ७० ॥

भाषा–पुष्यनक्षत्रसे सूर्यनक्षत्रतक गिने और श्रवणनक्षत्रसे दिननक्षत्रतक गिने दोनों संख्याओंको युक्त कर सत्ताईसका भाग देवे जो शेष रहे वही योग विष्कंभसे गिनकर जाने । उदाहरण–सम्वत् १९६२ फाल्गुनशुदा पूर्णिमा शनिवारको योग जानना है, सूर्य पूर्वाभाद्रपदानक्षत्रके हैं पुष्यनक्षत्रसे पूर्वाभाद्रपदापर्यन्त १८ संख्या हुई और श्रवणसे दिननक्षत्र पूर्वाफाल्गुनीतक १७ संख्या हुई और दोनों संख्याओंको युक्त करनेसे ३५ संख्या हुई सत्ताईसका भाग देनेसे शेष ८ रहे विष्कंभसे गिना तो आठवां धृति योग है सो जानना ॥ ७० ॥

विष्कम्भः प्रीतिरायुष्मान् सौभाग्यः शोभनस्तथा ॥
अतिगण्डः सुकर्मा च धृतिः शूलस्तथैव च ॥ ७१ ॥
गण्डो वृद्धिर्ध्रुवश्चैव व्याघातो हर्षणस्तथा ॥
वज्रसिद्धी व्यतीपातो वरीयान् परिघः शिवः ॥ ७२ ॥
सिद्धः साध्यः शुभः शुक्लो ब्रह्मैन्द्रो वैधृतिः क्रमात् ॥
सप्तविंशतियोगास्तु कुर्युर्नामसमं फलम् ॥ ७३ ॥

भाषा–१ विष्कम्भ, २ प्रीति, ३ आयुष्मान्, ४ सौभाग्य, ५ शोभन, ६ अतिगण्ड, ७ सुकर्मा, ८ धृति, ९ शूल, १० गण्ड, ११ वृद्धि, १२ ध्रुव, १३ व्याघात, १४ हर्षण, १५ वज्र, १६ सिद्धि, १७ व्यतीपात, १८ वरीयान्, १९ परिघ, २० शिव, २१ सिद्ध, २२ साध्य, २३ शुभ, २४ शुक्ल, २५ ब्रह्म, २६ ऐन्द्र, २७ वैधृति ये सत्ताईस योग नामके तुल्य फल करते हैं अर्थात् जो इनके नामोंका अर्थ है वही फल जानना ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥

विरुद्धसंज्ञा इह ये च योगास्तेषामनिष्टः खलु पाद आद्यः ॥ सवैधृतिस्तु व्यतिपातनामा सर्वोऽप्यनिष्टः परिघस्य चार्धम् ॥ ७४ ॥ तिस्रस्तु योगे प्रथमे च वज्रे व्याघातसंज्ञे नवपञ्च शूले ॥ गण्डेऽतिगण्डे च षडेव नाड्यः शुभेषु कार्येषु विवर्जनीयाः ॥ ७५ ॥

भाषा–इन पूर्वोक्त योगोंमें जो विरुद्ध योग हों उनके आदिका चतुर्थांश (चौथा भाग) वर्जित है, व्यतीपात और वैधृति संपूर्ण वर्जित है और परिघ योग आधा वर्जित है, विष्कम्भ और वज्रकी तीन २ घडी, व्याघातकी नव घडी और शूलकी पांच घडी, गण्ड और अतिगंडकी छः २ घडी शुभ कार्यमें वर्जित हैं ॥ ७४ ॥ ७५ ॥

करणज्ञान ।

तिथिं च द्विगुणीकृत्य एकहीनं च कारयेत् ॥
सप्तभिश्च हरेद्भागं शेषं करणमुच्यते ॥ ७६ ॥

भाषा–तिथिसंख्याको दूना करे एक उसमें हीन करे अर्थात घटा देवे और सातका भाग देवे जो अंक शेष रहे वह करण बव आदिसे गिनकर जाने ॥ ७६ ॥

बवाह्वयं बालवकौलवाख्ये ततो भवेत्तैतिलनामधेयम् ॥ गराभिधानं वणिजं च विष्टिरित्याहुरार्याः करणानि सप्त ॥

अथवा । बवश्च बालवश्चैव कौलवस्तैतिलस्तथा ॥
गरश्च वणिजो विष्टः सप्तैतानि चराणि च ॥ ७७ ॥
कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां शकुनिः पश्चिमे दले ॥
चतुष्पदश्च नागश्च अमावास्यादले द्वये ॥ ७८ ॥
शुक्लप्रतिपदायाश्च किंस्तुघ्नः प्रथमे दले ॥
स्थिराण्येतानि चत्वारि करणानि जगुर्बुधाः ॥७९ ॥
शुक्लप्रतिपदांते च बवाख्यः करणो भवेत् ॥
एकादशैव ज्ञेयानि चरास्थिरविभागतः ॥ ८० ॥

भाषा–१ बव, २ बालव, ३ कौलव, ४ तैतिल, ५ गर, ६ वणिज, ७ विष्टि (भद्रा) ये सात करण चरसंज्ञक हैं। कृष्णपक्षकी चतुर्दशीके पश्चिमदल अर्थात् परार्धमें शकुनि करण होता है और अमावास्याके पूर्वदलमें चतुष्पद करण तथा परदलमें नागकरण होता है। शुक्लपक्षकी प्रतिपदाके पूर्वदलमें किंस्तुघ्नकरण होता है ये चार करण स्थिरसंज्ञक हैं अर्थात् ये चारों स्थिर रहते हैं। शुक्लप्रतिपदाके अंतमें बव नाम करण होता है, फिर बालव फिर कौलव फिर तैतिल इसी प्रकार सातों करण सब तिथियोंमें बार बार आते हैं। एवं ग्यारह करण चर और स्थिर भेदसे दो प्रकारके होते हैं। उदाहरण–जैसे शुक्लपक्षकी दशमीको करण जानना है तो दशके दूने बीसमें एक घटाया तो रहे १९ सातका भाग देनेसे शेष रहे ५ तो पांचवां गर करण दशमीके परदलमें जानना। तिथिकी गणना शुक्लप्रतिपदासे जानना। आगे चक्र लिखते हैं उसमें स्पष्ट समझ लेना ॥७७॥७८॥७९॥८०॥

कृष्णपक्षकरणचक्र ।

प्रतिप.	द्वितीया	तृतीया	चतुर्थी	पञ्चमी	षष्ठी	सप्तमी	अष्टमी	तिथयः
बालव	तैतिल	वणिज	बव	कौलव	गर	विष्टि	बालव	पूर्वदल
कौलव	गर	विष्टि	बालव	तैतिल	वणिज	बव	कौलव	परदल
नवमी	दशमी	एकाद.	द्वादशी	त्रयोद.	चतुर्द.	अमावास्या		तिथयः
तैतिल	वणिज	बव	कौलव	गर	विष्टि	चतुष्पद		पूर्वदल
गर	विष्टि	बालव	तैतिल	वणिज	शकुनि	नाग		परदल

शुक्लपक्षकरणचक्र ।

प्रतिप.	द्वितीया	तृतीया	चतुर्थी	पञ्चमी	षष्ठी	सप्तमी	अष्टमी	तिथयः
किंस्तुघ्न	बालव	तैतिल	वणिज	बव	कौलव	गर	विष्टि	पूर्वदल
बव	कौलव	गर	विष्टि	बालव	तैतिल	वणिज	बव	परदल
नवमी	दशमी	एकाद.	द्वादशी	त्रयोद.	चतुर्द.	पूर्णिमा		तिथयः
बालव	तैतिल	वणिज	बव	कौलव	गर	विष्टि		पूर्वदल
कौलव	गर	विष्टि	बालव	तैतिल	वणिज	बव		परदल

पौष्टिकस्थिरशुभानि बवाख्ये बालवे द्विजहितान्यपि कुर्यात् ॥ कौलवे प्रमदमित्रविधानं तैतिले शुभगताश्रयकर्म ॥ ८१ ॥

भाषा–पौष्टिक (व्रतादि), स्थिर (देवालयनिर्माणादि) शुभ कर्म बव करणमें करे, और बालव करणमें ब्राह्मणोंका हितकर्म करे, कौलव करणमें उन्माद और मित्रता करे, तैतिल करणमें विवाहादि मंगल कार्य करे ॥ ८१ ॥

गरे च बीजाश्रयकर्षणानि वाणिज्यके स्थैर्यवणिक्क्रियाश्च ॥ न सिद्धिमायाति कृतं च विष्ट्यां विषारिघातादिषु तन्त्रसिद्धिः ॥ ८२ ॥

भाषा–गर करणमें बीज बोने, हल चलाना आदि काम करे, वणिज करणमें स्थिर कर्म (देवप्रतिष्ठा, मन्दिर बनाना, हाट बैठना आदि कर्म) और व्यापार कर्म करे, विष्टि करण (भद्रा) में

कोईभी शुभ कार्य सिद्धिप्रद नहीं होता, परंतु क्रूर कर्म विषघातादि कर्म वर्जित नहीं हैं ॥ ८२ ॥

मंत्रौषधानि शकुनौ तु सपौष्टिकानि गोविप्रराज्यपितृकर्म चतुष्पदे तु ॥ सौभाग्यदारुणधृतिध्रुवकर्म नागे किंस्तुघ्ननाम्नि निखिलं शुभकर्म कार्यम् ॥ ८३ ॥

भाषा–शकुनि करणमें मंत्र, औषध, ग्रह पूजा आदि कर्म करे, चतुष्पद करणमें गौ, ब्राह्मण, राज्य और पितृसम्बन्धी कार्य करे, नाग करणमें सौभाग्यकर्म, युद्धमें जाना, धीरज और विद्याभ्यास आदि कर्म करे, किंस्तुघ्न करणमें सम्पूर्ण शुभ कार्य करे ॥ ८३ ॥

दशम्यां च तृतीयायां कृष्णे पक्षे परे दले ॥
सप्तम्यां च चतुर्दश्यां विष्टिः पूर्वे दले स्मृता ॥८४॥
एकादश्यां चतुर्थ्यां च शुक्ले पक्षे परे दले ॥
अष्टम्यां पूर्णिमायां च भद्रा पूर्वे दले स्मृता ॥ ८५॥

भाषा–कृष्णपक्षमें दशमी और तृतीयाको परदल (उत्तरार्ध) में भद्रा होती है सप्तमी और चतुर्दशीको पूर्वदल (पूर्वार्द्ध) में भद्रा होती है । तथा शुक्लपक्षमें एकादशी और चतुर्थीको परदलमें भद्रा होती है, अष्टमी और पूर्णमासीको पूर्वदलमें भद्रा होती है, इसीको विष्टिकरण कहते हैं ॥ ८४ ॥ ८५ ॥

कराली नन्दनी रौद्री दुर्मुखी सुमुखी तथा ॥
मिश्री च वैष्णवी हंसी ह्यष्टा नामानि भद्रया ॥८६॥

भाषा–१ कराली, २ नन्दनी, ३ रौद्री, ४ दुर्मुखी, ५ सुमुखी, ६ मिश्री, ७ वैष्णवी. ८ हंसी, भद्राके ये आठ नाम हैं । कोई

पंडित कहते हैं कि कृष्णपक्षमें तीजको कराली, सप्तमीको नन्दनी, दशमीको रौद्री, चतुर्दशीको दुर्मुखी, और शुक्लपक्षमें चतुर्थीको सुमुखी, अष्टमीको मिश्री, एकादशीको वैष्णवी, पूर्णिमाको हंसी नामवाली भद्रा होती है, परंतु इस बातका कोई विशेष प्रमाण नहीं मिला॥८६॥

भद्रावासज्ञान ।

मीने मेषे च सिंहे अलिनि निवसते स्वर्गलोके च भद्रा । कन्यायां तौलिसंस्थे धनुषि च मकरे नागलोके स्थितिश्च ॥ कर्के कुंभे वृषे स्यान्मिथुनहिमकरे वर्तते मर्त्यलोके । ज्ञेया चन्द्रप्रवाहात्रिभुवनविजया मर्त्यसंस्था विवर्ज्या ॥ ८७ ॥

भाषा—मीन, मेष, सिंह वृश्चिक इनका चन्द्रमा हो तो भद्राका वास स्वर्गलोकमें जानना और कन्या, तुला, धनु, मकरका चन्द्रमा हो तो पातालोकमें भद्राका वास जानना तथा कर्क, कुंभ, वृष, मिथुन इनका चन्द्रमा हो तो भद्रा मर्त्यलोकमें जानना इस प्रकार चन्द्रमाकी गतिसे गमन करनेवाली भद्रा त्रिभुवनको विजय करती है । मर्त्य (मनुष्य) लोकमें स्थित भद्रा शुभ कार्यमें वर्जित है॥८७॥

भद्राङ्गज्ञान ।

नाड्यस्तु पञ्चवदनेऽथ गले तथैका वक्षो दशैकसहितं नियतं चतस्रः ॥ नाभ्यां कटौ षडथ पुच्छलता च तिस्रो विष्टेर्बुधैरभिहितोऽङ्गविभाग एषः ॥ ८८ ॥

भाषा—भद्रास्थितिका प्रमाण ३० घडीका है । उसमें ५ घडी मुखमें धरे, १ घडी कंठमें, ११ घडी वक्षःस्थलमें, ४ घडी नाभिमें और ६ घडी कटि (कमर) में, ३ पुच्छमें इस प्रकार पण्डितोंने भद्राका अंगविभाग वर्णन किया है ॥ ८८ ॥

भद्राङ्गफल ।

मुखे कार्यध्वास्तिर्भवति मरणं चाथ गलके । धने हानिर्वक्षस्यथ कटितटे बुद्धिविलयः ॥ कलिर्नाभौ देशे विजयमथ पुच्छे च जगदुः । शरीरे भद्रायाः पृथगिति फलं पूर्वमुनयः ॥ ८९ ॥

भाषा–भद्राके मुखवाली घडीमें कार्य करे तो कार्य विध्वंस हो जाय, कंठमेंकी घडीमें कार्य करे तो मरण होवे, वक्षःस्थलकी घटिकामें कार्य करे तो धनकी हानि होवे, कटि (कमर) की घडीमें कार्य करे तो बुद्धिका विनाश होवे, नाभिमेंकी घडीमें कार्य करनेसे कलह होवे, पुच्छकी घडीमें कार्य होवे तौ विजय होवे इस प्रकार भद्राके शरीरविभागसे पूर्वमुनियोंने पृथक् २ फल कहा है ॥ ८९ ॥

चन्द्रमावासज्ञान ।

मेषे च सिंहे धनुपूर्वभागे वृषे च कन्यामकरे च याम्याम् ॥ युग्मे तुले कुंभसुपश्चिमायां कर्कालिमीनेषु तथोत्तरायाम् ॥ ९० ॥

भाषा–मेष, सिंह, धनु इन राशियोंका चंद्रमा पूर्व दिशामें जानना; वृष, कन्या, मकरमें दक्षिण दिशामें चंद्रमाका वास जानना; मिथुन, तुला और कुंभका चंद्रमा पश्चिम दिशामें जानना; कर्क, वृश्चिक, मीनका चन्द्रमा उत्तर दिशामें जानना ॥ ९० ॥

अलौ मेषसिंहेऽरुणे युद्धकारी वृषे कर्कटे तौलिके श्वेतसिद्धिः ॥ धनुर्मीनयुग्मेषु पीते च लक्ष्मी मृगे कुंभकन्याशशीश्यामभृत्युः ॥ ९१ ॥

भाषा–वृश्चिक, मेष और सिंहका चन्द्रमा रक्त वर्ण और युद्धकारी जानना; वृष, कर्क, तुला इनका चंद्रमा श्वेत वर्ण और सिद्धिप्रदाता जानना; धनु, मीन, मिथुनका चंद्रमा पीत वर्ण और

लक्ष्मीका बढानेवाला जानना तथा मकर, कुंभ, कन्याका चन्द्रमा श्यामवर्ण और मृत्युकारी जानना ॥ ९१ ॥

इति श्रीमन्मिश्रशोभारामसुतज्योतिर्वित्पंडितनारायणप्रसादविलिखिते बालबोधाख्यज्योतिषसारसंग्रहे संज्ञारत्नं प्रथमं समाप्तम् ॥ १ ॥

द्वितीययोगरत्नप्रारंभः ।

तत्रादौ सिद्धियोगज्ञान ।

आदित्ये चाष्टमी हस्ते अश्विनी चोत्तरात्रयम् ॥
मूलं पुष्यो धनिष्ठा च सिद्धियोगाः प्रकीर्तिताः॥१॥

भाषा–रविवारको अष्टमी तिथि हस्त, अश्विनी, तीनों उत्तरा मूल, पुष्य, धनिष्ठा ये नक्षत्र होवें तो सिद्धियोग कहा है ॥ १ ॥

सोमे च नवमी पुष्ये श्रवणे रोहिणी मृगः ॥
दशम्यां वरुणं भं च सिद्धियोगाः प्रकीर्तिताः ॥ २ ॥

भाषा–सोमवारको नवमी, दशमी तिथि और पुष्य, श्रवण, रोहिणी, मृगशिरा, शतभिषा नक्षत्र हो तो सिद्धियोग कहा है ॥२॥

भौमे षष्ठी तृतीया च अष्टमी च त्रयोदशी ।
मूलाश्विनी मृगाश्लेषा सिद्धाण्युत्तरभाद्रपात् ॥ ३ ॥

भाषा–मंगलवारको तृतीया, अष्टमी और त्रयोदशी तिथि हो, मूल, अश्विनी, मृगशिरा, आश्लेषा, उत्तराभाद्रपदा नक्षत्र हो तो सिद्धियोग जानना ॥ ३ ॥

बुधवारे द्वितीया च सप्तमी द्वादशीषु च ॥
मृगाऽनुराधा पुष्याश्च सिद्धा कृत्तिकरोहिणी ॥ ४ ॥

भाषा–बुधवारको द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी तिथि और मृगशिरा,

अनुराधा, पुष्य, कृत्तिका, रोहिणी नक्षत्र हो तो सिद्धियोग होता है ॥ ४ ॥

गुरौ च दशपंचम्यां पौर्णिमास्यां विशाखयोः ।
पौष्णाश्विन्याऽनुराधा च सिद्धा पुष्यपुनर्वसुः ॥ ५ ॥

भाषा–गुरुवारको दशमी, पंचमी, पौर्णमासी तिथि और विशाखा, रेवती, अश्विनी, अनुराधा, पुष्य, पुनर्वसु नक्षत्र हो तो सिद्धियोग जानना ॥ ५ ॥

शुक्रे प्रतिपदा षष्ठ्यैकादशी च त्रयोदशी ॥
रेवतीपूर्वभाश्विन्यो श्रुतिश्चित्रादितिः शुभा ॥ ६ ॥

भाषा–शुक्रवारको प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी, त्रयोदशी तिथि और रेवती, पूर्वाभाद्रपदा, अश्विनी, श्रवण, चित्रा, पुनर्वसु नक्षत्र हो तो सिद्धियोग जानना ॥ ६ ॥

शनौ चतुर्थी नवमी चतुर्दशी च रोहिणी ॥
श्रवणं च मघा स्वाती पूर्वाफाल्गुनि सिद्धिदा ॥ ७ ॥

भाषा–शनिवारको चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी तिथि और श्रवण, मघा, स्वाती, पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र हो तो सिद्धियोग जानना ॥ ७ ॥

विरुद्धयोग ।

सूर्ये विशाखा भरणी द्वादशी च चतुर्दशी ॥
अनुराधा मघा ज्येष्ठा विरुद्धा सप्तमी सदा ॥ ८ ॥

भाषा–रविवारको विशाखा, भरणी, द्वादशी, चतुर्दशी, अनुराधा, मघा, ज्येष्ठा सप्तमी सदा विरुद्ध जानना अर्थात् रविवारको ये नक्षत्र और तिथि त्याज्य हैं ॥ ८ ॥

चन्द्रे चित्रोत्तराषाढा पूर्वाषाढाविशाखयोः ।
एकादश्यां त्रयोदश्यां षष्ठी यत्नेन वर्जयेत् ॥ ९ ॥

भाषा-चन्द्रवारको चित्रा, उत्तराषाढा, पूर्वाषाढा, विशाखा, एकादशी, त्रयोदशी और षष्ठी हो तो विरुद्धयोग जानना ये यत्नपूर्वक त्याग करे ॥ ९ ॥

भौमे आर्द्रा धनिष्ठा च प्रतिपत् पूर्वभाद्रपत् ॥
शतभिषक्चोत्तराषाढा दशमी च विवर्जयेत् ॥१०॥

भाषा-मंगलवारको आर्द्रा, धनिष्ठा, प्रतिपदा, पूर्वाभाद्रपदा, शतभिषा, उत्तराषाढा और दशमी वर्जित करे ॥ १० ॥

बुधे धनिष्ठा भरणी अश्विनी मूलसंयुता ॥
तृतीया नवमी चैव प्रतिपद्रेवती त्यजेत् ॥ ११ ॥

भाषा-बुधवारको धनिष्ठा, भरणी, अश्विनी, मूल, तृतीया, नवमी, प्रतिपदा, रेवती ये त्याग करे ॥ ११ ॥

जीवेऽष्टमी चतुर्थ्यां तु आर्द्रा चोत्तरफाल्गुनी ॥
रोहिणी शतभिषक् षष्ठी कृत्तिका मृगवर्जिता ॥१२

भाषा-बृहस्पतिवारको अष्टमी, चतुर्थी, आर्द्रा, उत्तराफाल्गुनी, रोहिणी, शतभिषा, षष्ठी, कृत्तिका, मृगशिरा ये वर्जित हैं ॥ १२ ॥

भार्गवे रोहिणी ज्येष्ठा द्वितीया सप्तमीषु च ॥
पुष्याश्लेषा मघा चैव सर्वकर्माणि वर्जयेत् ॥ १३ ॥

भाषा-शुक्रवारको रोहिणी, ज्येष्ठा, द्वितीया, सप्तमी, पुष्य, आश्लेषा, मघा ये सब कामोंमें त्याग करे ॥ १३ ॥

सौरे चित्रोत्तराषाढा रेवती त्रीणि सप्तमी ॥
षष्ठी चोत्तरफाल्गुन्या पूर्वाषाढा विवर्जयेत् ॥ १४ ॥

भाषा-शनिवारको चित्रा, उत्तराषाढा, रेवती, अश्विनी, भरणी, सप्तमी, षष्ठी, उत्तराफाल्गुनी, पूर्वाषाढा त्याग करे ॥ १४ ॥

कर्क (क्रकच) योग ।

षष्ठी तु शनिवारेण शुक्रेणैव तु सप्तमी ॥
अष्टमी गुरुवारेण नवमी चन्द्रजेन तु ॥ १५ ॥
दशमी भौमवारेण सोमे ह्येकादशी तथा ॥
सूर्ये च द्वादशी प्रोक्ता कर्कयोगाः प्रकीर्तिताः॥१६॥

भाषा—शनिवारको षष्ठी, शुक्रवारको सप्तमी, बृहस्पतिको अष्टमी, बुधवारको नवमी, मंगलवारको दशमी, सोमवारको एकादशी, रविवारको द्वादशी हो तो कर्क (क्रकच) योग कहा है ॥ १५ ॥ १६ ॥

चरयोग ।

रवौ पूषा गुरौ पुष्यः शनौ मूलं भृगौ मघा ॥
सौम्ये ब्राह्मयं विशा भौमे चन्द्रेर्द्रा चरयोगकः।१७॥

भाषा—रविवारको रेवती, गुरुवारको पुष्य, शनिवारको मूल, शुक्रवारको मघा. बुधवारको रोहिणी, भौमवारको विशाखा, सोमवारको आर्द्रा नक्षत्र हो तो चरयोग जानना ॥ १७ ॥

दग्धयोग ।

बुधे तृतीया कुजे पञ्चमी च षष्ठ्यां गुरावष्टमी शुक्रवारे ॥ एकादशी सोमशनिर्नवम्यां द्वादश्यथार्केऽष्विति दग्धयोगः ॥ १८ ॥

भाषा—बुधवारके दिन तृतीया तिथि हो, मंगलवारको पंचमी, बृहस्पतिको षष्ठी, शुक्रवारको अष्टमी, सोमवारको एकादशी, शनिवारको नवमी, रविवारको द्वादशी हो तो दग्धयोग होता है ॥ १८ ॥

सिद्धियोग ।

शुक्रे नन्दा बुधे भद्रा जया भौमे प्रकीर्तिता ॥
शनौ रिक्ता गुरौ पूर्णा सिद्धियोगा उदाहृताः॥१९॥

भाषा-शुक्रको नन्दा १।६।११ तिथि, बुधको भद्रा २। ७।१२ तिथि, भौमवार (मंगल) को जया ३।८।१३ तिथि, शनिवारको रिक्ता ४।९।१४ तिथि, गुरुवारको पूर्णा ५।१०। १५ तिथि हो तो सिद्धियोग कहा है ॥ १९ ॥

अमृतसिद्धियोग ।

आदित्यहस्ते गुरुपुष्ययोगे बुधानुराधा शनि-रोहिणी च ॥ सोमे च विष्णुर्भृगुरेवती च भौमाश्विनी चामृतसिद्धियोगः ॥ २० ॥

भाषा-रविवारको हस्तनक्षत्र हो, गुरुवारको पुष्य हो, बुधवारको अनुराधा हो, शनिवारको रोहिणी हो, सोमवारको श्रवण, शुक्रवारको रेवती और मंगलवारको अश्विनीनक्षत्र हो तो अमृतसिद्धियोग जानना ॥ २० ॥

मूशलवज्रयोग ।

चन्द्रे चित्रा भृगौ ज्येष्ठा शनौ चैव तु रेवती ॥
चन्द्रजे तु धनिष्ठोक्ता रवौ तु भरणी तथा ॥ २१ ॥
उषाश्चैव तु भौमे च गुरौ चैवोत्तरा तथा ॥
अथ मुशलवज्राख्ययोगो वर्ज्यः शुभे बुधैः ॥ २२ ॥

भाषा-चन्द्रवारको चित्रा, भृगुवारको ज्येष्ठा, शनिवारको रेवती, बुधवारको धनिष्ठा, रविवारको भरणी, भौमवारको उत्तराषाढा, गुरुवारको उत्तराफाल्गुनीनक्षत्र हो तो मुशलवज्रयोग जानना । यह मुशल वज्रयोग पंडितोंने शुभकार्यमें वर्जित कहा है ॥ २१ ॥ २२ ॥

यमघंटयोग ।

रवौ मघा बुधे मूलं गुरौ चैव तु कृत्तिका ॥
भौमे चार्द्रा शनौ हस्तः शुक्रे चैव तु रोहिणी ॥ २३ ॥
चन्द्रे विशाखायोगोऽयं यमघण्टः प्रकीर्तितः ॥ २४ ॥

भाषा–रविवारको मघा, बुधवारको मूल, गुरुवारको कृत्तिका, भौमवारको आर्द्रा, शनिवारको हस्त और शुक्रवारको रोहिणी नक्षत्र हो तो यमघंट योग कहा है ॥ २३ ॥ २४ ॥

यमदंष्ट्रयोग ।

मघा धनिष्ठा सूर्ये तु चन्द्रे मूलविशाखके ॥
कृत्तिका भरणी भौमे सौम्ये पूषा पुनर्वसुः ॥ २५ ॥
गुरौ ऊषाश्विनी शुक्रे रोहिणी चानुराधिका ॥
शनौ विष्णुः शताभिषक् यमदंष्ट्रा प्रकीर्तिता॥२६॥

भाषा–रविवारको मघा धनिष्ठा हो, चन्द्रवारको मूल विशाखा हो, मंगलवारको कृत्तिका भरणी हो, बुधवारको रेवती पुनर्वसु हो, गुरुवारको उत्तराषाढा अश्विनी हो, शुक्रवारको रोहिणी अनुराधा हो, शनिवारको श्रवण वा शतभिषा नक्षत्र हो तो यमदंष्ट्रयोग कहा है सो शुभ कार्यमें वर्जित है ॥ २५ ॥ २६ ॥

मृत्युयोग ।

रवौ भौमे भवेन्नन्दा भद्रा जीवशशाङ्कयोः ॥
जया शुक्रे बुधे रिक्ता शनौ पूर्णा च मृत्युदा ॥२७॥

भाषा–रवि और भौमवारको नन्दा १ । ६ । ११ तिथि हो, गुरु और चन्द्रवारको भद्रा २ । ७ । १२ तिथि हो, शुक्रवारको जया ३ । ८ । १३ तिथि हो, बुधवारको रिक्ता ४ । ९ । १४ तिथि हो, शनिवारको पूर्णा ५ । १० । १५ तिथि हो तो मृत्युदायक योग जानना ॥ २७ ॥

उत्पातादियोग ।

विशाखादिचतुष्कं तु भास्करादिक्रमेण तु ॥
उत्पातमृत्युकालाख्यासिद्धियोगाः प्रकीर्तिताः ॥२८॥

भाषा–विशाखा आदि चार नक्षत्र रविवार आदि वारोंमें क्रमसे

हों तौ उत्पात, मृत्यु, काल, सिद्धि ये योग क्रमसे कहे हैं सो चक्रमें स्पष्ट जानना ॥ २८ ॥

उत्पातादियोग चक्र ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	वार.
वि.	पूषा.	ध.	रे.	रो.	पु.	उ. फा.	उत्पात
ऽनु.	उषा.	श.	अ.	मृ.	ऽश्ले.	ह.	मृत्यु
ज्ये.	ऽभि.	पू. भा.	भ.	आ.	म.	चि.	काल
मू.	श्र.	उ. भा.	कृ.	पु.	पू. फा.	स्वा.	सिद्धि.

आनन्दादियोग ।

आनन्दाख्यः कालदण्डश्च धूम्रो धाता सौम्यो ध्वांक्षकेतुः क्रमेण ॥ श्रीवत्साख्यो वज्रकं मुद्गरश्च छत्रं मित्रं मानसं पद्मलुम्बौ ॥ २९ ॥ उत्पातमृत्युः किल काणसिद्धिः शुभोऽमृताख्यो मुशलं गदश्च ॥ मातङ्गरक्षश्चरसुस्थिराख्याः प्रवर्धमानाः फलदाः स्वनाम्ना ॥ ३० ॥

भाषा-१ आनन्द, २ कालदंड, ३ धूम्र, ४ धाता (प्रजापति), ५ सौम्य, ६ ध्वांक्ष, ७ केतु (ध्वज), ८ श्रीवत्स, ९ वज्र, १० मुद्गर, ११ छत्र, १२ मित्र, १३ मानस, १४ पद्म, १५ लुंब, १६ उत्पात, १७ मृत्यु, १८ काण, १९ सिद्धि, २० शुभ, २१ अमृत, २२ मुशल, २३ गद, २४ मातंग, २५ राक्षस, २६ चर, २७ सुस्थिर, २८ प्रवर्धमान ये अट्ठाईस योग हैं सो अपने नामके समान फलदायक होते हैं ॥ २९ ॥ ३० ॥

आनन्दादियोगज्ञान ।

सूर्येऽश्विभात् तुहिनरोचिषि चन्द्रधिष्ण्यात् सार्पाच्च भूमितनयेऽथ बुधे च हस्तात् ॥ मैत्राद्गुरौ भृगुसुते खलु वैश्वदेवाच्छायासुते वरुणभात् क्रमशः स्युरेवम् ॥ ३१ ॥

भाषा–रविवारको अश्विनीसे आनन्दादि योगकी गणना करे, सोमवारको मृगशिरासे, मंगलवारको आश्लेषानक्षत्रसे, बुधवारको हस्तनक्षत्रसे, गुरुवारको अनुराधासे, शुक्रवारको उत्तराषाढासे, शनिवारको शतभिषासे आनन्दादि योगकी गणना करे जैसे रविवारको अश्विनीनक्षत्र हो तो आनन्द योग, भरणी हो तो कालदंड योग, कृत्तिका हो तो धूम्रयोग एवं प्रजापति आदियोग जानना, सो आगे चक्रमें स्पष्ट जानना ॥ ३१ ॥

ध्वांक्षे वज्रे मुद्गरे चेषुनाड्यो वेदा नाड्यः पद्मलुंबे गदेऽश्वाः ॥ धूम्रे काणो मूशले भूर्द्वयं द्वे रक्षोमृत्यूत्पातकालाश्च सर्वे ॥ ३२ ॥

भाषा–ध्वांक्ष, वज्र और मुद्गरयोगके आदिकी पांच घडी वर्जित हैं। पद्म लुंबकी चार घडी, गदकी ७ घडी, धूम्रकी १ घडी, काणकी २ घडी, मुशलकी २ घडी वर्जित हैं और राक्षस, मृत्यु, उत्पात, काल समस्त वर्जित हैं अर्थात् इन योगोंकी सम्पूर्ण ६० घटी वर्जित हैं ॥ ३२ ॥

आनन्दादियोगचक्र ।

योग	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श
आनंद	अ	मृ	ऽश्ले	ह	ऽनु	उ. षा	श
कालदंड	भ	आ	म	चि	ज्ये	ऽभि	पू
धूम्र	कृ	पु	पू	स्वा	मू	श्र	उ
प्रजापति	रो	पु	उ	वि	पू	ध	रे

योग	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श
सौम्य	मृ	ऽश्ले	ह	ऽनु	उ	श	अ
ध्वांक्ष	आ	म	चि	ज्ये	ऽभि	पु	भ
ध्वज	पु	पू	स्वा	मू	श्र	उ	कृ
श्रीवत्स	पू	उ	वि	पू	ध	रे	रो
वज्र	ऽश्ले	ह	ऽनु	उ	श	अ	मृ
मुद्गर	म	चि	ज्ये	ऽभि	पू	भ	आ
छत्र	पू	स्वा	मू	श्र	उ	कृ	पु
मित्र	उ	वि	पू	ध	रे	रो	पु
मानस	ह	ऽनु	उ	श	अ	मृ	ऽश्ले
पद्म	चि	ज्ये	ऽभि	पू	भ	आ	म
लुंब	स्वा	मू	श्र	उ	कृ	पु	पू
उत्पात	वि	पू	ध	रे	रो	पु	उ
मृत्यु	ऽनु	उ	श	अ	मृ	ऽश्ले	ह
काण	ज्ये	ऽभि	पू	भ	आ	म	चि
सिद्धि	मू	श्र	उ	कृ	पु	पू. भा	स्वा
शुभ	पू	ध	रे	रो	पु	उ	वि
अमृत	उ	श	अ	मृ	ऽश्ले	ह	ऽनु
मुशल	ऽभि	पू	भ	आ	म	चि	ज्ये
गद	श्र	उ	कृ	पु	पू. भा	स्वा	मू
मातंग	ध	रे	रो	पु	उ. फा	वि	पू
राक्षस	श	अ	मृ	ऽश्ले	ह	ऽनु	उ
चर	पू	भ	आ	म	चि	ज्ये	ऽभि
सुस्थिर	उ	कृ	पु	पू	स्वा	मू	श्र
प्रवर्धमान	रे	रो	पु	उ	वि	पू	ध

त्रिपुष्करयोग ।

भद्रा तिथी रविजभूतनयाऽर्कवारे ।

द्वीशार्यमाजचरणादितिवह्निविश्वे ॥
त्रैपुष्करो भवति मृत्युविनाशवृद्धौ ।
त्रैगुण्यदो द्विगुणकृद्वसुतक्षचान्द्रे ॥ ३३ ॥

भाषा–भद्रा २।७।१२ तिथि, शनि, मंगल, रविवार, विशाखा, उत्तराफाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपदा, पुनर्वसु, कृत्तिका, उत्तराषाढा ये तिथि वार नक्षत्र हों तो त्रिपुष्करयोग होता है। मृत्यु, विनाश और वृद्धि एक वार होनेसे तीन वार मृत्यु, विनाश और वृद्धि होवे है इसीसे इसका नाम त्रिपुष्करयोग है । धनिष्ठा, चित्रा, मृगशिरा इन नक्षत्रोंका पूर्वोक्त वार और तिथियोंके योगसे दो वार मृत्यु, विनाश और वृद्धि जानना इसको द्विपुष्कर योग जानना ॥ ३३ ॥

अयोगः सिद्धियोगश्च द्वावेतौ भवतो यदि ॥
अयोगो हन्यते तेन सिद्धियोगः प्रवर्त्तते ॥ ३४ ॥

भाषा–यदि अयोग और सुयोग दोनों एकही दिन हों तो अयोगको दूर करके सिद्धियोग होता है अर्थात अयोग विनष्ट हो जाता है और सिद्धियोग अपना शुभ फल करता है ॥ ३४ ॥

रवियोग ।

सूर्यभाद्वेदगोतर्कदिग्विश्वनखसंमिते ॥
चन्द्रर्क्षे रवियोगाः स्युर्दोषसंघविनाशकाः ॥ ३५ ॥

भाषा–सूर्यके नक्षत्रसे चन्द्रमाके नक्षत्रतक गिने अर्थात जिस नक्षत्रपर सूर्य हो उससे दिननक्षत्रतक गणना करे, यदि ४।९। ६।१०।१३।२० संख्या हो तो रवियोग होता है, सो दोषसमूहको विनाश करता है ॥ ३५ ॥

कपिलाषष्ठीयोग ।

आश्विने कृष्णपक्षे च षष्ठ्यां भौमेऽथ रोहिणी ॥
व्यतीपातस्तदा षष्ठी कपिलाऽनन्तपुण्यदा ॥३६॥

भाषा—आश्विनमास (कुँवार) कृष्णपक्ष, षष्ठी तिथि, भौम (मंगल) वार, रोहिणीनक्षत्र और व्यतीपातयोग ये सब एकही साथ हों तो कपिलाषष्ठीयोग कहाता है, यह योग अनन्त पुण्यका देनेवाला है ॥ ३६ ॥

गोविन्दद्वादशीयोग ।

यदा चापे जीवो भवति घटराशौ दिनमणि- ।
स्तथा तारानाथः स्वभवनगतः फाल्गुनसिते ॥
यदाऽर्को द्वादश्यामदितिभयुतः शोभनयुत- ।
स्तदा गोविन्दाख्यं हरिदिवसमस्मिन्भुवितले ॥ ३७ ॥

भाषा—जो धनराशिमें बृहस्पति हो, कुंभराशिमें सूर्य हो, चन्द्रमा अपने घर (कर्कराशि) में हो और फाल्गुनशुक्लपक्ष हो, रविवारको द्वादशी हो; पुनर्वसुनक्षत्र, शोभनयोग हो ये सब एकही साथ होनेसे गोविन्दनामक हरिदिवस होता है, सो यह योग प्रथ्वीतलमें स्नान दान पुण्यके निमित्त बहुतही श्रेष्ठ होता है ॥ ३७ ॥

पुष्करयोग ।

विशाखास्थो यदा भानुः कृत्तिकासु च चन्द्रमाः ॥
संयोगः पुष्करो नाम पुष्करेष्वतिदुर्लभः ॥ ३८ ॥

भाषा—विशाखा नक्षत्रका सूर्य हो, कृत्तिका नक्षत्रका चन्द्रमा हो ऐसे संयोगका नाम पुष्कर योग है पुष्करक्षेत्रमें यह योग परम दुर्लभ है ॥ ३८ ॥

वारुणीयोगः ।

वारुणेन समायुक्ता मधौ कृष्णत्रयोदशी ॥
गंगायां यदि लभ्येत सूर्यग्रहशतैः समा ॥ ३९ ॥
शनिवारसमायुक्ता सा महावारुणी स्मृता ॥
शुभयोगसमायुक्ता शनौ शतभिषा यदि ॥ ४० ॥

महामहेति विख्या[illegible] [illegible]टिकुलमुद्धरेत् ॥ ४१ ॥

भाषा–शतभिषा नक्ष[illegible] [illegible] त्रयोदशीके दिन हो तो वारुणीयोग होता है सो गंगा[illegible]में स्नान दान करनेसे सैकडों सूर्यग्रहणके समान पुण्यफल दे[illegible]वाला यह योग जानना । उसी दिन यदि शनिवारभी हो तो महावारुणीयोग कहा है । शुभयोग हो और शनिवार शतभिषानक्षत्र यदि हो तो महामहावारुणी योग होता है तीन करोड कुलको उद्धार करता है ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥

व्यतीपातयोग ।

पंचाननस्थौ गुरुभूमिपुत्रौ मेषे रविः स्याद्यदि शुक्लपक्षे ॥ मासाभिधाना करभेण युक्ता तिथिर्व्यतीपात इतीह योगः ॥ ४२ ॥

भाषा–सिंहराशिपर बृहस्पति और मंगल हों, मेषराशिमें सूर्य हो और यदि शुक्लपक्ष हो तथा वैशाखमास तथा तिथि द्वादशी हो तो व्यतीपातनामक योग जानना ॥ ४२ ॥

युगादि ।

वैशाखे च तृतीया च नवमी कार्तिके सिता ॥
त्रयोदशी भाद्रपदे माघे दर्शो युगादयः ॥ ४३ ॥

भाषा–वैशाखशुक्लपक्षकी तृतीयाको त्रेतायुग, कार्तिकशुक्ल नवमीको कृतयुग, भाद्रपदकृष्ण त्रयोदशीको कलियुग, माघकृष्ण अमावास्याको द्वापरयुग प्रवृत्त भया ये युगादितिथियां हैं ॥ ४३ ॥

इति श्रीमन्मिश्रशोभारामसुतज्योतिर्वित्पण्डितनारायणप्रसादमिश्रविलिखिते बालबोधाख्यज्योतिषसारसंग्रहे योगरत्नं द्वितीयं समाप्तम् ॥

तृतीयमुहूर्त

तत्रादौ वर्ज्ययोग

सर्वेषु शुभकार्येषु क्रूरयोगान्परि
दग्धं विद्धं च नक्षत्रं तिथिदग्धं च

भाषा–सम्पूर्ण शुभ कार्योंमें क्रूर योगोंको
और वेधयुक्त नक्षत्र और दग्ध तिथि वर्जित करे

अर्धप्रहरक... यः कुलिको विष्टिरेव
... च जन्मर्क्षं पर्वमेव च च ॥

भाषा–... (अर्धयाम), कुलिकयोग, भद्रा,
ग्रहणका नक्षत्र, जन्मनक्षत्र, पर्व ये त्याग करे ॥ २ ॥

चतुर्दश्यष्टमी कृष्णा अमावास्या च पूर्णिमा ॥
पुण्यानि पंच पर्वाणि संक्रांतिर्दिनपस्य च ॥ ३ ॥

भाषा–कृष्णपक्षकी चतुर्दशी, अष्टमी, अमावास्या, पूर्णिमा,
संक्रांतिका दिन ये पांच पुण्य पर्व हैं ॥ ३ ॥

दुष्टयोगे तिथौ रिक्ते क्षीणे चन्द्रेऽधिमासके ॥
मांगल्ये शुभयात्रा च न कुर्याद्धितमिच्छता ॥ ४ ॥

भाषा–दुष्टयोग और रिक्ता तिथि ४ । ९ । १४, क्षीण चन्द्रमा,
मलमास ये शुभ कार्य और उत्तम यात्रामें वर्जित करे अर्थात् इनमें
मंगल कार्य अपने हितकी इच्छासे नहीं करे ॥ ४ ॥

शुभसमयज्ञान ।

विवाहं क्षौरकर्म च प्रतिष्ठा व्रतबन्धनम् ॥
अयने चोत्तरे कुर्यादुदिते भार्गवे गुरौ ॥ ५ ॥

... शुभयोगे शुभे दिने ॥
...ावच्छुभकर्माणि कारयेत् ॥ ६ ॥

... (मुंडन), प्रतिष्ठा, व्रतबन्ध (यज्ञोप- ...यणसूर्य और शुक्र बृहस्पतिके उदयमें करे ... हो, शुभ योग और शुभ दिन हो, कृष्णप- ... कार्य करे ॥ ५ ॥ ६ ॥

चन्द्रफल ।

...ा स्वोच्चराशौ श्रेष्ठं चन्द्रबलं सदा ॥
...ः कुरुते पुष्टिं द्वितीये च धनागमम् ॥ ७ ॥
...राज्यसन्मानं चतुर्थे कलहागमम् ॥
...चमे मतिविभ्रंशो भवेच्चन्द्रे न संशयः ॥ ८ ॥
धनधान्यागमं षष्ठे सन्तोषः स्यात्तु सप्तमे ॥
अष्टमे प्राणसन्देहो नवमे क्लेश एव च ॥ ९ ॥
...शमे कार्यनिष्पत्तिर्ध्रुवमेकादशे जयः ॥
द्वादशेन शशाङ्केन मृत्युरेव न संशयः ॥ १० ॥

भाषा–जो चन्द्रमा अपनी राशि (कर्क) में वा अपनी उच्च- राशि (वृष) में हो तो चन्द्रमा सदा उत्तम बली जानना । पहला चन्द्रमा पुष्टिको करता है, दूसरा चन्द्रमा धनका आगम करता है, तीसरा चन्द्रमा राज्य...र सन्मान करता है, चौथा चन्द्रमा कल- हका आगम ...ता ..., पांचवां चन्द्रमा होवे तो बुद्धिका नाश निःसन्देह होवे ...छठे ...मामें धन धान्यका आगम होवे, सातवें चन्द्रमामें सन्तोष हो... ...ठवें चन्द्रमामें प्राणोंका सन्देह होवे, नवें ...ामें क्ले... होवे, ...द्रमामें कार्यका उदय होवे, ग्यार- ...मामें ...जय ...होवे, बारहवें चन्द्रमामें निःसन्देह ह... ॥ ७ ॥ ... ॥ ९ ॥ १० ॥

चन्द्रबल ।

तिथिरेकगुणा प्रोक्ता नक्षत्रं च चतुर्गुणम् ॥
वारस्याष्टगुणं प्रोक्तं करणं षोडशान्वितम् ॥ ११ ॥
चन्द्रः शतगुणं प्रोक्तं तस्माच्चन्द्रबलं स्मृतम् ॥
द्वात्रिंशद्गुणितं योगे तारा षष्टिगुणान्विता ॥ १२ ॥
शुक्लपक्षे बली चन्द्रः कृष्णे तारा बलीयसी ॥
द्विपंचनवमः श्रेष्ठः शुक्लपक्षे गुरवः शशी ॥ १३ ॥

भाषा–तिथिमें एक गुण कहा है, नक्षत्रमें चार गुण, वारके आठ गुण कहे हैं, करण सोलह गुणोंसे युक्त होता है, चन्द्रमा सौ गुणवाला कहा है, इस कारण चन्द्रबल मुख्य क[illegible], बत्तीस गुण योगके जानना, तारा साठ गुणोंसे युक्त होता है, शुक्लपक्षमें चन्द्रमा बली होता है और कृष्णपक्षमें तारा बलवान् होता है, दूसरा, पाँचवां, नवां चन्द्रमा श्रेष्ठ होता है, शुक्ल पक्षमें चन्द्रमा गुरुभावको प्राप्त होता है ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥

ताराज्ञान ।

जन्मभाद्गणयेदादौ दिनधिष्ण्यावधिः किल ॥
नवभिस्तु हरेद्भागं शेषं तारा विनिर्दिशेत् ॥ १४ ॥
जन्मतारा द्वितीया च षष्ठी चैव चतुर्थिका ॥
अष्टमी नवमी तारा षट् च तारा शुभावहा ॥ १५ ॥
यद्यपि बलवांश्चन्द्रो मुनिभिः कथितः शुभः ॥
शमयति तथा दुरितं त्रिपंचसप्तवर्जिता तारा॥१६॥

भाषा–जन्मनक्षत्रसे दिनके नक्षत्रतक गिने [illegible] नवका भाग देवे शेष रहे वही तारा जानना । जन्मतारा और [illegible]रा, छठा, चौ[illegible], आठवां, नववां ये छः तारा शुभ जान[illegible] । [illegible]द्यपि ब[illegible] [illegible]

मुनियोंने शुभ कहा है तथा दोषोंको दूर करता है, तथा तीसरा, पांचवां, सातवां तारा वर्जित हैं ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥

स्त्रीवस्त्रधारण ।

हस्तादिपञ्चकेऽश्विन्यां धनिष्ठायां च पूषणि ॥
गुरौ शुक्रे बुधे वारे धार्यं स्त्रीभिर्नवाम्बरम् ॥ १७ ॥

भाषा—हस्तसे पांच नक्षत्र (हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा), अश्विनी, धनिष्ठा, रेवती ये नक्षत्र और गुरु, शुक्र, बुध इन वारोंमें स्त्री नवीन वस्त्र धारण करे ॥ १७ ॥

पुरुषवस्त्रधारण ।

लग्नं मीनश्च कन्या च मिथुनं च वृषः शुभः ॥
पूषा पुनर्वसुद्वन्द्वे रोहिण्युत्तरभेषु च ॥ १८ ॥

भाषा—मीन, कन्या, मिथुन, वृष ये लग्न शुभ हैं, रेवती, पुनर्वसु, पुष्य, रोहिणी, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपदा ये नक्षत्र और शुभ वारमें पुरुष नवीन वस्त्र धारण करे ॥ १८ ॥

सूर्ये चाल्पधनं व्रणः शशिदिने क्लेशः सदा भूमिजे । वस्त्राणां बहुता बुधे सुरगुरौ विद्यागमः संपदः ॥ नानाभोगयुतं प्रमोदशयनं दिव्याङ्गना भार्गवे । सौरे स्युः खलु रोगशोककलहा वस्त्रे धृते नूतने ॥ १९ ॥

भाषा—रविवारको वस्त्र धारण करनेसे थोडा धन प्राप्त होता है, सोमवारको वस्त्र धारण करनेसे व्रण उत्पन्न होता है, भौमवारको नवीन वस्त्र धारण करनेसे सदा क्लेश रहता है, बुधवारको नवीन वस्त्र धारण करनेसे बहुत वस्त्र प्राप्त होते हैं, बृहस्पतिको धारण करनेसे विद्या और धनकी प्राप्ति जानना, शुक्रवारको धारण करनेसे नाना प्रकारके भोगोंसहित आनन्द और दिव्यांगनाओंसे

प्रीति होती है, शनिवारको धारण करनेसे कलह तथा शोक प्राप्त होता है ॥ १९ ॥

रक्तवस्त्रं स्त्रिया भौमदिनेऽपि धार्यम् ।

भाषा–लाल रंगके वस्त्र मंगलवारके दिन स्त्रियोंको धारण करना चाहिये ॥

देवप्रतिष्ठादिमुहूर्त ।

मूलादिद्वितयं ग्राह्यं श्रवणश्च मृगः करः ॥
जलवाप्यर्चने हेयाः शुक्रमन्दाऽर्कभूमिजाः ॥ २० ॥
आर्द्रा शतभिषाश्लेषा विशाखा भरणीद्वयम् ॥
त्याज्या च द्वादशी रिक्ता षष्ठी चन्द्रक्षयोऽष्टमी २१
प्रतिपच्च तिथिर्वारौ त्याज्यौ शनिकुजौ तथा ॥
मूर्तिदेवप्रतिष्ठा स्यात्स्थिरलग्नोत्तरायणे ॥ २२ ॥

भाषा–मूल, पुनर्वसु, पुष्य, श्रवण, मृगशिरा, हस्त ये नक्षत्र ग्राह्य हैं और शुक्र, शनि, सूर्य, मंगल ये वार त्याग कर शेष वार कूप वापी तडागादि पूजनमें श्रेष्ठ हैं । आर्द्रा, शतभिषा आश्लेषा, विशाखा, भरणी, कृत्तिका ये नक्षत्र त्याज्य हैं और द्वादशी, रिक्ता (४। ९। १४) तिथि, षष्ठी, अमावास्या, अष्टमी प्रतिपदा ये तिथियां त्याज्य हैं और शनि मंगल वार त्याज्य हैं तथा स्थिर लग्नमें उत्तरायणसूर्यमें देवमूर्तिकी प्रतिष्ठा करे ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥

गृहारंभे भूमिशयनज्ञान ।

प्रद्योतनात्पञ्चनगांकसूर्यनवेन्दुषड्विंशमितानि भानि ॥ शेते मही नैव गृहं विधेयं तडागवापीखननं न शस्तम् ॥ २३ ॥

भाषा–सूर्यके नक्षत्रसे पांचवां सातवां, नवां, बारहवां, उन्नीसवां, छव्वीसवां इन नक्षत्रोंमें भूमिशयन (पृथ्वी सुप्त) जानना,

इनमें गृहारम्भादिक और तालाव, बावडी, कूप खोदना श्रेष्ठ नहीं जानना ॥ २३ ॥

वास्तुकर्ममुहूर्त ।

पूर्वाषाढार्दितिद्वन्द्वे विधियुग्मे हरित्रये ।
उत्तराफाल्गुनी हस्तत्रयं मूलं च रेवती ॥ २४ ॥
मैत्राश्विनी च लग्नानि सिंहः कन्या घटो वृषः ॥
मिथुनं मकरो ग्राह्यो वास्तुकर्मणि कोविदैः ॥ २५ ॥
श्रावणश्चाथ वैशाखः कार्तिकः फाल्गुनस्तथा ॥
मासेषु मार्गशीर्षश्च वास्तुकर्मणि शस्यते ॥ २६ ॥
वज्रव्याघातशूलाश्च व्यतीपातश्च गंडकः ॥
विष्कम्भपरिघौ हेयौ वारौ भूमिजभास्करौ ॥ २७॥

भाषा–पूर्वाषाढा, पुनर्वसु, पुष्य, रोहिणी, मृगशिरा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, मूल, रेवती, अनुराधा, अश्विनी ये नक्षत्र और सिंह, कन्या, कुंभ वृष, मिथुन, मकर ये लग्न वास्तुकर्ममें पण्डितोंकरके ग्रहण करने योग्य है । तथा श्रावण, वैशाख, कार्तिक, फाल्गुन, मार्गशीर्ष ये महीने वास्तुकर्ममें शुभ हैं । वज्र, व्याघात, शूल, व्यतीपात, गंड, विष्कंभ, परिघ ये योग और मंगलवार और रविवार त्याग करे ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥

गृहारम्भचक्र ।

त्रिवेदवेदाग्नियुगाग्निवेदत्रिकेषु भानोः शशिभं गृहेषु ॥ दाहो विनाशः स्थिरता धनं श्रीः शून्यं च दारिद्र्यमृतिः क्रमेण ॥ २८ ॥

भाषा–सूर्यस्थित नक्षत्रसे चन्द्र (दिन) नक्षत्रतक गिने सो चक्रमें देखकर जानना ॥ २८ ॥

सूर्यभात् गृहारम्भचक्र ।

३	४	४	३	४	३	४	३
दाह	विनाश	स्थिरता	धनलाभ	स्त्रीलाभ	शून्य	दारिद्य	मृति

द्वारशाखावरोपणमुहूर्त ।

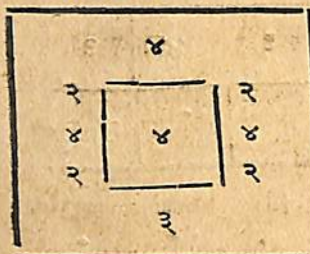
मूले भौमे त्रिऋक्षं गृहपतिमरणं पंचगर्भे सुखं स्यान्मध्ये देयाष्ट ऋक्षं धनसुखसुखदं पुच्छदेशेऽष्ट हानिः ॥ पश्चादेयं त्रिऋक्षं गृहपतिसुखदं भाग्यपुत्रार्थदेयं सूर्यर्क्षाच्चान्द्रऋक्षं प्रतिदिनगणयेद्द्वौनचक्रं विलोक्य ॥ २९ ॥

भाषा–सूर्यनक्षत्रसे दिननक्षत्रतक गिनकर इस क्रमसे फल जानना, कि पहले ३ नक्षत्र मूलमें गृहपतिका मरण करे, फिर ५ नक्षत्र गर्भमें सुखकारक जानना, अनन्तर ८ नक्षत्र मध्यमें धन, सुत और सुख देवे, फिर ८ नक्षत्र पुच्छभागमें मित्रहानि करे, तदनन्तर ३ नक्षत्र गृहपतिको भाग्य, पुत्र, धन और सुख देवे इस प्रकार सूर्यनक्षत्रसे चन्द्रनक्षत्रतक गिनकर फल जानना ॥ २९ ॥

द्वारशाखाचक्र ।

अर्काच्चत्वारि ऋक्षाणि ऊर्ध्वे चैव प्रदापयेत् ॥
द्वौ द्वौ कोणेषु दद्याद्वै शाखायां च चतुश्चतुः ॥ ३० ॥
अधश्च त्रीणि देयानि मध्ये चत्वारि दापयेत् ॥
ऊर्ध्वे तु लभते राज्यमुद्वासं कोणकेषु च ॥ ३१ ॥
शाखायां लभते लक्ष्मीं मध्ये राज्यप्रदं तथा ॥
अधस्थे मरणं प्रोक्तं द्वारचक्रं प्रकीर्तितम् ॥ ३२ ॥

द्वारशाखाचक्र ।



भाषा–सूर्यनक्षत्रसे दिननक्षत्रतक गिने उसमें ४ नक्षत्र द्वारशाखाके ऊपर रक्खे, दो दो नक्षत्र चारों कोणोंमें रक्खे दोनों शाखाओंमें चार चार नक्षत्र रक्खे, नीचे देहलीमें तीन नक्षत्र रक्खे, बीचमें चार नक्षत्र रक्खे, ऊपरके ४ नक्षत्रमें द्वारशाखा रोपण करे तो राज्य प्राप्त होवे, कोणोंमें दो दो नक्षत्र उद्वसनकारक जानने, शाखाओंमेंके चार २ नक्षत्रोंमें लक्ष्मी प्राप्त होवे तथा मध्यके ४ नक्षत्रमें द्वारशाखा रक्खे तो राज्यको देवे, नीचेके तीन नक्षत्र मरणकारक कहे हैं इस प्रकार यह द्वारचक्र कहा है॥३०॥३१॥३२॥

कपाटचक्र ।

कृताकराब्धियुग्मराममन्तकश्च वारिधिः ।
करो समुद्रसूर्यभाद्दिनर्क्षके फलं वदेत् ॥
धनागमं विनाशसौख्यबन्धनं मृतिः क्षतिः ।
शुभ च रोगसौख्यदं शुभं कपाटचक्रयोः ॥ ३३ ॥

भाषा–सूर्यके नक्षत्रसे दिननक्षत्रतक गिने पहले ४ नक्षत्र धनागम करे, २ नक्षत्र विनाश करे, ४ नक्षत्र सौख्यकारक जानने, २ नक्षत्र बन्धनकारी जानने, ३ नक्षत्र मृत्युकारक जानने, २ नक्षत्र क्षयकारक जानने, ४ नक्षत्र शुभ जानने, २ नक्षत्र रोगकारक जानने, ४ नक्षत्र सौख्यकारी जानने, यह कपाट (किवाड) चढानेका चक्र है सो शुभ जानकर चढावे ॥ ३३ ॥

सूर्यभात्कपाटचक्र ।

४	२	४	२	३	२	४	२	४
धनागम	विनाश	सौख्य	बंधन	मृति	क्षय	शुभ	रोग	सौख्य

गृहप्रवेशमुहूर्त ।

चित्राऽनुराधा मृगपौष्णपुष्यस्वाती श्रविष्ठा श्रवणं च मूलम् ॥ वारेष्वसूर्यक्षितिजेष्वरिक्ता तिथौ प्रशस्तो भवनप्रवेशः ॥ ३४ ॥

भाषा-चित्रा, अनुराधा, मृगशिरा, रेवती, पुष्य, स्वाति, धनिष्ठा, श्रवण, मूल ये नक्षत्र शुभ हैं और रविवार, भौमवार तथा रिक्ता (४।९।१४) तिथिको त्याग करे तो गृहप्रवेश शुभ जानना ॥ ३४ ॥

गृहप्रवेशे कलशचक्र ।

प्रवेशः कलशेऽर्कक्षात् पञ्चनागाष्टषट्क्रमात्
अशुभं च शुभं ज्ञेयमशुभं च शुभं तथा ॥ ३५ ॥

भाषा-सूर्यनक्षत्रसे दिननक्षत्रतक ५ नक्षत्र अशुभ, ८ नक्षत्र शुभ, ८ नक्षत्र अशुभ, ६ नक्षत्र शुभ जानने यह गृहप्रवेशसमयमें कलशचक्र है ॥ ३५ ॥

कलशचक्र ।

५	८	८	६
अशु.	शु.	अशु.	शु.

हलप्रवाहमुहूर्त ।

अनुराधाचतुष्कं च मघादितियुगे करे ॥
स्वाती श्रुतिविधिद्वन्द्वे रेवत्यामुत्तरासु च ॥ ३६ ॥
गोस्त्रीयुग्मे हलः कार्यो मीने हेयः शनिः कुजः ॥
षष्ठी रिक्ता द्वादशी च द्वितीया द्वयपर्व च ॥ ३७ ॥

भाषा-अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढा, मघा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, स्वाति, श्रवण, रोहिणी, मृगशिरा, रेवती, तीनों उत्तरा तथा

वृष, कन्या, मिथुन, मीन इनमें हलप्रवाहकर्म करे अर्थात् हल चलावे, शनि और मंगलवार त्याग करे तथा षष्ठी, रिक्ता (४।९।१४) तिथि, द्वादशी, द्वितीया, अमावास्या इन तिथियोंको त्यागकर हलप्रवाहकर्म करे ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

हलचक्र ।

त्रिभिस्त्रिभिस्त्रिभिः पंचत्रिभिः पंचात्रिभिर्द्वयम् ॥
सूर्यभाद्दिनभं यावद्धानिवृद्धी हले क्रमात् ॥ ३८ ॥

भाषा—सूर्यनक्षत्रसे दिननक्षत्रतक ३।३।३।५।३।५।३।२ अशुभ भ हलचक्रमें क्रमसे जानना ॥ ३८ ॥

हलचक्र ।

३	३	३	५	३	५	३	२
हानि	वृद्धि	हानि	वृद्धि	हानि	वृद्धि	हानि	वृद्धि

बीजोप्तिमुहूर्त ।

हस्तत्रये मघापुष्ये त्र्युत्तरे रोहिणीद्वये ॥
धनिष्ठारेवतीयुग्मे तथा मूलाऽनुराधयोः ॥ ३९ ॥
शुभे वारे तिथौ श्रेष्ठा बीजोप्तिस्त्वथ राहुभात् ॥
अष्टाग्नेन्दुत्रयं चैकं त्रयेन्दुत्रिचतुष्टयम् ॥ ४० ॥

असच्छुभं क्रमाज्ज्ञेयं दिनर्क्षं फणिचक्रभम् ॥ ४१ ॥

भाषा—हस्त, चित्रा, स्वाति, मघा, पुष्य, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिरा, धनिष्ठा, रेवती, अश्विनी, मूल, अनुराधा तथा शुभ वार और शुभ तिथिमें बीजोप्ति कर्म करे अर्थात् बीज बोवे, राहुके नक्षत्रसे दिननक्षत्रतक गिने और फल देखके चक्रसे बीजोप्तिकर्म बताना ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥

धान्यच्छदन।

८	३	१	३	१	३	१	३	४
अशु.	शुभ	अशु.	शुभ	अशु.	शुभ	अशु.	शुभ	अशु.

धान्यच्छेदन।

पूर्वोत्तरा मघाश्लेषा ज्येष्ठार्द्रा श्रवणद्वये ॥
भरणीद्वितये मूले मृगे पुष्ये करत्रये ॥ ४२ ॥
धान्यच्छिदा शुभारिक्ता हित्वा भौमशनैश्चरौ॥४३॥

भाषा-तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, मघा, आश्लेषा, ज्येष्ठा, आर्द्रा, श्रवण, धनिष्ठा, भरणी, कृत्तिका, मूल, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति इन नक्षत्रोंमें धान्यच्छेदन करना शुभ जानना अर्थात् खेतमेंसे अन्नको काटना, रिक्ता (४।९।१४) तिथि और मंगल, शनिवारको त्याग देवे ॥ ४२ ॥ ४३ ॥

कणमर्दन।

अनुराधा श्रवे मूले रेवत्यां च मृगे त्रिभे ॥
ज्येष्ठायां चैव रोहिण्यां शुभं स्यात्कणमर्दनम् ४४॥

भाषा-अनुराधा, श्रवण, मूल, रेवती, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, ज्येष्ठा, रोहिणी इन नक्षत्रोंमें शुभ वार और शुभ तिथिमें कणमर्दन कर्म शुभ जानना अर्थात् अन्नको भूसीसे पृथक् बैलोंके चरणोंद्वारा किया जाता है जिसको दांय चलाना कहते हैं ॥ ४४॥

धान्यस्थिति।

पुनर्भे मृगशीर्षेऽन्त्येऽनुराधा श्रवणत्रये ॥
हस्तत्रयेऽश्विनी पुष्ये रोहिण्यामुत्तरात्रये ॥ ४५ ॥
गुरौ शुक्र रवीन्दोस्सत्कोष्ठादौ धान्यरक्षणे ॥ ४६ ॥

भाषा–पुनर्वसु, मृगशिरा, रेवती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अश्विनी, पुष्य, रोहिणी, तीनों उत्तरा तथा गुरु, शुक्र, रवि, चन्द्र इन नक्षत्र और वारोंमें कोठा आदिमें अन्न रखना श्रेष्ठ होता है ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

बीजसंग्रह ।

हस्तत्रये पुनर्वस्वोः रोहिण्यां श्रवणद्वये ॥
स्थिरे लग्ने शुभे वारे विचन्द्रे बीजसंग्रहः ॥ ४७ ॥

भाषा–हस्त, चित्रा, स्वाति, पुनर्वसु रोहिणी, श्रवण, धनिष्ठा ये नक्षत्र हों स्थिर लग्न, शुभ वारमें चन्द्रवारको त्यागके बीजसंग्रह करे ॥ ४७ ॥

नवान्नभोजन ।

हस्तचित्राऽनुराधान्त्ये रोहिणी श्रवणद्वये ॥
मृगाश्वित्र्युत्तरास्वर्के शुभे वारे तिथावपि ॥ ४८ ॥
नवान्नस्य विधानं च प्राशनं फलमूलयोः ॥
विना नन्दां विषघटीं मधुपौषार्किभूमिजान् ॥ ४९ ॥

भाषा–हस्त, चित्रा, अनुराधा, रेवती, रोहिणी, श्रवण, धनिष्ठा, मृगशिरा, अश्विनी, तीनों उत्तरा ये नक्षत्र और रविवारसहित शुभ वार तथा शुभ तिथि हों तो नवीन अन्नभोजन करना शुभ है, मूल (कंद) फल इनका भोजनभी शुभ कहा है, परंतु नन्दा तिथि (१।६।११) और विषघटी तथा चैत्र पौषमास और शनि, भौमवार न होवें ॥ ४८ ॥ ४९ ॥

बुधर्क्षात्पुत्रैपुत्रेषुपुत्रवेदयुगेन्दुकम् ॥
सच्छुभं शुभमर्थघ्नं शुभं व्यर्थं शुभं क्रमात् ॥५०॥

भाषा–बुधके नक्षत्रसे दिननक्षत्रतक गिने सो चक्रमें देख शुभाशुभ फल जानके बतावे ॥ ५० ॥

बुधभान्नवान्नचक्र ।

९	९	९	९	४	२	१
शुभ	शुभ	शुभ	अशु.	शुभ	अशु.	शुभ

चुल्लीचक्र ।

सूर्यभादंगवेदाष्टरामशत्रुशुभाशुभम् ॥
चुल्लीचक्रे क्रमात् ज्ञेयं शुभाशुभविचक्षणम् ॥ ५१ ॥

भाषा–सूर्यके नक्षत्रसे दिननक्षत्रतक गिने और चक्रमें शुभाशुभ देखके चुल्ली स्थापन करनेको बतावे ॥ ५१ ॥

सूर्यभात् चुल्लीचक्र ।

६	४	८	३	६
शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

मार्जनी ।

हरिः सूर्यचित्रादितिमैत्रपुष्ये मृगे रोहिदस्रे वि-
रिक्ते च भौमे ॥ त्यजेत्कुम्भमीनेऽप्यलौ लग्नगेहे
पवित्रं तु कृत्ये रवेर्यामलानि ॥ ५२ ॥ सूर्य-
भाद्रामरामाङ्गरामतर्काङ्गभेषु च ॥ असच्छुभं
क्रमात् ज्ञेयं मार्जनीसंज्ञके शुभे ॥ ५३ ॥

भाषा–श्रवण, हस्त, चित्रा, पुनर्वसु, अनुराधा, पुष्य, मृगशिरा, रोहिणी, अश्विनी ये नक्षत्र मार्जनी (बुहारी) बांधनेके निमित्त शुभ हैं, रिक्ता (४ । ९ । १४) तिथि और भौमवारको त्याग करे, कुंभ, मीन, वृश्चिक लग्न गृहमें पवित्रता करनेके निमित्त शुभ जानना ऐसा सूर्ययामलमें कहा है । सूर्यके नक्षत्रसे दिननक्षत्रतक गिनकर चक्रमें शुभ अशुभ फल देखके बताना ॥ ५२ ॥ ५३ ॥

३	३	६	३	६	६
अशु.	शुभ	अशु.	शुभ	अशु.	शुभ.

दोहा–सूर्यऋक्षते षट् भले षट् खोटे शुभ चारि ॥
नाग अशुभ शुभ चारि है वठिया धरो विचारि ५४

भाषा–सूर्यके नक्षत्रसे दिननक्षत्रतक गिने और चक्रमें देखके वठिया रखना ॥ ५४ ॥

वठियाचक्र ।

६	६	४	८	४
शुभ	अशु.	शुभ	अशु.	शुभ.

क्रयविक्रयमुहूर्त ।

पुष्यं भाद्रपदायुग्मं स्वाती च श्रवणाश्विनी ॥
हस्तोत्तरा मृगो मैत्रं तथाऽऽश्लेषा च रेवती ॥ ५५ ॥
ग्राह्यानि भानि चैतानि क्रयविक्रयणे बुधैः ॥
चन्द्रभार्गवजीवाश्च वाराः शकुन उत्तमः ॥ ५६ ॥

भाषा–पुष्य, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा, स्वाती, श्रवण, अश्विनी, हस्त, उत्तराफाल्गुनी, मृगशिरा, अनुराधा, आश्लेषा, रेवती ये नक्षत्र ग्रहण करे और चन्द्र, शुक्र, गुरुवार तथा उत्तम शकुनमें क्रय विक्रय (खरीदने बेचने) का कर्म पंडित बतावे ॥ ५५ ॥ ५६ ॥

कोल्हूचक्र ।

सूर्यभात्पंचपंचेषु रामयुग्मंशरांत्रिकम् ॥
न सच्छुभमसद्दुःखं क्लेशं शुभमतोऽशुभम् ॥ ५७ ॥
कोल्हुचक्रे साभिजिते ज्ञेयमेवं विचक्षणैः ॥ ५८ ॥

भाषा–सूर्यके नक्षत्रसे दिननक्षत्रतक अभिजित्सहित गणना करे और चक्रके अनुसार शुभाशुभ देखके कोल्हू चलानेको बतावे ॥ ५७ ॥ ५८ ॥

सूर्यभात् कोल्हूचक्र ।

५	९	५	३	२	५	३
अशुभ	शुभ	अशुभ	दुःख	क्लेष	शुभ	अशुभ

नवीनपात्रे भोजनमुहूर्त ।

चरमृदुलघुभे सल्लग्नके चैत्रपौषे क्षितिजरविजनन्दाऽपेयनाडीं विहाय ॥ प्रतिसमनवजातोऽन्नस्य शत्याशनं सत् ध्रुवगणसहितैस्तैः कांस्यपात्रादिभोज्यम् ॥ ५९ ॥ मुखे त्रीणि ३ शोकं रसे ६ कंठपुष्टिः त्रयो ३ रोगकुक्षे धनं राम३ वामे ॥ त्रये ३ पृष्ठव्याधिः सुखं राम ३ मध्ये रसे ६ हानिभार्कादधः भुंजिपात्रम् ६०

भाषा–चर (स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा), मृदु (मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा), लघु (हस्त, अश्विनी, पुष्प, अभिजित), ध्रुव (तीनों उत्तरा, रोहिणी) इन नक्षत्रोंमें तथा उत्तम लग्नमें, चैत्र पौषमास और मंगल, शनिवार, नन्दा (१।६।११) तिथि, विषघटीको त्यागनकर नवीन कांस्यादिपात्रमें भोजन करना शुभ है । सूर्यके नक्षत्रसे दिननक्षत्रतक गिने और चक्रमें शुभ अशुभ फल देखके नवीन कांस्य आदिके पात्रमें भोजन करनेको बतावे ॥ ५९ ॥ ६० ॥

सूर्यभान्नवीनपात्रे भोजनचक्र ।

३	६	३	३	३	३	६
मुख	कण्ठ	द.क.	वा. कु.	पृष्ट	मध्य	अधः
शो	पुष्टि	रोग	धन	व्याधि	सुख	हानि

भैषज्यकर्म ।

पौष्णद्वये च दितिभद्वये च हस्तत्रये च श्रवणत्रये च ॥ मैत्रे च मूले च मृगे च शस्तं भैषज्यकर्म प्रवदन्ति सन्तः ॥ ६१ ॥

भाषा—रेवती, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, अनुराधा, मूल, मृगशिरा इन नक्षत्रोंमें और शुभ वार शुभ तिथिमें औषधि देना शुभ है ऐसा पंडितजन कहते हैं ॥ ६१ ॥

रोगोत्पत्तिमें अशुभ ।

स्वातीश्लेषारौद्रपूर्वात्रयेषु शाक्रे भौमे सूर्यजे सूर्यवारे ॥ नन्दारिकास्वेव रोगस्य चार्तिर्मृत्युर्ज्ञेयः शङ्करो रक्षितापि ॥ ६२ ॥

भाषा—स्वाती, आश्लेषा, आर्द्रा, तीनों पूर्वा, ज्येष्ठा ये नक्षत्र, भौम, शनि, रविवार, नन्दा (१।६।११), रिक्ता (४।९।१४) तिथिमें जो रोगकी उत्पत्ति हो तो शंकर रक्षिता हो तोभी मृत्यु होवे ऐसा जानना ॥ ६२ ॥

रोगमुक्तस्नान ।

इन्दोर्वारे भार्गवे च ध्रुवेषु सार्पादित्यस्वातियुक्तेषु भेषु ॥ पित्र्ये चान्त्ये चैव कुर्यात्कदाचिन्नैव स्नानं रोगमुक्तस्य जन्तोः ॥ ६३ ॥ लग्ने चरे सूर्यकुजेज्यवारे रिक्तातिथौ चन्द्रबले च हीने ॥ केन्द्रत्रिकोणार्थगते च पापे स्नानं हितं रोगविमुक्तिकानाम् ॥ ६४ ॥

भाषा—चन्द्र, शुक्रवार और रोहिणी, तीनों उत्तरा, आश्लेषा, पुनर्वसु, स्वाति, मघा, रेवती इन नक्षत्रोंमें रोगरहित होकर कभी

स्नान न करे । चर लग्न हो, रवि, भौम, गुरुवार हो, रिक्तातिथि हो, चन्द्रमा हीनवली हो, केन्द्र (१।४।७।१०) तथा त्रिकोण (५।९) में पाप ग्रह हों तो रोगसे मुक्त हुआ पुरुष स्नान करे तो शुभ है ॥ ६३ ॥ ६४ ॥

वाणिज्यकर्म ।

अनुराधोत्तरापुष्ये रेवतीरोहिणीमृगे ॥
हस्तचित्राश्विभे कुर्याद्वाणिज्यं दिवसे शुभे ॥ ६५ ॥

भाषा—अनुराधा, तीनों उत्तरा, पुष्य, रेवती, रोहिणी, मृगशिरा, हस्त, चित्रा, अश्विनी ये नक्षत्र और शुभ दिनमें वाणिज्य कर्म करे ॥ ६५ ॥

जलाशयारंभमुहूर्त ।

अनुराधामघाहस्ते रेवतीषूत्तरात्रये ॥
रोहिणीयुगले पुष्ये धनिष्ठाद्वितये तथा ॥ ६६ ॥
पूर्वाषाढाभिधे भे च शुभे मासि शुभे दिने ॥
वापीकूपतडागानामारम्भः कथितो बुधैः ॥ ६७ ॥

भाषा—अनुराधा, मघा, हस्त, रेवती, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाषाढा ये नक्षत्र, शुभ मास और शुभ दिनमें बावडी, कुवां, तालाव आदि जलाशयोंका आरंभ पंडितोंने शुभ कहा है ॥ ६६ ॥ ६७ ॥

रविवारे जलं नास्ति सोमे पूर्णजलं भवेत् ॥
वालुका भौमवारे तु बुधे बहु जलं भवेत् ॥ ६८ ॥
गुरौ च मधुरं तोयं शुक्रे क्षारं प्रजायते ॥
शनैश्चरे जलं नास्ति कीर्तितं वारजं फलम् ॥ ६९ ॥

भाषा—रविवारको जलाशयका आरंभ करे तो जल न निकले, चन्द्रवारको पूर्ण जल होवे, भौमवारको वालू निकले, बुधको बहुत

जल होवे, गुरुवारको जल मीठा निकले, शुक्रको जल खारा निकले, शनिवारको जल न निकले यह वारफल कहा ॥ ६८ ॥ ६९

कूपचक्र ।

सजलखंडजले सजलाजले शुभजलं लवणं च शिलाजलम् ॥ लवणमुष्णकराद्दिनभावधि नव फलानि विदुस्त्रितयोडुभिः ॥ ७० ॥

भाषा—सूर्यनक्षत्रसे दिननक्षत्रतक गिने और चक्रके अनुसार शुभाशुभ फल विचारे, सूर्यनक्षत्रसे तीन २ नक्षत्र सजल, खंडजल, सजल, निर्जल, उत्तम जल, खारा जल, कंकरीला, उत्तम जल, खारा जल निकले ॥ ७० ॥

सूर्यभात्कूपचक्र ।

३	३	३	३	३	३	३	३	३
शुभ	अशु.	शुभ	अशु.	शुभ	अशु.	अशु	शुभ	अशु.

चूडीधारण ।

अश्विन्यां च धनिष्ठायां रेवत्यां करपंचके ॥ सुवर्णरत्नदन्तादिवस्त्राणां धारणं स्त्रियः ॥ ७१ ॥

भाषा—अश्विनी, धनिष्ठा, रेवती, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा इन नक्षत्रोंमें सुवर्ण रत्न दन्त आदि व वस्त्रोंका धारण करना स्त्रियोंको हितकारी है ॥ ७१ ॥

यावद्भास्करभुक्तिभानि दिवसे धिष्ण्यानि संख्या तथा वह्नि ३ भूत ५ गुणा ३ ब्धि ४ सप्त ७ नयनं २ पृथ्वी १ करेन्दु १ क्रमात् ॥ सूर्यारौ कविसौम्यराहुरविजाः जीवः शशी केतवः क्रूरेऽसच्च शुभे शुभं च कथितं चक्रे करे भूषणे ७२ ॥

भाषा-सूर्यस्थित नक्षत्रसे दिननक्षत्रतक गिने ३।५।३।४।७।२। १।२।१ क्रमसे सूर्य, मंगल, शुक्र, बुध, राहु, शनि, बृहस्पति, चंद्र, केतु इनमें शुभ ग्रहमें दिननक्षत्र हो तो शुभ, पाप ग्रहमें हो तो अशुभ जानना यह चूडीचक्र पंडितोंने कहा है ॥ ७२ ॥

सूर्यपात् चूडीचक्र ।

३	५	३	४	७	२	१	२	१
सू.	मं.	शु.	बु.	रा.	श.	बृ.	चं.	के.
अशु.	अशु.	शुभ	शुभ	अशु.	अशु.	शुभ	शुभ	अशु.

मिष्टान्नशकुनमुहूर्त ।

चित्रामृगाश्विविधिकर्णसमैत्रभेषु तिष्यादितिदिनकरोर्यमविश्वभं स्यात् ॥ भौमाऽर्कजीवभृगुवासरमिन्दुशुद्धे मिष्टान्नकर्म प्रवदंति मुनीन्द्रमुख्यैः ॥ ७३ ॥ तथा ॥ मृगादितीज्यकार्यंभेकराश्विमैत्रत्वाष्ट्रभे बुधेन्दुशौरिवर्जिते विधौ बलं हि शाकुने ॥ रविभंतोऽग ७ सायका ५ गजा ८ श्वि २ बाणभे ५ न्दुभं शुभाशुभं फलप्रदं रसोद्भवादिकक्रिये ॥ ७४ ॥

भाषा-चित्रा, मृगशिरा, अश्विनी, रोहिणी, श्रवण, अनुराधा, पुष्य, पुनर्वसु, हस्त, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा ये नक्षत्र और मंगलवार, रविवार, गुरुवार, शुक्रवार हो तथा चन्द्रमा शुद्ध हो तो मिष्टान्नकर्म शुभ जानना ऐसा मुख्य मुनिजन कहते हैं अथवा मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, रोहिणी, उत्तराफाल्गुणी, हस्त, अश्विनी, अनुराधा, चित्रा ये नक्षत्र और बुध, चन्द्र, शनि इनसे रहित वार तथा चन्द्रमा बली हो तो मिष्टान्न शकुन शुभ है । सूर्यके नक्षत्रसे चन्द्रनक्षत्रतक गिने और चक्रमें देखके मिष्टान्नक शकुन बतावे॥७३॥ ७४॥

सूर्यभाच्छकुनचक्र ।

७	५	८	२	६
शुभ	अशु.	शुभ	अशु	शुभ.

संक्रान्तिपुण्यकाल ।

प्रागूर्ध्वा दश पूर्वतो षडवनिस्तद्वत्पराः पूर्वतस्त्रिंशत्षोडश पूर्वतोऽत परतः पूर्वाः पराः स्युर्दश ॥ पूर्वाः षोडश चोत्तरा ऋतुभुवः पश्चात्खवेदा ४० तथा पूर्वाः षोडशचोत्तराः पुनरथो पुण्यास्तु मेषादितः ॥ ७५ ॥

भाषा–मेषकी संक्रान्तिप्रवेशसे पूर्व (पहले) दश घडी पुण्यकाल जानना, वृषके पूर्वकी सोलह घडी, मिथुनके पीछेकी सोलह घडी, कर्कके पहिलेकी तीस घडी, सिंहके पूर्वकी सोलह घडी, कन्याके पीछेकी सोलह घडी, तुलाके दोनों ओरकी दश घडी, वृश्चिकके पहलेकी सोलह घडी, धनुके पीछेकी सोलह घडी, मकरके पीछेकी चालीस घडी, कुंभके पहिलेकी सोलह घडी और मीनके पीछेकी सोलह घडी पुण्य कालकी जानना ॥ ७५ ॥

सूर्यास्तमनवेळायां मकरं याति भास्करः ॥
प्रदोषे चार्द्धरात्रे वा तदा पुण्यं परेऽहनि ॥ ७६ ॥
पुण्याः षोडश नाड्यस्तु पराः पूर्वास्तु संक्रमात् ॥
त्रिंशत्कर्कटके पूर्वाश्चत्वारिंशत्परा मृगे ॥ ७७ ॥

भाषा–सूर्यास्तसमय, प्रदोषसमय अथवा अर्द्धरात्रिसमय मकरकी संक्रान्ति प्रवेश हो तो पर (पिछले) दिन पुण्यकाल होता है । संक्रांतिप्रवेशसे पर और पूर्व दिन पुण्यकाल जानना, कर्ककी संक्रांतिप्रवेशसे तीस घडी पूर्व (पहिलेकी) पुण्यकाल जानना और

मकरसंक्रान्तिमें पर (पिछली) चालीस घडी पुण्यकालकी जानना ॥ ७६ ॥ ७७ ॥

यात्रामुहूर्त ।

हस्तेन्दुमैत्रश्रवणाश्वितिष्यपौष्णश्रविष्ठाश्च पुनर्वसुश्च ॥ प्रोक्तानि धिष्ण्यानि नवप्रयाणे त्यक्त्वा त्रिपञ्चादिमसञ्च तारा ॥ ७८ ॥

भाषा–हस्त, मृगशिरा, अनुराधा, श्रवण, अश्विनी, पुष्य, रेवती, श्रवण, पुनर्वसु ये नव नक्षत्र यात्राके निमित्त शुभ कहे हैं, परंतु तीसरा, पाचवां, पहला तारा अशुभ कहा है सो त्याग करे॥७८॥

तथा च ।

न षष्ठी न च द्वादशी नाष्टमी नो सिताद्यातिथिः पूर्णिमामा न रिक्ता ॥ हयादित्यमित्रेन्दुजीवेऽन्त्यहस्तश्रवोवासवैरेव यात्रा प्रशस्ता ॥ ७९ ॥

भाषा–षष्ठी, द्वादशी, अष्टमी, शुक्लप्रतिपदा, पूर्णिमा, अमावास्या, रिक्ता इन तिथियोंमें यात्रा शुभ नहीं है । अश्विनी, पुनर्वसु, अनुराधा, मृगशिरा, पुष्य, रेवती, हस्त, श्रवण, धनिष्ठा इन नक्षत्रोंमें यात्रा श्रेष्ठ जानना ॥ ७९ ॥

रोहिणी उत्तरा चित्रा मूलमार्द्रा तथैव च ॥
षाढोत्तराभाद्रविश्वे प्रयाणे मध्यमाः स्मृताः ॥८०॥

भाषा–रोहिणी, उत्तराफाल्गुनी, चित्रा, मूल, आर्द्रा, पूर्वाषाढा, उत्तराभाद्रपदा, उत्तराषाढा ये नक्षत्र यात्रामें मध्यम कहे हैं ॥ ८० ॥

पूर्वासु षोडशैवाद्याः कृत्तिकास्वेकविंशतिः ॥
मघास्वेकादश त्याज्या भरण्या सप्त नाडिकाः ८१॥
स्वात्यश्लेषाविशाखासु ज्येष्ठायाश्च चतुर्दश ॥
यायाल्लग्नबले शेषनाडीष्वावश्यके सति ॥ ८२ ॥

भाषा–पूर्वाफाल्गुणीकी आदिकी सोलह घडी, कृत्तिकाकी इक्कीस घडी, मघाकी ग्यारह घडी, भरणीकी सात घडी; स्वाति, अश्लेषा, विशाखा, ज्येष्ठाकी चौदह घडी त्याग कर शेष घडी यात्राके निमित्त शुभ जानना, परन्तु लग्न बलवान् होवे ॥ ८१ ॥ ८२ ॥

दिक्शूल।

दिक्शूलं पूर्वदिग्भागे ज्येष्ठायां शनिसोमयोः ॥
पूर्वभाद्रपदे याम्यां तथैव गुरुवासरे ॥ ८३ ॥
रवौ शुक्रे च रोहिण्यां पश्चिमायां त्यजेद्बुधः ॥
उदीच्यामुत्तराफाल्गुण्यभिधे मंगले बुधे ॥ ८४ ॥

भाषा–ज्येष्ठा नक्षत्र और शनि सोमवारको पूर्व दिशामें यात्रा न करे, तथा पूर्वाभाद्रपदानक्षत्र और गुरुवारको दक्षिण दिशाकी यात्रा न करे ॥ ८३ ॥ ८४ ॥

विदिक्शूल।

आग्नेयां च गुरौ चन्द्रे नैर्ऋत्यां रविशुक्रयोः ॥
ईशान्यां चन्द्रजे वायौ मंगले गमनं त्यजेत् ॥ ८५ ॥

भाषा–गुरु सोमवारको अग्निकोणमें, रवि शुक्रवारको नैर्ऋत्यमें, बुधवारको ईशानमें, मंगलको वायव्यमें यात्रा न करे ॥ ८५ ॥

कालवास।

अर्कोत्तरे वायुदिशा च सोमे भौमे प्रतीच्यां बुधनैर्ऋते च ॥ याम्ये गुरौ वह्निदिशा च शुक्रे मन्दे च पूर्वे प्रवदन्ति कालम् ॥ ८६ ॥

भाषा–रविको उत्तर, सोमको वायुदिशा, भौमको पश्चिम, बुधको नैर्ऋत्य, गुरुको दक्षिण, शुक्रको अग्निकोण, शनिको पूर्वदिशामें कालका वास जानना ऐसा पूर्वाचार्य कहते हैं सो त्याग करे ॥ ८६ ॥

नक्षत्रवाराद्यनुसारादिक्शूल ।

मूलश्रवणशाक्रेषु प्रतिपन्नवमीषु च ॥
शनौ सोमे बुधे चैव पूर्वस्यां गमनं त्यजेत् ॥ ८७ ॥

भाषा–मूल, श्रवण, ज्येष्ठा नक्षत्र, प्रतिपदा, नवमी तिथि, शनि, सोम और बुधवारको पूर्वदिशाकी यात्रा न करे अर्थात् पूर्वमुख यात्रा इन नक्षत्रों, तिथियों और वारोंमें त्याग करे ॥ ८७ ॥

पूर्वाभाद्रपदाश्विन्यौ पञ्चमी च त्रयोदशीम् ॥
गुरुं धनिष्ठार्द्रा चैव याम्ये सप्त विवर्जयेत् ॥ ८८ ॥

भाषा–पूर्वाभाद्रपदा, अश्विनी, पञ्चमी, त्रयोदशी, गुरुवार, धनिष्ठा, आर्द्रा ये सातों दक्षिणादिशाकी यात्रामें त्याग करे ॥ ८८ ॥

रोहिण्यां च तथा पुष्ये षष्ठी चैव चतुर्दशी ॥
भौमाऽर्कगुरुवारेषु न गच्छेत्पाश्चिमां दिशम् ॥ ८९ ॥

भाषा–रोहिणी, पुष्यनक्षत्र, षष्ठी, चतुर्दशी तिथि, भौम, सूर्य रुवार को पश्चिमदिशाकी यात्रा न करे ॥ ८९ ॥

करे चोत्तरफाल्गुण्यां द्वितीयां दशमीं तथा ॥
बुधे रवौ भौमवारे न गच्छेदुत्तरां दिशम् ॥ ९० ॥

भाषा–हस्त, उत्तराफाल्गुणी, द्वितीया, दशमी, बुध, रवि, भौमवारको उत्तरदिशाकी यात्रा न करे ॥ ९० ॥

शूलदोषनिवारणार्थभक्षण ।

सूर्यवारे घृतं पीत्वा गच्छेत्सोमे पयस्तथा ॥
गुडमङ्गारके चैव बुधवारे तिलानपि ॥ ९१ ॥
गुरवारे दधि ज्ञेयं शुक्रवारे यवानपि ॥
माषान् भुक्त्वा शनेर्वारे शूलदोषोपशान्तये ॥९२॥

भाषा–रविवारको घी, सोमवारको दूध, भौमवारको गुड, बुधवारको तिल, गुरुवारको दधि, शुक्रको जौ, शनिवारको माष (उड-

द) भक्षण करके यात्रा करे । यह उपाय शूलदोषकी शान्तिक अर्थ करे ॥ ९१ ॥ ९२ ॥

रविदिनगुरुपूर्वे सोमशुक्रे च याम्ये वरुणदिशि तु भौमे चोत्तरे सौरिसंस्थे ॥ प्रतिदिनमिति मत्वा कालराहुर्दिशानां सकलगमनकार्ये वामपृष्ठे च सिद्धिः ॥ ९३ ॥

भाषा—रविवार और गुरुवारको पूर्वदिशामें गमन करे तो कालराहु वामपृष्ठभागमें जानिये और सोमवार, शुक्रवारको दक्षिणदिशामें गमन करे, भौमवारको पश्चिमदिशामें, शनिवारको उत्तरदिशामें गमन करे तो यात्रामें सिद्धि प्राप्त होवे अर्थात् कार्यसिद्धि होवे ॥ ९३ ॥

क्षुधितराहु ।

इन्द्रे वायौ यमे रुद्रे तोयेऽग्नौ शशिरक्षसोः ॥
यामार्धक्षुधितो राहुर्भ्रमत्येव दिगष्टके ॥ ९४ ॥
न तिथिर्न च नक्षत्रं न योगो न च चन्द्रमाः ॥
सिद्ध्यन्ति सर्वकार्याणि यात्रायां दक्षिणे रवौ ॥ ९५ ॥

भाषा—पहले यामार्धमें क्षुधित राहु पूर्वदिशामें जानिये, दूसरे यामार्धमें वायव्य, तीसरेमें दक्षिण, चौथेमें ईशान, पांचवेंमें पश्चिम, छठेमें आग्नेय, सातवेंमें उत्तर, आठवेंमें नैर्ऋत्यदिशामें क्षुधित राहु जानना, इस प्रकार क्षुधित राहु आठों दिशाओंमें भ्रमण करता है । न तिथि, न नक्षत्र, न योग, न चन्द्रमाका विचार करे जो रवि (सूर्य) दक्षिणभागमें हो तो सब कार्य सिद्ध होते हैं ॥ ९४ ॥ ९५ ॥

वारानुसार स्वरशकुन ।

गुरौ शनौ रवौ भौमे शुभो वै दक्षिणः स्वरः ॥
अन्यवारेषु वामस्तु स्वरश्चैव शुभः स्मृतः ॥ ९६ ॥

निर्गमे वामतः श्रेष्ठः प्रवेशे दक्षिणः शुभः ॥
यः स्वरः स च नासाग्रे योगिनां मतमीदृशम्॥९७॥

भाषा–गुरु, शनि, रवि, भौम इन वारोंमें दहिना स्वर शुभ होता है, शेष वारोंमें बायां स्वर शुभ होता है ऐसा कहा है। यात्रामें बायां स्वर प्रवेशमें दहिना स्वर शुभ कहा है ऐसा योगियोंका मत है ॥ ९६ ॥ ९७ ॥

कालवेलाविचार।

पूर्वाह्ने चोत्तरां गच्छेत्प्राच्यां मध्याह्नके तथा ॥
दक्षिणे चापराह्ने तु पश्चिमे त्वर्धरात्रक ॥ ९८ ॥

भाषा–दिनके तीन भाग करे, पहले भागमें उत्तर दिशाकी यात्रा करे, तथा मध्याह्न (दूसरे भाग) में पूर्व दिशाकी यात्रा करे, आधी रातको पश्चिमदिशाकी यात्रा करे तो शुभ है ॥ ९८ ॥

चन्द्रवास।

मेषे च सिंहे धनपूर्वभागे वृषे च कन्यामकरे च याम्ये ॥ तुलासुकुम्भे मिथुने प्रतीच्यां कर्कालि-मीने दिशि चोत्तरस्याम् ॥ ९९ ॥

भाषा–मेष, सिंह, धनका चन्द्रमा पूर्वदिशामें जानना; वृष, कन्या और मकराशिका चन्द्रमा दक्षिणदिशामें जानना; तुला, कुंभ और मिथुनका चंद्रमा पश्चिमदिशामें जानना; कर्क, वृश्चिक और मीन राशिका चन्द्रमा उत्तर दिशामें जानना ॥ ९९ ॥

सन्मुखश्चार्थलाभाय दक्षिणे सुखसम्पदः ॥
पृष्ठे च प्राणनाशाय वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥ १०० ॥

भाषा–दिशानुसार सन्मुख चन्द्रमामें यात्रा करे तो अर्थलाभ

हो, दहिना हो तो सुख और सम्पदा बढावे, पीछे हो तो प्राणनाश करे, वायें हो तो धनका क्षय करे ॥ १०० ॥

करणभगणदोषं वारसंक्रान्तिदोषं कुतिथिकुलिकदोषं वामयामार्धदोषम् ॥ कुजशनिरविदोषं राहुकेत्वादिदोषं हरति सकलदोषं चंद्रमा सन्मुखस्थः ॥ १०१ ॥

भाषा–करण, नक्षत्र, वार, संक्रान्ति, तिथि, कुलिक, वाम यामार्ध, कुज (भौम), शनि, रवि, राहु, केतु आदिके सब दोषको सन्मुख चन्द्रमा हरण करता है ॥ १०१ ॥

योगिनीवास ।

प्रतिपन्नवमीपूर्वे द्वितीयादश चोत्तरे ॥
तृतीयैकादशी वह्नौ चतुर्द्वादशि नैर्ऋते ॥ १०२ ॥
पञ्चत्रयोदशी याम्ये षष्ठीभूते च पश्चिमे ॥
सप्तपूर्णासु वायव्ये अमावास्याष्टमी शिवे ॥ १०३ ॥

भाषा–प्रतिपदा और नवमीको पूर्वमें, द्वितीया और दशमीको उत्तरमें, तृतीया और एकादशीको अग्निकोणमें, चतुर्थी और द्वादशीको नैर्ऋत्यमें, पंचमी और त्रयोदशीको दक्षिणमें, षष्ठी और चतुर्दशीको पश्चिममें, सप्तमी और पूर्णमासीको वायव्यमें, अमावास्या और अष्टमीको ईशानमें योगिनीका वास जानना ॥ १०२ ॥ १०३ ॥

पृष्ठे च शिवदा प्रोक्ता वामे चैव विशेषतः ॥
योगिनी सा भवेन्नित्यं प्रयाणे शुभदा नृणाम् ॥ १०४ ॥

भाषा–पीठ पीछे योगिनी कल्याणकारी जानना, वायें और योगिनी विशेष फल करे है अर्थात् यात्रामें पीठ पीछे और वायें योगिनी शुभ फल देनेवाली होवे है ॥ १०४ ॥

चरलग्ने प्रयातव्यं द्विस्वभावे तथा नरैः ॥
लग्ने स्थिरे न गन्तव्यं यात्रायां क्षेममीप्सुभिः ॥१०५

भाषा–चरलग्न (१।४।७।१०) में यात्रा करे, तथा द्विस्वभाव-लग्न (३।६।९।१२) में यात्रा करे, यात्राकालमें क्षेमकी इच्छासे स्थिरलग्न (२।५।८।११) में यात्रा नहीं करे ॥ १०५ ॥

त्र्यहं क्षीरं च पंचाहं क्षौरं सप्तदिनं रतम् ॥
वर्ज्यं यात्रादिनात्पूर्वमशक्तौ तद्दिने रतम् ॥१०६ ॥
यज्ञोपवीतक शस्त्रं मधु च स्थापयेत्फलम् ॥
विप्रादिकमतः सर्वं स्वर्णं धान्याऽम्बरादिकम्१०७॥
राजा दशाहं पंचाहमन्यो न प्रस्थितो वसेत् ॥
अंगप्रस्थानसम्पूर्णं वस्तुप्रस्थानकेऽर्द्धकम् ॥१०८ ॥

भाषा–यात्रासे तीन दिन पहले दूध न पीवे, पांच दिन पहले क्षौर कर्म न करे, सात दिन पहले रत (मैथुन) न करे, यदि अशक्त हो तो उस दिन रत न करे । ब्राह्मण यज्ञोपवीत, क्षत्री शस्त्र, वैश्य मधु, शूद्र फलका प्रस्थान करे और प्रस्थाननिमित्त सुवर्ण, अन्न, वस्त्र आदि पदार्थ सबको हित है । राजा दश दिन-तक प्रस्थान रखे, अन्य जन पांच दिन प्रस्थान रखकर निवास करे परंतु अंगके प्रस्थानमें पूर्ण फल और वस्तुके प्रस्थानमें आधा फल जानिये ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ १०८ ॥

इति श्रीमन्मिश्रशोभारामसुतज्योतिर्वित्पण्डितनारायणप्रसादमिश्र-विलिखिते बालबोधाख्यज्योतिषसारसंग्रहे मुहूर्तरत्नं तृतीयं समाप्तम् ॥ ३ ॥

चतुर्थसंस्काररत्नप्रारंभः ।

तत्रादौ ऋतुमतीस्नान ।

पुनर्वसुस्तथा चित्राज्येष्ठापुष्याभिधेषु च ॥
स्नायादृतुमती नारी शुभे वारे शुभे तिथौ ॥ १ ॥
रोहिणीद्वितये स्वातौ हस्ते वै रेवतीद्वये ॥
स्नानात्तु युवती गर्भं विधत्ते शीघ्रमेव हि ॥ २ ॥

भाषा–पुनर्वसु, चित्रा, ज्येष्ठा, पुष्य इन नक्षत्रोंमें और शुभ वार तथा शुभ तिथिमें रजोवती स्त्री स्थान करे । रोहिणी, मृगशिरा, स्वाति, हस्त, रेवती, अश्विनी इन नक्षत्रोंमें ऋतुमती स्त्री स्नान करे ता शीघ्र गर्भ धारण करे ॥ १ ॥ २ ॥

गर्भाधान ।

स्वातौ हस्तेऽनुराधायां रोहिण्यां श्रवणत्रये ॥
त्र्युत्तरे मृगशीर्षे च शुभाहे शुभराशिषु ॥ ३ ॥
गर्भाधानं प्रशस्तं स्याच्चन्द्रे शस्ते पुमांसके ॥ ४ ॥

भाषा–स्वाति, हस्त, अनुराधा, रोहिणी, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, तीनों उत्तरा, मृगशिरा, शुभ दिन और शुभ राशिमें गर्भाधान (गर्भधारण करना) शुभ होता है, परन्तु चन्द्रमा शुभ हो, पुरुषराशिका नवांश हो ॥ ३ ॥ ४ ॥

पुंसवनसीमन्तकर्म ।

द्वितीये वा तृतीये वा मासि पुंसवनं स्मृतम् ॥
मासि षष्ठेऽष्टमे वापि गर्भसीमन्तकं विदुः ॥ ५ ॥
पुनर्वसुद्वये मूले श्रवणे मृगहस्तयोः ॥
गुरुभौमाऽर्कवारेषु प्रोक्तं पुंसवनादिकम् ॥ ६ ॥

रेवत्यां त्र्युत्तरेऽप्येके शुक्रे चन्द्रे बुधे जगुः ॥ ७ ॥

भाषा–दूसरे वा तीसरे मासमें पुंसवन कर्म होता है और गर्भाधानसे छठे आठवें मासमें सीमन्त कर्म कहा है । पुनर्वसु, पुष्य, मूल, श्रवण, मृगशिरा, हस्त इन नक्षत्रोंमें और गुरु, भौम, रविवारमें पुंसवन आदि कर्म शुभ कहा है । रेवती, तीनों उत्तरा और शुक्र, चन्द्र, बुधवारमेंभी कोई आचार्य पुंसवनादि कर्म शुभ कहते हैं ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥

संस्कारे विशेष ज्ञातव्य ।

विवाहे गर्भसंस्कारे चन्द्रशुद्धिस्त्रिया अपि ॥
भूषाम्बरादिकार्येषु भर्तुरैन्दवं बलम् ॥ ८ ॥

भाषा–विवाह, गर्भसंस्कार (पुंसवनसीमन्तादि) में स्त्रीकोभी चन्द्रबल विचारे और आभूषण वस्त्रधारण आदि कार्यमें पुरुषके नामसे चन्द्रबल विचारे ॥ ८ ॥

गर्भाधानादिसंस्कारे तथान्नप्राशने शिशोः ॥
न तत्र गुरुशुक्रास्तमन्नग्रासादिदूषणम् ॥ ९ ॥

भाषा–गर्भाधान आदि संस्कारमें तथा बालकके अन्नप्राशनमें गुरु शुक्रके अस्तका दोष नहीं जानना एवं नवान्नभोजन आदिमेंभी दोष नहीं जानना ॥ ९ ॥

गंडांतमूल ।

अश्विनीमघमूलादौ त्रिवेदनवनाडिकाः ॥
रेवतीसर्पशक्रान्ते मासरुद्ररसस्तथा ॥ १० ॥
आद्ये पादे पितुर्हंति द्वितीये जननी तथा ॥
तृतीये च धनं हंति चतुर्थे शुभमेव हि ॥ ११ ॥

भाषा–अश्विनीके आदिकी तीन घडी, मघाके आदिकी चार घडी, मूलके आदिकी नव घडी, रेवतीके अंतकी बारह घडी,

आश्लेषाके अंतकी ग्यारह घडी, ज्येष्ठाके अन्तकी छः घडी गंडांतमूल कही है । गंडांतमूलमें उत्पन्न हुए बालकका मुख उसका पिता आठ वर्षपर्यन्त न देखे अथवा शास्त्रोक्तानुसार शान्ति करे । मूलके प्रथम चरणमें उत्पन्न बालक पिताको हानिकारक जानना, दूसरे चरणमें माताको तथा तीसरे चरणमें धनको, चौथे चरणमें शुभ फलको करे, परंतु आश्लेषाका फल विपरीत जानना ॥१०॥११॥

प्रसूतीस्नान ।

पुनर्वसुद्वयं चित्रा विशाखा भरणीद्वयम् ॥
मूलमार्द्रा मघा हेया श्रवणो दशमस्तथा ॥ १२ ॥
सोमशुक्रबुधा नारी प्रसूतीस्नानकर्मणि ॥
हेया च प्रतिपत्षष्ठी नवमी च तिथिक्षयः ॥ १३ ॥

भाषा–पुनर्वसु, पुष्य, चित्रा, विशाखा, भरणी, कृत्तिका, मूल, आर्द्रा, मघा, श्रवण ये दश नक्षत्र त्याग करे और और चन्द्र, शुक्र, बुधवार तथा प्रतिपदा, षष्ठी, नवमी तिथिक्षयको त्यागकर प्रसूता स्त्री स्नान करे ॥ १२ ॥ १३ ॥

नामकरण ।

मित्रादित्यमघोत्तराशतभिषक्स्वाती धनिष्ठाच्युतप्राजेशाश्विशशाङ्कपौष्णदिनकृत्पुष्ये तु राशौ स्थिरे ॥ छिद्रां पंचदशीं विहाय नवमीं शुद्धेऽष्टमे भार्गवज्ञाचार्य्यामृतपादभागदिवसे नामानि कुर्युः शिशोः ॥ १४ ॥ अमासंक्रांतिविष्ट्यां तु प्राप्तकालेऽपि नाचरेत् ॥ शर्मान्तं ब्राह्मणस्य स्याद्वर्मान्तं क्षत्रियस्य च ॥ वैश्यस्य धनसंयुक्तं शूद्रस्य प्रेष्यसंयुतम् ॥ १५ ॥

भाषा—अनुराधा, हस्त, मघा, तीनों उत्तरा, शतभिषा, स्वाति, धनिष्ठा, श्रवण, रोहिणी, अश्विनी, मृगशिरा, रेवती, पुष्य ये नक्षत्र और स्थिर लग्नमें छिद्र तिथि व पूर्णिमा, नवमी तिथिको त्यागकर अष्टम स्थान शुद्ध हो ऐसी लग्नमें, शुक्र, बुध, गुरुवारको पूर्वाह्नसमयमें बालकका नामकरण करे । अमावास्या, संक्रांति, भद्रा इनके प्राप्तकालमें नामकरण न करे । ब्राह्मणबालकका नाम शर्मान्त रखे, जैसे देवदत्तशर्मा । क्षत्रियका नाम वर्मान्त रखे, जैसे यज्ञदत्तवर्मा । वैश्यका नाम धनसंयुक्त तथा गुप्तांत रखे, जैसे धनपति चन्द्रगुप्त आदि । शूद्रका नाम दासान्त रखे, जैसे रामदास, देवदास आदि । होढा चक्रमें जिस नक्षत्रके जिस चरणमें जो अक्षर जन्मसमय हो उसी अक्षरपर नाम धरे ॥ १४ ॥ १५ ॥

जन्मसमये तात्कालिकलग्नज्ञान ।

तुलालिकुंभोजकुलीरलग्ने वेद्यं प्रसूतागृहपूर्वद्वारे ॥ कन्याधनुर्मीननृयुग्मलग्ने स्यादुत्तरद्वारप्रतीचिगोस्थः ॥ १६ ॥ मृगारिलग्ने मकरे तथापि भवेत्प्रसूतागृहदक्षिणस्याम् ॥ एवं हि लग्नात्परिचिंतनीयं सूतीगृहद्वारमिदं प्रदिष्टम् ॥ १७ ॥

भाषा—जन्मसमय तुला, वृश्चिक, कुंभ, मेष, कर्क ये लग्न हों तो प्रसूताके घरका द्वार पूर्वमुखका जानना, कन्या, धनु, मीन, मिथुन ये लग्न हों तो प्रसूतीके घरका द्वार उत्तरमुखका जानना, वृषलग्न हो तो पश्चिममुखका होवे, मकर, सिंह तथा मकर लग्न हों तो प्रसूताका गृहद्वार दक्षिणमुखका जानना, इस प्रकार लग्नसे सूतीके गृहद्वार निश्चय करके तात्कालिक लग्न जानना ॥ १६ ॥ १७ ॥

मीने मेषे च द्वे भार्ये चत्वारि वृषकुंभयोः ॥
मकरे मिथुने पंच बाणाश्च धनकर्कयोः ॥
अन्यलग्ने भवेत्त्रीणि प्रवदन्ति मनीषिणः ॥ १८ ॥

भाषा-मीन मेष लग्न जन्मसमयमें हो तो दो स्त्री प्रसूतीके निकट कहना, वृष कुंभ लग्न हो तो चार स्त्री कहना, मकर, मिथुन लग्न हो तो पांच स्त्री कहना, धन कर्क लग्न हो तो पांच स्त्री कहना, अन्य लग्न (सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक) जन्मसमय हो तो तीन स्त्री कहना, ऐसा श्रेष्ठ पण्डित जन कहते हैं ॥ १८ ॥

लग्नचन्द्रान्तर्गतस्थैर्ग्रहैस्तत्रोपसूतिकाः ॥
बहिरन्तश्च चक्रार्द्धे दृश्यादृश्येऽन्यथा परे ॥
अंगे चन्द्रे ग्रहमात्रा दृष्टे निर्जने प्रसवः ॥ १९ ॥

भाषा-लग्न और चन्द्रमाके बीचमें जितने ग्रह हों उतनी स्त्री सूतिकाके निकट उपसूतिका कहना, चक्रार्द्ध अर्थात् लग्नसे सातवें स्थानतक जितने ग्रह हों उतनी स्त्रियां भीतर तथा आठवें स्थानसे बारहवें स्थानतक जितने ग्रह हों उतनी स्त्रियां सूतिकागृहसे बाहर जानना। लग्नमें चन्द्रमा हो और कोईभी ग्रह न देखता हो तो प्रसूतीके समीप कोईभी स्त्री नहीं होवे ऐसा कहना ॥ १९ ॥

पापैश्च विधवा नारी क्रूरैरपि कुमारिका ॥
सौम्यग्रहैश्च सुभगा सूतिकायां विधीयते ॥ २० ॥

भाषा-पापग्रहोंकरके विधवा, क्रूर ग्रह करके कुमारी, शुभ ग्रहसे सौभाग्यवती स्त्री सूतिकाके समीप कहना ॥ २० ॥

मेषत्रिपंचाननतौलिलग्ने विस्मृत्य सर्वं बहु रोदिति स्म ॥ स्वल्पं घटे स्त्रीशिशुरन्यलग्ने रुदद्धिनो ज्ञानबलस्य सत्त्वात् ॥ २१ ॥

भाषा-मेष, मिथुन, सिंह, तुला इन लग्नोंमें बालकका जन्म हो तो वह बालक सब ज्ञानको भूलकर बहुत रोता है और कुंभ व कन्या लग्नमें उत्पन्न बालक थोडा रुदन करता है, अन्य लग्नों (वृष, कर्क, वृश्चिक, धन, मकर, मीन) में उत्पन्न बालक ज्ञानबलके प्रभावसे बहुत नहीं रोता है ॥ २१ ॥

मेषे सिंहे धनुः कर्के कन्यामीने तथा तुले ॥
अन्तरिक्षं भवेज्जन्म शेषे भूमिर्निगद्यते ॥ २२ ॥

भाषा–मेष, सिंह, धनु, कर्क, कन्या, मीन, तुला इन लग्नोंमें जन्म हो तो शय्यापर जन्म कहना, शेष लग्न (वृष, मिथुन, वृश्चिक, मकर, कुंभ) में बालक उत्पन्न हो तो पृथ्वीपर जन्म कहना ॥२२॥

छागसिंहे वृषे लग्ने वृश्चिके नालवेष्टितः ॥
नृलग्ने दक्षिणे पार्श्वे वामे स्त्री लग्नके तथा ॥ २३ ॥

भाषा–मेष, सिंह, वृष, वृश्चिक इन लग्नोंमें बालका जन्म हो तो नाल लिपटा हुआ जन्म कहना; पुरुष लग्नसे दाहिनी ओर स्त्री (सम) लग्नसे बाईं ओर लिपटा कहना ॥ २३ ॥

छागे सिंहे वृषे लग्ने तत्स्थे मन्देऽथवा कुजे ॥
राश्यंशसदृशे गात्रे जायते नालवेष्टितः ॥ २४ ॥

भाषा–मेष, सिंह, वृष इन लग्नोंमें जन्म हो और लग्नमें शनि वा मंगल स्थित हो तो लग्नस्थित नवांशककी राशिके अंगमें नाल लिपटा हुआ कहना ॥ २४ ॥

यत्र राहुस्तत्र शिरो मंगले भूमिखंडनम् ॥
रविस्थाने भवेद्दीपः शनौ लोहं निगद्यते ॥ २५ ॥

भाषा–जन्मसमय लग्नमें जहां राहु स्थित हो उस दिशामें बालकका शिर कहना, जिस दिशामें मंगल हो वहांपर भूमिखंडित अथवा गड्ढा कहना, जहां सूर्य हो उस दिशामें दीपक कहना, जहां शनि स्थित हो वहां लोहेकी स्थिति जानना, यहां जन्मलग्नको पूर्वदिशा, सातवें स्थानको पश्चिम दिशा, चौथे स्थानको उत्तरदिशा, दशवें स्थानको दक्षिणदिशा जानना, एवं चारों दिशाओंके बीचमें चारों कोण जानना । यहां कोई ऐसाभी कहते हैं कि रात्रि दिनमें सूर्य पूर्व आदि आठों दिशाओंमें घूमता है उस समय संचारवशसे जिस दिशामें सूर्य हो उस दिशामें दीपक कहना ॥ २५ ॥

चरलग्ने चरो दीपः स्थिरे स्वस्थानसंस्थितः ॥
द्विदेहभे करस्थः स्यादिति केचिद्बुधा जगुः ॥ २६ ॥

भाषा—जन्मसमय चर लग्न हो तो दीपक चलायमान रहा, स्थिर ल हो तो अपने स्थानमें स्थित रहा, द्विस्वभाव लग्न हो तो हाथमें दीपक रहा ऐसा कोई पंडित कहते हैं ॥ २६ ॥

पितुर्जातः परोक्षस्य लग्नमिन्दावपश्यति ॥
विदेशस्थस्य चरभे मध्याद्भ्रष्टे दिवाकरे ॥ २७ ॥

भाषा—जन्मसमय लग्नको चन्द्रमा न देखता हो तो बालकका जन्म पिताके परोक्ष (पीछे) कहन और मध्यसे भ्रष्ट अर्थात् दशवें स्थानसे रहित (नवम, अष्टम, एकादश, द्वादश) स्थानोंमें सूर्य, चरराशिका हो तो बालकके जन्मसमय पिता विदेशमें स्थित कहना । ये बारह श्लोक तात्कालिक लग्न जाननेके हैं इसीसे इन श्लोकोंको लग्नबारहीभी कहते हैं । प्रसूतीके भोजन और वस्त्रोंका रंग आदि लग्नके वर्णपरसे कहना सो मेषादिलग्नका वर्ण प्रसंगवश आगे लिखेंगे ॥ २७ ॥

जलपूजा ।

पुनर्वसुद्वये हस्ते मृगे मूलाऽनुराधयोः ॥
श्रवे गुरौ बुधे चन्द्रे सत्तिथौ जलपूजनम् ॥ २८ ॥

भाषा—पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, मृगशिरा, मूल, अनुराधा, श्रवण ये नक्षत्र और गुरु, बुध, चन्द्रवार, शुभ तिथिमें प्रसूती स्त्री कूएंपर जाय अथवा तालाव वा बावडीके समीप जाय जलकी पूजा करे॥२८॥

दोलारोहण ।

खट्वारोहस्तु कर्तव्यो दशमे द्वादशेऽपि वा ॥
षोडशे दिवसे वापि द्वाविंशे दिवसेऽपि वा ॥ २९ ॥
स्तनपानोक्तनक्षत्रे कुर्याद्दोलाधिरोहणम् ॥ ३० ॥

भाषा-दशवें वा बारहवें, सोलहवें वा बाईसवें दिन शय्यापर बालकको बिठावे । स्तनपानमें कहे नक्षत्रोंमें बालकको झलेपर चढावे, स्तनपाननक्षत्र वेही हैं जो नक्षत्र अन्नप्राशनमें आगे हम लिखते हैं ॥ २९ ॥ ३० ॥

अन्नप्राशनमुहूर्त ।

युग्मेषु मासेषु च षष्ठमासात्सांवत्सरे वा नियतं शिशूनाम् ॥ अयुग्ममासेषु च कन्यकानां नवांन्नसंप्राशनमिष्टमेतत् ॥ ३१ ॥

भाषा-छठेसे सम मासमें अर्थात् ६ । ८ । १० मास हो अथवा सालभरमें जो समय नियत हो उस समय बालकका और विषम मास पांचवें माससे (५ । ७ । ९) कन्याका नवान्न प्राशन शुभ कहा है ॥ ३१ ॥

रेवतीद्वितये पुष्ये पुनर्वस्वनुराधयोः ॥
श्रवणादित्रये हस्तत्रितये रोहिणी मृगे ॥
कर्णवेधं तथा पानं क्षुरकर्मान्नभोजनम् ॥ ३२ ॥

भाषा-रेवती, अश्विनी, पुष्य, पुनर्वसु अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, हस्त, चित्रा, स्वाति, रोहिणी, मृगशिरा ये नक्षत्र कर्णवेध (कानछेदन) तथा दुग्धपान, मुंडन, नवान्नभोजनमें शुभ कहे हैं ॥ ३२ ॥

पट्टबन्धनचौलान्नप्राशने चोपनायने ॥
शुभदं जन्मनक्षत्रमशुभं त्वन्यकर्माणि ॥ ३३ ॥

भाषा-राज्याभिषेक, मुंडन, अन्नप्राशन, उपनयन इन कर्मोंमें जन्मनक्षत्र शुभ फल देनेवाला जानना, अन्य कर्ममें अशुभ जानना ३३

हित्वा रिक्तां तथा नन्दामष्टमीं द्वादशीं तथा ॥
तिथेः क्षयममां वारान् शनिभौमार्कसंज्ञकान् ॥ ३४ ॥

भाषा–रिक्ता (४।९।१४) नन्दा (१।६।११) अष्टमी, द्वादशी, तिथिक्षय, अमावास्या इन तिथियोंको और शनि, मंगल और रविवारको त्याग देवे ॥ ३४ ॥

कर्णवेधमुहूर्त्त ।

ज्येष्ठादित्यसमीरणार्कशतभे पुष्ये श्रविष्ठाश्विनीचित्रावैष्णवमित्रपौष्णमृगभे वारे बुधादित्रये ॥ त्र्यायारिः स्वगते खले च शुभदे केन्द्रत्रिकोणे स्थिते वर्षे वायुजि कर्णवेधनविधिः पक्षे सिते शोभने ॥ ३५ ॥ जन्मर्क्षे जन्ममासे च रिक्तापर्वविमेषु च ॥ भद्रायामशुभे चन्द्रे न कुर्यात्कर्णवेधनम् ॥ ३६ ॥

भाषा–ज्येष्ठा, पुनर्वसु, स्वाति, हस्त, शतभिषा, पुष्य, धनिष्ठा, आश्विनी, चित्रा, श्रवण, अनुराधा, रेवती, मृगशिरा ये नक्षत्र; बुध, गुरु, शुक्र ये वार और तीसरा, ग्यारहवां, छठा ये घर पापग्रहयुक्त हों और शुभग्रह (पूर्ण चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र) केन्द्र (१।४।७।१०) त्रिकोण (५।९) में स्थित हों विषम (१।३।५) में वर्ष शुक्ल पक्षमें कर्णवेध (बालकका कान छिदवाना) शुभ होता है । जन्मनक्षत्र, जन्ममास, रिक्ता (४।९।१४) तिथि, तिथिक्षय, भद्रा, नष्ट चन्द्रमामें कर्णवेध शुभ नहीं जानना ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

क्षौद्रकर्म ।

श्रवणात्रितये हस्तत्रितये रेवतीद्वये ॥
ज्येष्ठायां मृगशीर्षे च पुनर्वसुद्वये तथा ॥ ३७ ॥
क्षुरकर्म बुधैः प्रोक्तं त्यक्त्वा भौमशनिं रविम् ॥
अनुराधामुफां चैव कृत्तिकां रोहिणीं मघाम् ॥३८॥

भाषा-श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, हस्त, चित्रा, स्वाति, रेवती, अश्विनी, ज्येष्ठा, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य इन नक्षत्रोंमें पंडितोंने क्षुरकर्म (मुंडन) कहा है; मंगल, शनि, रविवार और अनुराधा, उत्तराफाल्गुनी, कृत्तिका, रोहिणी, मघा नक्षत्र त्यागकर मुंडन शुभ कहा है ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

न जन्ममासे न च जन्मभे तिथौ विधौ विरुद्धे
शुभतारकासु ॥ युग्माब्दमासे न च कृष्णपक्षे
चूडा न कार्या खलु चैत्रपौषे ॥ ३९ ॥

भाषा-जन्ममास, जन्मनक्षत्र, जन्मतिथि, नेष्ट चन्द्रमा इनको त्याग करे और अशुभ नक्षत्र सम वर्ष महीना न हो, तथा कृष्ण-पक्ष और चैत्र पौषमें चूडा कर्म न करे ॥ ३९ ॥

षष्ठ्यष्टमी द्वादशी च रिक्तापर्वावमेषु च ॥
गलग्रहे च भद्रायां क्षुरकर्म न कारयेत् ॥ ४० ॥

भाषा-षष्ठी, अष्टमी, द्वादशी, रिक्ता (४।९।१४) पर्व, तिथि-क्षय, गलग्रह और भद्रामें क्षौर कर्म न करे ॥ ४० ॥

अक्षरारंभमुहूर्त ।

सौम्यायने शुभे मासि स्वाध्यायदिवसे शुभे ॥
रवौ जीवे बुधे शुक्रे लग्ने खेटबलान्विते ॥ ४१ ॥
रेवतीद्वितये पुष्ये पुनर्वस्वनुराधयोः ॥
आर्द्राख्ये श्रवणे हस्ते स्वातौ चित्राभिधे तथा ॥४२॥
हेरम्बाम्बे च वाग्देवी तथाभ्यर्च्येष्टदेवताः ॥
पञ्चमाऽब्दे नरः कुर्याल्लिप्यारम्भो बुधः सदा ॥४३॥

भाषा-सौम्यायनसूर्य, शुभमास, स्वाध्यायशुभदिवस, रवि, गुरु, बुध, शुक्रवारमें, लग्नमें ग्रह बलवान् हो; रेवती, अश्विनी, पुष्य, पुनर्वसु, अनुराधा, आर्द्रा, श्रवण, हस्त, स्वाति, चित्रा ये नक्षत्र

हों; गणेश, शारदा, सरस्वती, देवी और इष्टदेवता इनका पूजन करके पांचवें वर्षमें पंडित अक्षरारंभ करावे ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥

व्रतबन्धमुहूर्त ।

आषोडशाद्ब्राह्मणस्य सावित्री नाभिवर्तते ॥
आद्वाविंशाद्ब्रह्मबन्धोराचतुर्विंशतोर्विशः ॥ ४४ ॥

भाषा–सोलह वर्षतक ब्राह्मणकी सावित्री वर्तमान रहती है अर्थात् सोलह वर्षतक ब्रह्मतेज रहता है तबतक यज्ञोपवीतसंस्कार हो जाना उचित है, बाईस वर्षतक क्षत्रियका, चौबीस वर्षतक वैश्यका यज्ञोपवीत हो जाना ठीक है ॥ ४४ ॥

बटुकन्याजन्मराशेस्त्रिकोणाय द्विसप्तगः ॥
श्रेष्ठो गुरुः खषट्त्र्याद्ये प्रपूज्यान्यत्र निन्दितः ॥४५॥

भाषा–ब्रह्मचारी वा कन्याकी जन्मराशिसे त्रिकोण (९ । ५), ग्यारहवें, दूसरे, सातवें गुरु शुभ जानना और दशवें, छठे, तीसरे, जन्मका गुरु पूज्य जानना अन्य ४ । ८ । १२ गुरु निन्दित जानना ॥ ४५ ॥

साधारणं च मासेषु माघादिषु च पंचसु ॥
विनर्तुना वसन्तेन कृष्णपक्षे गलग्रहे ॥ ४६ ॥

भाषा–माघ आदि पांच (माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख ज्येष्ठ) महीनोंमें व्रतबन्धकर्म करे कृष्णपक्ष और गलग्रहतिथि विना वसन्तऋतुके त्याग करे ॥ ४६ ॥

कृष्णपक्षे चतुर्थी च सप्तम्यादिदिनत्रयम् ॥
त्रयोदश्याश्चतुष्कं च अष्टावेते गलग्रहाः ॥ ४७ ॥

भाषा–कृष्णपक्षमें चतुर्थी, सप्तमी आदि तीन तिथि (सप्तमी, अष्टमी, नवमी), त्रयोदशीसे चार तिथि (त्रयोदशी, चतुर्दशी, अमावास्या, प्रतिपदा) ये आठ तिथियां गलग्रह हैं ॥ ४७ ॥

द्वित्र्यैकादशदिक्पंचद्वादशप्रमिते तिथौ ॥
अश्विनीमृगचित्रासु हस्ते स्वात्यां च शक्रभे ॥४८॥
पुष्ये च पूर्वाफाल्गुन्यां श्रवणे पौष्णभं तथा ॥
वासवे शततारासु व्रतबन्धः प्रशस्यते ॥ ४९ ॥

भाषा–द्वितीया, तृतीया, एकादशी, दशमी, पञ्चमी, द्वादशी ये तिथि हों और अश्विनी, मृगशिरा, चित्रा, हस्त, स्वाति, ज्येष्ठा, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी, श्रवण, रेवती, धनिष्ठा, शतभिषा इन नक्षत्रोंमें व्रतबन्ध शुभ होता है ॥ ४८ ॥ ४९ ॥

चैत्रे मासे भास्करे मीनसंस्थे कुर्यान्मौञ्जीबन्धनं ब्राह्मणानाम् ॥ शुक्रस्यास्तं वाक्पतेर्नावलोक्यं नैव ग्राह्या चन्द्रगुर्वोश्च शुद्धिः ॥ ५० ॥
मीनस्थितेऽर्के द्विजपुंगवानां व्रतस्य बन्धं खलु मासि चैत्रे ॥ न जीवदोषोऽब्दविरुद्धदोषो गलग्रहाऽनध्ययनादिदोषः ॥ ५१ ॥

भाषा–चैत्रमासमें सूर्य मीनराशिमें स्थित हो तो ब्राह्मणोंका मौंजीबन्धन (यज्ञोपवीतकर्म) करे, शुक्र और बृहस्पतिके अस्तका दोष न देखे और न चन्द्रमा व बृहस्पतिकी शुद्धिका विचार करे। मीनस्थित सूर्य चैत्रमासमें श्रेष्ठ द्विजोंका व्रतबन्धकर्म करे और गुरुदोष, वर्षविरुद्धदोष, गलग्रहतिथि व अनध्यायतिथिके दोषपर ध्यान न धरे ॥ ५० ॥ ५१ ॥

विवाहमुहूर्त ।

गुरुशुद्धिवशेन कन्यकानां समवर्षेषु षडब्दकोपरिष्टात् ॥ रविशुद्धिवशाच्छुभो वराणामुभयोश्चन्द्रविशुद्धितो विवाहः ॥ ५२ ॥

भाषा—बृहस्पतिके शुद्धि वशसे कन्याओंका छःसे उपरान्त सम वर्षोंमें विवाह करे, सूर्यशुद्धिके वशसे पुरुषोंका विवाह करे और वर कन्या दोनोंको चन्द्रमाका बल देखना ॥ ९२ ॥

रेवत्युत्तररोहिणी मृगमघामूलाऽनुराधाकरस्वातीषु प्रमदातुलामिथुनगोलग्ने विवाहः शुभः ॥ मासाः फाल्गुणमाघमार्गशुचयो ज्येष्ठस्तथा माधवः शस्ताः सौम्यदिने तथैव तिथयो रिक्ता कुहू वर्जिताः ॥ ९३ ॥

भाषा—रेवती, उत्तराफाल्गुनी, रोहिणी, मृगशिरा, मघा, मूल, अनुराधा, हस्त, स्वाति इन नक्षत्रोंमें और कन्या, तुला, मिथुन, वृष इन लग्नोंमें विवाह शुभ होता है तथा फाल्गुन, माघ, मार्गशीर्ष, आषाढ, ज्येष्ठ, वैशाख इन महीनोंमें शुभ दिनमें विवाह शुभ जानना, रिक्ता (४ । ९ । १४), अमावास्या तिथि वर्जित हैं यहां एक बात लिखना परमावश्यक है कि उत्तरायणसूर्य अर्थात् मकरसे मिथुनकी संक्रांतिपर्यन्त विवाह करे, चैत्रमास अर्थात् मीनकी संक्रान्ति त्याग करे ॥ ९३ ॥

ज्येष्ठविचार ।

जन्ममासि न च जन्मभे तिथौ नैव जन्मदिवसेऽपि कारयेत् ॥ आद्यगर्भदुहितुः सुतस्य वा ज्येष्ठमासि न च यातु मंगलम् ॥ ९४ ॥

भाषा—जन्ममास, जन्मनक्षत्र, जन्मतिथि, जन्मवारमें आद्य (पहले) गर्भवाले कन्या वा पुत्रका विवाह ज्येष्ठ मासमें नहीं करे ॥ ९४ ॥

द्वौ ज्येष्ठौ मध्यमौ प्रोक्तौ एकज्येष्ठः शुभप्रदः ॥
ज्येष्ठत्रयं न कुर्वीत विवाहः सर्वसम्मतः ॥ ९५ ॥

भाषा-दो ज्येष्ठ मध्यम कहे हैं, एक ज्येष्ठ शुभदायक होता है, तीन ज्येष्ठ (वर जेठा, कन्या जेठी, ज्येष्ठ मास) नहीं ग्रहण करे विवाहमें यह सबका मत है ॥ ५५ ॥

अज्येष्ठा कन्यका यत्र ज्येष्ठपुत्रो वरो यदि ॥
व्यत्ययो वा तयोस्तत्र ज्येष्ठो मासः शुभप्रदः॥५६॥

भाषा-जो कन्या जेठी न हो और वर ज्येष्ठ हो अथवा इससे विपरीत हो तो ज्येष्ठमासमें विवाह शुभ होता है ॥ ५६ ॥

अवश्य ज्ञातव्य ।

दशवर्षव्यतिक्रान्ता कन्या शुद्धिविवर्जिता ॥
तस्यास्तारेन्दुलग्नानां शुद्धो पाणिग्रहो मतः ॥५७॥
द्वादशाऽब्दपरे कन्या षोडशाऽब्दपरे वरे ॥
व्ययवेदाष्टमे सूर्ये जीवे चैव न दोषभाक् ॥ ५८ ॥

भाषा-दशवर्षके अनन्तर कन्या शुद्धिरहित होती है उसका विवाह ताराशुद्धि चन्द्रशुद्धि और लग्नशुद्धि देखके करना योग्य है, बारह वर्षके उपरान्त कन्या और सोलह वर्षके उपरान्त वरको बारहवें चौथे आठवें सूर्य और कन्याको चौथे आठवें बारहवें गुरुका दोष नहीं जानना ॥ ५७ ॥ ५८ ॥

मंगलविचार ।

लग्ने व्यये च पाताले यामित्रे चाष्टमे कुजे ॥
पत्नी हन्ति स्वभर्तारं भर्ता भार्यां विनाशयेत् ॥५९॥

भाषा-लग्नमें, बारहवें, चौथे, सातवें, आठवें मंगल हो तो विवाह ठीक नहीं करना, कन्याके इन स्थानोंमें मंगल हो तो वरको हनन करे और वरके हो तो भार्याको विनाश करे, दोनों मंगली हों तो ठीक है ॥ ५९ ॥

भौमपरिहार ।

जामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने वा हिबुकेऽथवा ॥
नवमे द्वादशे चैव भौमदोषो न विद्यते ॥ ६० ॥
कुजजीवसमायुक्तो युक्तो वा कुजचन्द्रमा ॥
चन्द्रकेन्द्रगतो वापि तस्य दोषो न मंगली ॥ ६१ ॥
न मंगली चन्द्रभृगो द्वितीये न मंगली पश्यति जीव यस्य ॥ न मंगली चन्द्रगतश्च केन्द्रे न मंगली मंगलराहुयोगे ॥ ६२ ॥

भाषा—सातवें, लग्नमें, चौथे, नवें, बारहवें स्थानमें शनि हो तो मङ्गलका दोष नहीं जानना । मङ्गल गुरु एक साथ हों अथवा मङ्गल चन्द्रमाका योग हो वा चन्द्रमा केन्द्र (१।४।७।१०) स्थानमें हो तो मङ्गली होनेका दोष नहीं जानना । चन्द्रमा, शुक्र दूसरे स्थानमें हो तो मङ्गलीका दोष नहीं जानना, मङ्गलको बृहस्पति देखे तो मङ्गलका दोष नहीं जानना, चन्द्रमा केन्द्र (१।४।७।१०) में हो तो मङ्गलीका दोष नहीं और मङ्गल राहुका योग हो तो मङ्गलीला योग नहीं जानना ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥

वरकन्ययोः प्रीतिविचार ।

वर्णो वश्यं तथा तारा योनिश्च ग्रहमैत्रकम् ॥
गणमैत्री भकूटं च नाडी चैते गुणाधिकाः ॥ ६३ ॥

भाषा—१ वर्ण, २ वश्य, ३ तारा, ४ योनि, ५ ग्रहमैत्री ६ गणमैत्री, ७ भकूट (राशिमेलन), ८ नाडी ये गुण क्रम जानना जैसे वर्णमें १ गुण, वश्यमें २ गुण इत्यादि ॥ ६३ ॥

वर्णज्ञान ।

मीनालिकर्कटा विप्रा नृपाः सिंहाजधन्विनः ॥
कन्यानक्रवृषा वैश्याः शूद्रयुग्मतुलाघटाः ॥ ६४

भाषा-मीन, वृश्चिक, कर्क राशिया ब्राह्मण हैं; सिंह मेष, धनु ये क्षत्रियवर्ण हैं; कन्या, मकर, वृष ये वैश्यवर्ण हैं; मिथुन, तुला, कुंभ ये शूद्र वर्ण हैं; जहांतक हो कन्या उत्तम वर्ण न हो । वर्णमें १ गुण जानना ॥ ६४ ॥

वर्णगुणचक्र ।

		वरवर्ण			
		ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
वधूवर्ण	ब्राह्मण	१	०	०	०
	क्षत्रिय	१	१	०	०
	वैश्य	१	१	१	०
	शूद्र	१	१	१	१

वश्यविचार ।

द्वन्द्वचापघटकन्यकातुला मानवा अजवृषौ चतुष्पदौ ॥ कर्कमीनमकरा जलोद्भवाः केसरी वनचरालिकीटकाः ॥ ६५ ॥

भाषा-मिथुन, धनु, कुंभ, कन्या, तुला ये मानव राशियां हैं, मेष, वृष ये दोनों राशियां चतुष्पद हैं, कर्क, मीन, मकर ये जलचर हैं, सिंह वनचर और वृश्चिक कीटराशि है ॥ ६५ ॥

हित्वा मृगेन्द्रं नरराशिवश्याः सर्वे तथैषां जलजाश्च भक्ष्याः ॥ सर्वेऽपि सिंहस्य वशे विनालिं ज्ञेयं नराणां व्यवहारतोऽन्यत् ॥ ६६ ॥

भाषा-मृगेन्द्र (सिंह) को छोड नरराशिके सब वशमें हैं, तथा जलचर भक्ष्य हैं और सिंहके वशमें वृश्चिकके बिना सब वशमें हैं, अन्यत्र मनुष्योंके व्यवहारसे वश्यावश्यका विचार कर लेना ॥ ६६ ॥

वश्यगुण ।

वैरभक्ष्ये गुणाभावो द्वयोः सौ-यगुणद्वयम् ॥
वश्यवैरे गुणश्चैको वश्यभक्ष्ये गुणार्धकम् ॥ ६७ ॥

भाषा–शत्रु और भक्ष्यमें गुण शून्य, एक जातिमें गुण २, वश्य और वैरमें गुण १, वश्य और भक्ष्यमें गुण आधा ॥ ६७ ॥

वश्यगुणचक्र ।

		वर				
		चतुष्पद	मानव	जलचर	वनचर	कीट
वधू	चतुष्पद	२	॥	१	०	२
	मानव	॥	२	०	०	०
	जलचर	१	०	२	२	२
	वनचर	०	०	२	०	०
	कीट	१	०	०	०	२

तारावलविचार ।

कन्यर्क्षाद्वरभं यावत्कन्याभं वरभादपि ॥
गणयेन्नवभिः शेषे त्रिष्वद्रिभमसत्स्मृतम् ॥ ६८ ॥

भाषा–कन्याके नक्षत्रसे वरके नक्षत्रतक और वरके नक्षत्रसे कन्याके नक्षत्रतक गिने और पृथक् पृथक् नवका भाग देवे शेष ३ । ५ । ७ रहे तो अशुभ जानना, जैसे कन्याका नक्षत्र रोहिणी, वरका नक्षत्र श्रवण, रोहिणीसे श्रवणतक संख्या १९ में नवका भाग देनेसे शेष १ पहला तारा भया और श्रवणसे रोहिणीतक संख्या १० में नौका भाग देनेसे शेष १ पहला तारा वरकाभी भया ॥ ६८ ॥

तारागुण ।

एकतो लभ्यते तारा शुभा चेवाशुभान्यतः ॥
तदा सार्धो गुणश्चैकस्ताराशुद्धौ मिथस्त्रयः ॥
उभयोर्न शुभा तारा तदा शून्यं समादिशेत् ॥ ६९ ॥

भाषा–एकका शुभ एकका अशुभ तारा हो तो डेढ गुण और दोनों एक तारा अथवा शुभ तारा हो तो गुण ३ और जो दोनोंका तारा अशुभ हो तो गुण शून्य जानना ॥ ६९ ॥

तारागुणचक्र ।

तारा	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

योनिविचार ।

अश्वः शतभिषाश्विन्यौ रेवती भरणी गजः ॥
छागश्च कृत्तिकापुष्यौ नागौ च मृगरोहिणी ॥ ७० ॥
आर्द्रामूलमपि श्वानौ मूषकौ भगपैत्रिकौ ॥
मार्जारो दितिरश्लेषा आपो विष्णुश्च मर्कटौ ॥ ७१ ॥
अहिर्बुध्न्यार्यमे गावौ मित्रज्येष्ठामृगौ तथा ॥
वसुप्रोष्ठपदे सिंहौ हस्तस्वाती च माहिषौ ॥ ७२ ॥
विशाखात्वाष्ट्व्याघ्राख्यौऽभिजिद्विश्वे च बभ्रुकौ ॥
योनयः कथिता भानां वैरं मैत्रीं विचारयेत् ॥ ७३ ॥

भाषा–अश्विनी शतभिषा अश्वयोनि, रेवती भरणी गजयोनि, कृत्तिका पुष्य छागयोनि, रोहिणी मृगशिरा सर्पयोनि, आर्द्रा मूल

श्वानयोनि, पूर्वाफाल्गुनी मघा मूषकयोनि, पुनर्वसु आश्लेषा मार्जार (बिलाव) योनि, पूर्वाषाढा श्रवण वानरयोनि, उत्तरा उत्तराभाद्रपदा गौयोनि, अनुराधा ज्येष्ठा हिरणयोनि, धनिष्ठा पूर्वाभाद्रपदा सिंह योनि, हस्त स्वाति महिष योनि, विशाखा चित्रा व्याघ्रयोनि, अभिजित् उत्तराषाढा नकुलयोनि नक्षत्रोंके आश्रयसे ये योनि कही हैं वैर और मैत्रीका विचार करना ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥

वैरयोनि ।

गोव्याघ्रं गजसिंहमश्वमहिषं श्वैणं च बभ्रूरगं वैरं वानरमेषयोश्च सुमहत्तद्वद्बिडालेन्दुरम् ॥ लोकानां व्यवहारतोऽन्यदपि च ज्ञात्वा प्रयत्नादिदं दम्पत्योर्नृपभृत्ययोरपि सदा वर्ज्यं शुभस्यार्थिभिः ॥ ७४ ॥

भाषा–गौ और व्याघ्रसे वैर, गज और सिंहसे वैर, घोडा और महिषका वैर, कुत्ता और हिरणका वैर, नकुल और सर्पका वैर, वानर और मेषका वैर, बिडाल और मूषकका वैर, मनुष्योंके व्यवहारसेभी वैर महावैरको यत्नपूर्वक जानकर स्त्री पुरुष, स्वामिसेवकके नक्षत्रसे वैरभावका विचार करना, शुभाकांक्षी पुरुष वैरयोनिको परित्याग कर देवे ॥ ७४ ॥

योनिगुण ।

महावैरे च वैरे च स्वस्वभावे यथाक्रमात् ॥
मैत्रे चैवातिमैत्र्ये च खेन्दुद्वित्रिचतुर्गुणा ॥ ७५ ॥

भाषा–महावैरका गुण शून्य, दोनोंकी शत्रुताका गुण एक, एक स्वभावके गुण दो, दोनोंकी मित्रताके गुण तीन, अतिमित्रताके गुण ४ जानना ॥ ७५ ॥

योनिगुणचक्र ।

	अ.	ग.	मे.	स.	श्वा.	मा.	मू	गा.	म.	व्या	ह	वा.	न.	सिं
अश्व	४	२	२	३	२	२	२	१	०	१	३	३	२	१
गज	२	४	३	३	२	२	२	२	३	१	२	३	२	०
मेष	२	३	४	२	१	२	१	३	३	१	२	०	३	१
सर्प	३	३	२	४	२	१	१	१	१	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	१	२	४	२	१	२	२	१	०	२	१	१
मार्जार	२	२	२	२	२	४	०	२	२	१	३	३	२	२
मूषक	२	२	१	१	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गाय	१	२	३	२	२	२	२	४	३	०	३	२	२	१
महिष	०	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
व्याघ्र	१	२	१	१	१	१	२	०	१	४	१	१	२	२
हरिण	३	२	३	२	२	३	२	३	२	१	४	२	२	२
वानर	३	३	०	२	२	३	२	२	२	१	२	४	३	२
नकुल	२	३	३	०	०	२	१	२	२	२	२	३	०	२
सिंह	१	०	१	२	२	१	१	१	३	२	२	२	१	४

राशिस्वामी ।

मेषवृश्चिकयोर्भौमः शुक्रो वृषतुलाधिपः ॥
कन्यामिथुनयोः सौम्यो गुरुस्तु धनमीनयोः॥७६॥
शनिर्नक्रस्य कुम्भस्य कर्कस्यैव तु चन्द्रमाः ॥
सिंहस्याधिपतिः सूर्यः कथितो गणकैःक्रमात्॥७७॥

भाषा–राशियोंके स्वामी पूर्व कह चुके हैं इस कारण यहां श्लोक-मात्र लिख दिये हैं ॥ ७६ ॥ ७७ ॥

गहमैत्रीविचार ।

शत्रू मन्दसितौ समश्च शशिजो मित्राणि शेषा
रवेस्तीक्ष्णांशुर्हिमरश्मिजश्च सुहृदौ शेषाः

समाः शीतगोः ॥ जीवेन्दूष्णकराः कुजस्य सुहृदा ज्ञोऽरिः सितार्की समौ मित्रे सूर्यसितौ बुधस्य हिमगुः शत्रु समाश्चापरे ॥ ७८ ॥ सूरेः सौम्यसितावरी रविसुतो मध्येऽपरे त्वन्यथा सौम्यार्की सुहृदौ समौ कुजगुरू शुक्रस्य शेषावरी ॥ शुक्रज्ञौ सुहृदौ समः सुरगुरुः सौरस्य त्वन्ये रवेर्ये प्रोक्ताः सुहृदस्त्रिकोणभवनात् तेऽमी मया कीर्तिताः ॥ ७९ ॥

भा॰ इन दोनों श्लोकोंका अर्थ ग्रहमैत्रीचक्रसे जान लेना ॥ [illegible] ७९ ॥

ग्रहमैत्रीचक्र ।

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
मित्र	चं. बृ. मं.	सू. बु.	सू. चं. बृ.	सू. शु.	सू. चं. मं.	बु. शु.	बु. शु.
सम	बु.	मं. बृ. शु. श.	शु. श.	मं. बृ. श.	श.	मं. बृ.	बृ.
शत्रु	श. श.	०	बु.	.	बु. शु.	सू. चं.	सू. चं. मं.

मैत्रीगुण ।

वर कन्या दोनोंका स्वामी एक हो तो मैत्रीके गुण पांच जानना, समशत्रुत्वका गुण आधा जानना, शत्रुत्व मित्रत्वका गुण १, समामित्रत्वके गुण ४ जानना, समत्व समत्वके गुण २, शत्रुत्व शत्रुत्वका गुण शून्य, इस प्रकार ग्रहमैत्रीके गुण अनुमान कर लेना योग्य है ॥

ग्रहमैत्रीगुणचक्र ।

		वर						
		सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
वधू	सू.	५	५	५	३	५	०	०
	चं.	५	५	४	१	४	॥	॥
	मं.	५	४	५	॥	५	३	॥
	बु.	३	१	॥	५	॥	५	४
	बृ.	५	४	५	॥	५	॥	३
	शु.	५	॥	३	५	॥	५	५
	श.	०	॥	॥	४	३	५	५

गणमैत्री ।

अनुराधा मृगाश्विस्तु श्रवणोऽदितिपु[illegible]का ॥
स्वाती हस्तो रेवती च नव देवगणा स्मृताः ॥ ८० ॥
पूर्वात्रयं रोहिणी च उत्तरात्रयमेव च ।
आर्द्रा तु भरणी चैव नवैते मानुषा गणाः ॥ ८१ ॥
आश्लेषा शतभं मूलं विशाखा कृत्तिका मघा ॥
चित्रा ज्येष्ठा धनिष्ठा च नवैते राक्षसा गणाः ॥ ८२ ॥

भाषा—अनुराधा, मृगशिरा, अश्विनी श्रवण, पुनर्वसु, पुष्य, स्वाति, हस्त, रेवती ये नव नक्षत्र देवतागण कहे हैं । तीनों पूर्वा, रोहिणी, तीनों उत्तरा, आर्द्रा, भरणी ये नव नक्षत्र मनुष्यगण हैं । आश्लेषा, शतभिषा, मूल, विशाखा, कृत्तिका, मघा, चित्रा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा ये नव नक्षत्र राक्षसगण हैं ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥

गणगुण ।

दोनोंका गण एक हो तो ६ गुण, वर देवतागण हो वधू मनुष्यगण हो तो गुण ६, इससे विपरीत हो अर्थात् वर मनुष्यगण हो और वधू देवतागण हो तो गुण ५, वर राक्षसगण हो और वधू देवतागण हो तो गुण १, अन्यथा शून्य जानना ॥

गणगुणचक्र ।

वधू	वर		
	देव	मनुष्य	राक्षस
देव	६	५	१
मनुष्य	६	६	०
राक्षस	६	०	६

भकूटविचार ।

चतुर्थदशमे मित्रं तृतीयैकादशः शुभः ॥
उभयोः सप्तमः साम्यमेकर्क्षं शुभमुच्यते ॥ ८३ ॥
षडाष्टके भवेन्मृत्युर्नवमे पंचमे कलिः ॥
द्विर्द्वादशे च दारिद्र्यं कन्यर्क्षाद्गुण्यते क्रमात् ॥ ८४ ॥

भाषा–कन्याकी राशिसे चौथी राशि वरकी हो और वरसे दशवीं कन्याकी राशि हो तो मित्रता जानना, एवं तीसरी ग्यारहवीं राशि हो तो शुभ जानना, दोनोंकी सातवीं २ राशि हो तो सम जानना, एक राशि दोनोंकी हो तोभी शुभ जानना, छठी आठवीं राशि मृत्युकारक जानना, नवीं पांचवीं राशि कलहकारक जानना, दूसरी बारहवीं राशि दारिद्र्यकारक जानना, कन्याकी राशिसे वरकी राशितक क्रमसे गिने ॥ ८३ ॥ ८४ ॥

इसको स्पष्ट रीतिसे कहते हैं।

विषमात्कन्यकाराशेः षष्ठं षष्ठाष्टकं त्यजेत् ॥
समात् षष्ठं शुभं ज्ञेयं विपरीतं न शोभनम् ॥ ८५ ॥

भाषा–कन्याकी राशि विषम हो और कन्याकी राशिसे छठी राशि वरकी हो तो ऐसा षडष्टक त्याग करे, तथा कन्याकी राशि सम हो और कन्याकी राशिसे छठो राशि वरकी हो तो ऐसा षडष्टक शुभ होता है, इससे विपरीत शुभ नहीं जानना ॥ ८५ ॥

मृत्युषडष्टक ।

कन्यामेषौ वृषचापौ कामाली घटकर्कटे ॥
मृगसिंहे तुलामीने त्यजेन्मृत्युषडष्टकम् ॥ ८६ ॥

भाषा-कन्या मेष, वृष धनु, मिथुन वृश्चिक, कुंभ कर्क, मकर सिंह तथा तुला मीन इन राशियोंको मृत्युषडष्टक कहा है सो त्याग करे ॥ ८६ ॥

प्रीतिषडष्टक ।

मेषाली मकरे युग्मे कन्याकुंभौ तुलावृषौ ॥
सिंहे मीने धनुः कर्के षट्काष्टं प्रीतिवर्द्धकम् ॥ ८७ ॥

भाषा-मेष वृश्चिक, मकर मिथुन, कन्या कुंभ, तुला वृष, सिंह मीन और धनु कर्क इन राशियोंसे जो षडष्टक है सो प्रीतिको बढानेवाला प्रीतिषडष्टक कहना ॥ ८७ ॥

वरस्य पंचमे कन्या कन्याया नवमे वरः ॥
एतत्त्रिकोणकं ग्राह्यं पुत्रपौत्रसुखावहम् ॥ ८८ ॥

भाषा-वरसे पाचवें कन्या और कन्यासे नवें वरकी राशि हो तो ऐसा नवपंचक ग्रहण करे यह पुत्र पौत्रके सुखको देनेवाला है॥८८॥

भकूटगुण ।

राशि एक भिन्न चरण वा भिन्न नक्षत्र इनके गुण ७, तृतीय एकादश इनके और भिन्न राशि नक्षत्र एक इनके गुण ५, प्रीतिषडष्टक अथवा द्विर्द्वादश वा नवपंचक इनमें वरदूरत्व योनिशत्रुता होनेपरभी भकूटके गुण ६ होते हैं । वरयोनि मैत्र व स्त्रीदूरत्व हो तो षडष्टक द्विर्द्वादश नवपंचमादि दुष्ट कूटोंके गुण ४ जानना । योनिमैत्र व स्त्रीदूरत्व इनमेंसे एक हो तो दुष्ट कूटका एक गुण जानिये और एक नक्षत्र वा एक चरण हो तो ७ गुण जानना ॥

नाडीविचार ।

अश्विन्यार्द्रा शतभिषक् ज्येष्ठा हस्तः पुनर्वसुः ॥
पूर्वाभाद्रपदा मूलं चोत्तरा त्वाद्यनाडिका ॥ ८९ ॥

भाषा—अश्विनी, आर्द्रा, शतभिषा ज्येष्ठा, हस्त पुनर्वसु, पूर्वाभाद्रपदा, मूल, उत्तराफाल्गुनी ये नव नक्षत्र आद्यनाडी कहे हैं ॥८९॥

पूर्वाषाढाऽनुराधा च धनिष्ठाभरणीमृगाः ॥
पूर्वाफाल्गुनिका चित्रा पुष्योभा मध्यनाडिकाः९०॥

भाषा—पूर्वाषाढा, अनुराधा धनिष्ठा, भरणी, मृगशिरा, पूर्वाफाल्गुनी, चित्रा, पुष्य, उत्तराभाद्रपदा ये नव नक्षत्र मध्यनाडी कहे हैं ॥ ९० ॥

कृत्तिका रोहिणी स्वाती मघाश्लेषा च रेवती ॥
श्रवणश्चोत्तराषाढा विशाखा त्वन्त्यनाडिकाः॥ ९१ ॥

भाषा—कृत्तिका, रोहिणी, स्वाति, मघा, आश्लेषा, रेवती, श्रवण, उत्तराषाढा, विशाखा ये नव नक्षत्र अन्त्यनाडी कहे हैं ॥ ९१ ॥

नाडीफल ।

अग्रनाडीव्यधे भर्ता मध्यनाडीव्यधे द्वयम् ॥
पृष्ठनाडीव्यधे कन्या म्रियते नात्र संशयः ९२ ॥

भाषा—स्त्री पुरुषकी अग्र (आद्य) नाडी हो तो भर्ताको, दोनोंकी मध्यनाडी हो तो दोनोंको और अन्त्यनाडी हो तो कन्याको मृत्युदायक होती ॥ ९२ ॥

कन्यार्क्षाद्दूरनक्षत्रमशुभं निकटे यदि ॥
वरर्क्षाद्दूरगं त्र्यर्क्षं देवर्क्षैक्ये शुभं भवेत् ॥ ९३ ॥

भाषा—कन्याके नक्षत्रसे वरका नक्षत्र निकट हो तो अशुभ और वरनक्षत्रसे कन्याका नक्षत्र दूर हो अथवा नक्षत्र एक हो वा दोनोंकी राशिका स्वामी एक हो तो शुभ फल जानना ॥ ९३ ॥

राश्यैक्ये चेद्भिन्नमृक्षं द्वयोः स्यान्नक्षत्रैक्ये राशि-
युग्मं तथैव ॥ नाडीदोषो नो गणानां च दोषो
नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात् ॥ ९४ ॥

भाषा–वरकी और कन्याकी राशि एक हो और नक्षत्र पृथक् हो एवं नक्षत्र एक हो और राशि पृथक् हो तो नाडी और गणोंका दोष नहीं होता तथा नक्षत्र एक हो और चरणभेद हो तो शुभ जानना ॥ ९४ ॥

नाडीके गुण होते हैं तहां एक नाडी हो तो गुण शून्य० और पृथक् २ नाडी हो तो गुण ८ जानना और परिहारसे नाडी दोष-रहित हो तो गुण ८ जानना ॥

वर्गविचार ।

अकचटतपयशवर्गाः खगेशमार्जारसिंहशुनाम् ।
सर्पाखुमृगावीनां निजपंचमवैरिणामष्टौ ॥ ९५ ॥

भाषा–अ इ उ ए ओ इन पांच अक्षरोंके नामवालेका गरुड-वर्ग इत्यादि चक्रमें जानना । अपने वर्गसे पांचवां वर्ग शत्रु जानना ॥ ९५ ॥

वर्गचक्र ।

गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेष
अ	क	च	ट	त	प	य	श
इ	ख	छ	ठ	थ	फ	र	ष
उ	ग	ज	ड	द	ब	ल	स
ए	घ	झ	ढ	ध	भ	व	ह
ओ	ङ	ञ	ण	न	म	०	०

स्ववर्गे परमा प्रीतिर्मित्रे प्रीतिश्च कथ्यते ॥
उदासीने प्रीतिरल्पा शत्रुवर्गे मृतिस्तथा ॥ ९६ ॥

भाषा-वर कन्याका वर्ग एक हो तो परम प्रीति कहना, दोनों मित्र हों तो समान प्रीति कहना और उदासीन हों तो थोडी प्रीति कहना, शत्रुवर्ग हो तो मृत्यु कहना ॥ ९६ ॥

न वर्गवर्णो न गणो न योनिर्द्विर्द्वादशे नैव षडष्टके च ॥ ताराविरुद्धे नवपंचमस्य मैत्री यदा स्याच्छुभदो विवाहः ॥ ९७ ॥

भाषा-वर्ग, वर्ण, गण, योनि, द्विर्द्वादश, षडष्टक, ताराविरुद्ध, नवपञ्चक ये सब दोषयुक्त हो और मैत्री बनती हो तो विवाह शुभ होता है ॥ ९७ ॥

इस प्रकार वरकन्याकी प्रीतिका विचार भली भांति कर लेना और वर्णसे नाडीपर्यन्त ३६ गुण कहे हैं उन गुणोंको देखना ॥

गुणैः षोडशभिर्निन्द्या मध्यमा विंशतिस्तथा ॥
श्रेष्ठं त्रिंशद्गुणं यावत्परतस्तूत्तमोत्तमम् ॥
सद्भकूटे इति ज्ञेयं दुष्टकूटेऽथ कथ्यते ॥ ९८ ॥

भाषा-सोलह गुण हों तो निन्दित और वीस गुण हों तो मध्यम तथा तीस गुण हों तो श्रेष्ठ. तीस गुणसे अधिक हों तो उत्तमोत्तम प्रीति जानना, सद्भकूटमें यह गुण जानना दुष्ट कूटके गुण आगे कहते हैं ॥ ९८ ॥

निन्द्यगुणैर्विंशतिभिर्मध्यं बाणाधिकैर्मतम् ॥
तत्परैः पंचभिः श्रेष्ठं ततः श्रेष्ठतरं गुणैः ॥ ९९ ॥

तथा च । एकैकवृद्धितो ज्ञेया वर्णादीनां गुणाः क्रमात् ॥ विवाहः शुभदस्तेषां गुणे त्वष्टादशाधिके ॥

भाषा—बीस गुण हों तो निन्दित, पचीसतक मध्यम, तीसतक श्रेष्ठ, तीससे अधिक अतिश्रेष्ठ प्रीति जानना ॥ ९९ ॥

नाडीदोषस्तु विप्राणां वर्णदोषस्तु क्षत्रियः ॥
गणदोषश्च वैश्येषु योनिदोषस्तु पादजान् ॥१००॥

भाषा—ब्राह्मणोंको नाडीका दोष, क्षत्रियोंको वर्णदोष, वैश्योंको गणदोष तथा शूद्रोंको योनिदोष अवश्य विचारना योग्य है ॥१००॥

गणदोषो योनिदोषो वर्णदोषो षडष्टकम् ॥
चत्वारो नैव दुष्यन्ति राशिमैत्री यदा भवेत् ॥ १ ॥

भाषा—गणदोष, योनिदोष, वर्णदोष, षडष्टक ये चारों दोष अरिष्टता नहीं करते हैं जो राशिमैत्री शुभ बनती हो ॥ १ ॥

मैत्र्यां राशिस्वामिनोरंशनाथद्वन्द्वस्यापि स्या-
द्गणानां न दोषः ॥ खेटारित्वं नाशयेत्सद्भकूटं
खेटं प्रीतिश्चापि दुष्टं भकूटम् ॥ २ ॥

भाषा—वर कन्याके राशिस्वामियोंमें मित्रता होवे, अथवा राशि-नवांशस्वामियोंमें मित्रता होवे तो गणोंका दोष दूर हो जाता है और जो शत्रुता होवे तो सद्भकूटको नाश करे ह तथा जो राशि-स्वामिग्रहोंकी प्रीति होवे तो दुष्टभकूट होनेसेभी शुभ कहना ॥ २ ॥

षडष्टके गोमिथुनं प्रदद्यात् कांस्यं सरूप्यं नव-
पंचमे च ॥ नाड्यां सुधेन्वन्नसुवर्णवस्त्रं द्विर्द्वादशे
ब्राह्मणतर्पणं च ॥ ३ ॥

भाषा—षडष्टकदोषशांतिनिमित्त वत्ससमेत गोदान देवे, नवपञ्च-कदोषशांतिनिमित्त चांदीसमेत कांस्यपात्र प्रदान करे, नाडीदोष-दूर करनेके निमित्त विधिपूर्वक गोदान, अन्नदान, सुवर्ण और वस्त्र-दान देवे, द्विर्द्वादशदोषशान्त्यर्थ ब्राह्मणको दान आदिसे तृप्त करे॥३॥

निधनं मध्यनाड्यां तु दम्पत्योर्नैव पार्श्वयोः ॥
करग्रहे पृष्ठनाड्यौ न निन्द्ये इति तद्वचः ॥ ४ ॥

भाषा—मध्यनाडीवेध मृत्युप्रद होता है, एवं पार्श्वनाडी वर कन्याकी हो तो निन्दित नहीं जानना, विवाहमें पार्श्वनाडी (आदि और अंतकी) निन्दित नहीं कही है, परन्तु यह परिहार क्षत्रियादिकोंके विवाहमें ग्रहण करना योग्य है ॥ ४ ॥

कर्तरीदोषविचार ।

लग्नाच्चन्द्राद् व्ययार्थस्थौ पापखेटौ यदा तदा ॥
कर्तरी वर्जनीया सोद्वाहोपनयनादिषु ॥ ५ ॥
नहि कर्तरिजो दोषः सौम्ययोर्यदि जायते ॥
शुभग्रहयुतं लग्नं क्रूरयोर्नास्ति कर्तरी ॥ ६ ॥

भाषा—लग्न वा चन्द्रमासे बारहवें और दूसरे स्थानमें पाप ग्रह जो स्थित हों तो कर्तरीदोष विवाह उपनयन आदि शुभ कामोंमें वर्जित है । यदि शुभ ग्रहोंसे कर्तरी योग हो तो दोष नहीं जानना; शुभ ग्रह लग्नमें हो तो क्रूर ग्रहोंकी कर्तरीभी दूषित नहीं जानना ॥ ५ ॥ ६ ॥

गुरुबलविचार ।

जन्मत्रिदशमारिस्थः पूजया शुभदो गुरुः ॥
विवाहे च चतुर्थाष्टद्वादशस्थो मृतिप्रदः ॥ ७ ॥

भाषा—जो बृहस्पति १।३।१०।६ में स्थित हो तो पूज्य (दानयोग्य) जानना, दान करके शुभ फल देने योग्य होवे है और ४।८।१२ में स्थित गुरु विवाहमें मृत्युप्रद होवे है ॥ ७ ॥

नष्टात्मजा धनवती विधवा कुशीला ।
पुत्रान्विता पररता सुभगा विपुत्रा ॥
स्वामिप्रिया विगतकोशगमा धनाढ्या ।
वन्ध्या भवेत्सुरगुरौ क्रमशो विवाहे ॥ ८ ॥

भाषा—जो बृहस्पति पहला हो तो पुत्रोंको नष्ट करे अर्थात् पहले बृहस्पतिमें जो कन्याका विवाह हो तो वह कन्या नष्टपुत्रों-वाली होवे, दूसरा बृहस्पति हो तो धनवती होवे, तीसरा हो तो विधवा हो, चौथा हो तो कुशीला हो जावे, पांचवां हो तो पुत्रवती होवे, छठा हो तो परपुरुषगामिनी होवे, सातवां हो तो सौभाग्य-वती होवे, आठवां हो तो पुत्रहीन होवे, नवां हो तो अपने पतिकी प्यारी होवे, दशवां हो तो धनहीन होवे, ग्यारहवां हो तो धनवती होवे और बारहवां हो तो वांझ होवे. विवाहमें इस प्रकार क्रमसे बृहस्पतिका फल कहा है ॥ ८ ॥

गुरौ सिंहगते कार्यो न विवाहः कदाचन ॥
मेषस्थिते दिवानाथे सिंहस्थोऽपि शुभप्रदः ॥ ९ ॥

भाषा—सिंहका बृहस्पति हो तो विवाह न करे, मेषराशिके सूर्यमें सिंहस्थ बृहस्पतिभी शुभप्रद होवे है ॥ ९ ॥

सूर्यबलविचार ।

एकादशे तृतीये वा षष्ठे वा दशमेऽपि वा ॥
वरस्य शुभदो नित्यं विवाहे दिननायकः ॥ १० ॥
जन्मन्यथ द्वितीये वा पंचमे सप्तमेऽपि वा ॥
नवमे च दिवानाथे पूजया पाणिपीडनम् ॥ ११ ॥
अष्टमे च चतुर्थे च द्वादशे च दिवाकरे ॥
विवाहितो वरो मृत्युं प्राप्नोत्यत्र न संशयः ॥ १२ ॥

भाषा—जो सूर्य वरको ११ । ३ । ६ । १० हों तो विवाहमें शुभफलदायक जानना । और जो सूर्य १।२।५।७ हो तो विवा-हमें पूजा करनेके योग्य जानना । और जो ४।८।१२ सूर्य हो तो विवाहित वरकी मृत्युको करे है इसमें संदेह नहीं जानना ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ १२ ॥

गर्गो मुनिश्चाथ वसिष्ठकश्यपौ पाराशराद्या मु-
नयो वदन्ति ॥ द्वितीयपुत्रांबुगतो दिवाकरस्त्वयो
दशाहात्परतः शुभावहः ॥ १३ ॥

भाषा—विवाहमें वरको २।५।४ सूर्य हो तो तेरह दिनके उपरान्त शुभ जानना ऐसा गर्ग, वशिष्ठ, कश्यप, पाराशर आदि मुनि कहते हैं ॥ १३ ॥

मासान्तादि ।

मासांते दिनमेकं तु तिथ्यन्ते घटिकाद्वयम् ॥
घटिकात्रितयं भान्ते विवाहे परिवर्जयेत् ॥ १४ ॥

भाषा—संक्रांतिके अंतका १ दिन, तिथिके अंतकी २ घडी, नक्षत्रके अंतकी ३ घडी विवाहमें वर्जित हैं ॥ १४ ॥

शनैश्चरदिने चैव यदि रिक्ता तिथिर्भवेत् ॥
तस्मिन्विवाहिता कन्या पतिसन्तानवर्धिनी ॥ १५॥

भाषा—यदि शनिवारको रिक्ता ४।९।१४ तिथि हो और कन्या हो तो वह कन्या पतिसन्तानके वृद्धि करनेवाली जानना अर्थात् पतिको शुभ तथा अधिक संतानवाली होवे ॥ १५ ॥

भामिनीजन्मनक्षत्राद्द्वितीयं पतिजन्मभम् ॥
न शुभं भर्तृनाशाय कथितं ब्रह्मयामले ॥ १६ ॥

भाषा—स्त्रीके जन्मनक्षत्रसे दूसरा नक्षत्र पतिका जन्मनक्षत्र हो तो शुभ नहीं जानना, भर्त्ताको नाश करे है ऐसा ब्रह्मयामलमें कहा है ॥ १६ ॥

दशमाहदोषविचार ।

लत्तापातो युतिर्वेधो यामित्रं बुधपंचकम् ॥
एकार्गलोपग्रहौ च क्रान्तिसाम्यं ततः परम् ॥ १७॥

दग्धातिथिश्च विज्ञेया दशदोषा महाबलाः ॥
एतान्दोषान्परित्यज्य लग्नं संशोधयेद्बुधः ॥ १८ ॥

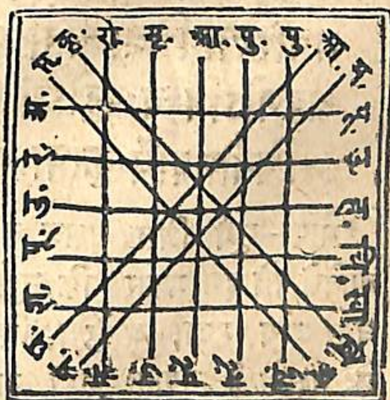
भाषा-१ लत्ता, २ पात, ३ युति, ४ वेध, ५ यामित्र, ६ बुध-पंचक, ७ एकार्गल, ८ उपग्रह, ९ क्रान्तिसाम्य, १० दग्धा तिथि ये दश दोष महाबलवान् जानिये इन दोषोंको त्यागकर विवाहलग्न पंडित संशोधन करे ॥ १७ ॥ १८ ॥

पंचशलाकाचक्र ।

पंचोर्ध्वा स्थापयेद्रेखाः पंच तिर्यङ्मुखास्तथा ॥
द्वयोश्च कोणयोर्द्वे द्वे चक्रं पंचशलाककम् ॥ १९ ॥
ईशाने कृत्तिका देया क्रमादन्यानि भानि तु ॥
ग्रहास्तेषु प्रदातव्या ये च यत्र प्रतिष्ठिताः ॥ २० ॥
लग्नस्य निकटे या च गता भवति पूर्णिमा ॥
तन्नक्षत्रे स्थितश्चन्द्रो दातव्यो गणकोत्तमैः ॥ २१ ॥

भाषा-पांच रेखा खडी खींचे तथा पांच तिरछी खींचे, दो दो रेखा कोणोंपर खींचे यह

विवाहपञ्चशलाकाचक्र ।



पंचशलाकाचक्र कहा है । ईशानमें कृत्तिकानक्षत्र स्थापित करे, अन्य नक्षत्र क्रमसे लिखे, जो ग्रह जिस नक्षत्रपर हो उसी नक्षत्रपर लिखे । और लग्नके निकट जो पूर्णमासी हो उस दिनके नक्षत्रपर चन्द्रमा धरे उत्तमपंडितोंने ऐसा कहा है ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥

नक्षत्रं द्वादशं भानुस्तृतीयं लत्तया कुजः ॥
षष्ठं जीवोऽष्टमं मन्दो हन्ति दक्षिणतः सदा ॥ २२॥
वामेन सप्तमश्चान्द्रिर्नवमं सिंहिकासुतः ॥
हंति भं पंचमं शुक्रो द्वाविंशं पूर्णचन्द्रमाः ॥ २३ ॥

भाषा—विवाहनक्षत्रसे बारहवें नक्षत्रपर सूर्य हो तो सूर्यका लत्तादोष जानना, तीसरे नक्षत्रपर मंगल हो तो मंगलका लत्तादोष जानना, छठे नक्षत्रपर बृहस्पति हो तो बृहस्पतिका लत्तादोष जानना, आठवें नक्षत्रपर शनि हो तो शनिका लत्तादोष जानना, ये सदा दक्षिणमार्ग अर्थात् आगेके नक्षत्रोंपर स्थित होनेसे लत्तादोष करते हैं । बुध सातवें नक्षत्र पिछलेपर स्थित हो तो बुधका लत्तादोष जानना, विवाहनक्षत्रसे पीछे नवें नक्षत्रपर राहु स्थित हो तो राहुका लत्तादोष जानना, पांचवें नक्षत्रपर शुक्र हो तो शुक्रका लत्तादोष जानना और पूर्ण चन्द्रमा बाईसवें नक्षत्रपर हो तो चन्द्रमाका लत्तादोष जानना ॥ २२ ॥ २३ ॥

पातदोष ।

सूर्ययुक्ताच्च नक्षत्राद्दोषः पातो विधीयते ॥
मघाश्लेषा चित्रा च साऽनुराधा च रेवती ॥ २४ ॥
श्रवणोऽपि च षट्कोऽयं पातदोषो निगद्यते ॥
अश्विनीमवधिं कृत्वा गणयेल्लग्नभावधि ॥ २५ ॥

भाषा—सूर्य जिस नक्षत्रपर स्थित हो उस नक्षत्रसे पातदोष जानिये सो इस प्रकार कि सूर्यनक्षत्रसे गणना करे और रेखा खींचता जाय मघा, आश्लेषा, चित्रा, अनुराधा, रेवती, श्रवण इन छः नक्षत्रोंकी गणना जहां आवे उस रेखाको तिरछी लिखे ऐसे अट्ठाईसों नक्षत्रोंकी रेखा लिखकर अश्विनीसे लग्नके नक्षत्रतक गिने

जो पातदोषवाले नक्षत्रपर लग्नका नक्षत्र हो तो उसी नक्षत्रका पातदोष जानना ॥ २४ ॥ २५ ॥

युतिदोष ।

यत्र राशौ भवेच्चन्द्रो ग्रहस्तत्र यदा भवेत् ॥
युतिदोषस्तदा ज्ञेयो विना शुक्रं शुभाशुभाः ॥२६॥

भाषा–जिस राशिका चन्द्रमा होवे उस राशिपर कोई और ग्रह स्थित होवे तो युतिदोष जानना, परन्तु विना शुक्रके अन्य कोईभी पाप ग्रह वा शुभ ग्रह होवे तो युतिदोष होता है ॥ २६ ॥

वेधविचार ।

एकरेखास्थितिर्वेधो दिननाथादिभिर्ग्रहैः ॥
विवाहे तत्र मासं तु न जीवति कदाचन ॥ २७ ॥

भाषा–एक रेखामें सूर्य आदि ग्रहोंकरके वेध होता है जैसे मृगशिराकी लग्न है तो मृगशिराकी रेखा पंचशलाका चक्रमें देखो कि मृगशिराका उत्तराषाढासे वेध है तो उत्तराषाढानक्षत्रका सूर्य आदि कोई ग्रह होगा तो उसी ग्रहका वेध जानना, वेधमें विवाह हो तो एक मासतक कदापि न जीवे ऐसा कहा है ॥ २७ ॥

वेधपरिहार ।

लत्ता मालवके देशे पातश्च कुरुजांगले ॥
एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत् ॥ २८ ॥

भाषा–लत्तादोष मालवदेशमें विचारे, पातदोष कुरुजांगलदेशमें, एकार्गलदोष काश्मीरदेशमें और वेध सर्वत्र विचारे ऐसा कहा है ॥ २८ ॥

यामित्रदोष ।

चतुर्दशं च नक्षत्रं यामित्रं लग्नभात्स्मृतम् ॥
शुभयुक्तं तदिच्छंति पापयुक्तं च वर्जयेत् ॥ २९ ॥

चन्द्रश्चान्द्रिर्भृगुर्जीवो यामित्रे शुभकारकाः ॥
स्वर्भानुर्भानुमन्दारा यामित्रे न शुभप्रदाः ॥ ३० ॥

भाषा–लग्नके नक्षत्रसे चौदहवें नक्षत्रपर कोई ग्रह हो तो यामित्र जानिये, शुभ ग्रहका यामित्र होनेसे विवाह हो जानेकी इच्छा आचार्य करते हैं, परंतु पाप ग्रहका यामित्र वर्जित है सो त्याग करे। चन्द्र, बुध, शुक्र, गुरु इनका यामित्र शुभकारक है और राहु, सूर्य, शनि, मंगल इनका यामित्र शुभ नहीं जानिये ॥ २९ ॥ ३० ॥

पंचकविचार ।

धार्या तिथि १५ मास १२ दशा १० ष्ट ८ वेदाः ४ संक्रान्तितो यातदिनैश्च योज्याः ॥ ग्रहैर्विभक्ता यदि पंचशेषे रोगस्तथाग्निर्नृपचौरमृत्युः ॥ ३१ ॥

व्रते रोगः पथे चौरः सेवायां राजपंचकम् ॥
गृहे त्वग्निपरित्याज्यं विवाहे मृत्युपंचकम् ॥ ३२ ॥

भाषा–१५।१२।१०।८।४ ये अंक धरे और संक्रांतिके दिनसे जितने दिन गये हों अर्थात् जितने अंश सूर्यसंक्रान्तिके गत हों उतनी संख्यामें पूर्वोक्त अंक संयुक्त कर देवे और नवका भाग देवे जो पांच शेष रहें तो पंचक जानना, संक्रांतिके अंशमें १५ जोडकर नवका भाग देनेसे जो पांच शेष रहे तो रोगपंचक, १२ जोडनेसे नवका भाग देके ५ शेष रहनेपर अग्निपंचक, १० जोडकर नवका भाग दे पांच शेष रहनेपर राजपंचक, ८ जोड ९ का भाग दे ५ शेष रहनेपर चौरपंचक और ४ जोडकर ९ का भाग दे ५ शेष रहनेपर दस्युपंचक जानिये। व्रतबन्धमें रोगपंचक, यात्रामें चौरपंचक, सेवाकर्ममें राजपंचक, घर छावने बनानेमें अग्निपंचक, और विवाहमें मृत्युपंचक वर्जित है सो जानने ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

एकार्गलविचार ।

योगांके विषमे चैको देयोऽष्टाविंशतिः समे ॥
अर्द्धं कृत्वाऽश्विनीपूर्वमंकभं मूर्ध्नि दीयते ॥ ३३ ॥
त्रयोदश तिरो रेखा एकोर्ध्वा मूर्ध्नि विस्तृता ॥
योगांके प्राप्तनक्षत्रे ज्ञेयमेकार्गलं बुधैः ॥ ३४ ॥
सूर्यचन्द्रमसोर्योगे भवेदेकार्गलस्तदा ॥ ३५ ॥

भाषा–विवाहके दिन जो योग हो वह योग यदि विषम हो तो एक जोडे और सम हो तो अट्ठाईस जोडे जैसे विष्कुंभ विषम, प्रीति सम, आयुष्मान् विषम, सौभाग्य सम इत्यादि । योगांकविषममें १ सममें २८ जोड आधा करके जो अंक हो उसी अंकसंख्याका नक्षत्र अश्विनीसे गिनकर एकार्गलचक्र तेरह रेखा तिरछी एक खडी रेखावाला है उस चक्रके शिरपर रक्खे सूर्य जिस नक्षत्रपर हो वहां सूर्य और विवाहनक्षत्रपर चन्द्रमा धरे, यदि सूर्य चन्द्रमा एक रेखापर आमने सामने होवे तो एकार्गल वेध जानना ॥ ३२ ॥ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥

एकार्गलचक्र ।

	अ	
रे	—	भ
उ	—	कृ
पू	—	रो
श	—	मृ
ध	—	आ
श्र	—	पु
उ	—	पु
पू	—	श्ले
मू	—	
ज्ये	—	पू
ऽनु	—	उ
वि	—	ह
स्वा	—	चि

उपग्रहविचार ।

शराष्टादिक् शक्रनगातिधृत्यस्तिथिर्धृतिश्च प्रकृतेश्च पंच ॥ उपग्रहाः सूर्यभतोऽब्जताराः शुभा न देशे कुरुबाह्लिकानाम् ॥ ३६ ॥

भाषा–सूर्यस्थितनक्षत्रसे विवाहनक्षत्रतक गिने यदि विवाहनक्षत्र संख्या ५।८।१०।१४।७।१९।१५।१८।२१।२२।२३।२४।

२५ हो तो उपग्रहदोष होता है सो कुरु और बाह्लिकदेशमें शुभ नहीं जानना ॥ ३६ ॥

क्रांतिसाम्यविचार ।

ऊर्ध्वास्तिस्रस्तिरस्तिस्रो मध्ये मीनं लिखेद्बुधः ॥
सूर्यचन्द्रमसोर्दृष्टौ क्रान्तिसाम्यं निगद्यते ॥ ३७ ॥

भाषा–तीन रेखा खडी तीन तिर्छी लिखकर बीच रेखापर मीन लिखे फिर पंडितजन इस प्रकार विचारे कि सूर्य जिस राशिपर हो वहां सूर्य लिखे और चन्द्रमा अपनी राशिपर कि जिस दिन विवाह हो, यदि सूर्यचन्द्रमा एक रेखापर आमने सामने हों तो क्रांतिसाम्य दोष जानिये ॥ ३७ ॥

क्रांतिसाम्यचक्र ।

	कुं.	मी.	मे.	
म.				वृ.
ध.				मि.
वृ.				क.
	तु.	क.	सिं.	

दग्धातिथि ।

मीने चापे द्वितीया च चतुर्थी वृषकुंभयोः ॥
मेषकर्कटयोः षष्ठी कन्यायुग्मेषु चाष्टमी ॥ ३८ ॥
दशमी वृश्चिके सिंहे द्वादशी मकरे तुले ॥
एतास्तु तिथयो दग्धाः शुभे कर्मणि वर्जिताः॥३९॥

भाषा–मीन और धनके सूर्य विवाहसमय हो तो द्वितीया दग्धा तिथि जानना, वृष कुंभके सूर्य हो तो चतुर्थी, मेष, कर्कके सूर्य हो तो षष्ठी, कन्या मिथुनमें अष्टमी । वृश्चिक सिंहमें दशमी, और मकर तुलामें द्वादशी ये दग्ध तिथियां शुभ कर्ममें वर्जित हैं, ये दश महादोष लिखे हैं ॥ ३८ ॥ ३९ ॥

विवाहलग्नशोधन ।

त्याज्या लग्ने व्यये मन्दः षष्ठे शुक्रेन्दुलग्नपाः ॥
रन्ध्रे चन्द्रादयः पंच सर्वेऽस्तेऽब्जगुरू समौ ॥४०॥

भाषा–लग्नमें और बारहवें शनि त्याग करे, छठे घरमें शुक्र, चन्द्रमा और विवाहलग्नस्वामी न हों. आठवें चंद्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र न हों, सातवें कोई ग्रह न हो परंतु चन्द्रमा, बृहस्पति सातवें हों तो सम जानना ॥ ४० ॥

कर्कलग्नेऽथवा मेषे घटांशो यदि जायते ॥
तुलायां मकरे चन्द्रे वैधव्यं जायते ध्रुवम् ॥ ४१ ॥

भाषा–कर्क अथवा मेषलग्नमें जो तुलाका नवांश हो और तुला वा मकरका चन्द्रमा हो तो निश्चय वैधव्य योग होता है ॥ ४१ ॥

केन्द्रे सप्तमहीने च द्वित्रिकोणे शुभाः शुभाः ॥
तृतीयैकादशे सर्वे पापाः षष्ठे च शोभनाः ॥ ४२ ॥

भाषा–सप्तमस्थानरहित केन्द्र (१।४।७।१०) और दूसरे व त्रिकोण (२।५।९) में शुभ ग्रह शुभ होते हैं और तीसरे ग्यारहवें सब ग्रह शुभ होते हैं तथा पाप ग्रह छठे शुभ होते हैं ॥ ४२ ॥

द्यूनं विना केन्द्रगतोऽमरेज्यस्त्रिकोणगो वापि हि लक्षमेकम् ॥ निहंति दोषत्रिशतं भृगुश्च शतं बुधो वापि हि दृश्यमूर्तिः ॥ ४३ ॥

भाषा–सप्तमस्थानरहित केन्द्रमें अथवा त्रिकोणमें बृहस्पति हो तो एक लक्ष दोषोंको नाश करे है एवं शुक्र तीन सौ और बुध एक सौ दोषोंको नाश करे हैं ॥ ४३ ॥

किं कुर्वन्ति ग्रहाः सर्वे यस्य केन्द्रे बृहस्पतिः ॥
मत्तमातंगयूथानां शत हन्ति च केसरी ॥ ४४ ॥

भाषा–जिसके विवाहलग्नमें बृहस्पति केन्द्र (१।४।७।१०) में हो तो अन्य ग्रह क्या कर सकते हैं, जैसे मत्त हाथियोंके सैकडों यूथको सिंह विनष्ट करता है तैसेही केन्द्रगत गुरु सब दोषोंको दूर करता है ॥ ४४ ॥

द्विरागमनमुहूर्त ।

चरेद्थौजहायने घटालिमेषगे रवौ ।
रवीज्यशुद्धियोगतः शुभप्रदस्य वासरे ॥
नृयुग्ममीनकन्यकातुलावृषे विलग्नके ।
द्विरागमं लघुध्रुवे चरेऽस्रपो मृदूडुभिः ॥ ४५ ॥

भाषा—विवाहसे विषम १।३।५।७ वर्ष हो और कुंभ, वृश्चिक मेषके सूर्य हो और सूर्य, गुरु शुद्ध हो, शुभ वार हो, मिथुन, मीन, कन्या, तुला, वृष लग्न हो, लघु (हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित्,) ध्रुव (तीनों उत्तरा, रोहिणी), चर (स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शततारका), मूल, मृदु (मृग, रेवती, चित्रा, अनुराधा) इन नक्षत्रोंमें द्विरागमन (गौने) का मुहूर्त्त शुभ कहा है ४५॥

सार्धाष्टमासे भृगुजश्च पूर्वे ततो धनेशे स्थितपंचपक्षः ॥ ततः प्रतीच्यां नवमासभुक्तमेकादशाहास्तमुदेति पूर्वे ॥ ४६ ॥

भाषा—साढे आठ महीने शुक्र पूर्वमें उदय रहकर पांच पक्ष अर्थात् ढाई महीनेतक अस्त रहता है, फिर पश्चिममें उदय होकर नव महीने उदय रहकर ग्यारह दिन अस्त रहता है, अनन्तर पूर्वमें उदय होता है । द्विरागमन (गौने) में शुक्रका उदय होना परमावश्यक है परंतु सन्मुख और दाहिने न हो, वायें और पीछे शुभ कहा है. यदि लडका लडकी सुयोग्य हों और गौना लेनेकी आवश्यकता हो तो नीचे लिखे अनुसार सन्मुख और दाहिने शुक्रका दोष नहीं जानना ॥ ४६ ॥

रेवत्यादिमृगान्ते च यावत्तिष्ठति चन्द्रमाः ॥
तावच्छुक्रो भवेदन्धः सन्मुखो दक्षिणः शुभः॥४७॥

भाषा—रेवतीसे मृगशिरातक स्थित चन्द्रमामें शुक्र अन्धा मानकर सन्मुख और दाहिने शुभ जाने और द्विरागमन कार्य करे ॥४७॥

वधूप्रवेशमुहूर्त ।

हस्तत्रये ब्रह्मयुगे मघायां पुष्ये धनिष्ठाश्रवणोत्तरेषु ॥ मूलाऽनुराधाहयरेवतीषु स्थिरेषु लग्नेषु वधूप्रवेशः ॥ ४८ ॥

भाषा—हस्त, चित्रा, स्वाती, रोहिणी, मृग, मघा, पुष्य, धनिष्ठा श्रवण, तीनों उत्तरा, मूल, अनुराधा, अश्विनी, रेवती इन नक्षत्रों और स्थिर लग्न वृष, सिंह, वृश्चिक, कुंभमें वधूप्रवेश शुभ जानना ॥ ४८॥

सूर्ये रोगः कुजे मृत्युर्वैधव्यं च बुधे स्मृता ॥
जीवशुक्रार्किचन्द्रेषु प्रवेशे सम्पदे वधूः ॥ ४९ ॥

भाषा—रविवारको वधूप्रवेश करे तो रोग होवे, मंगलवारको मृत्यु, बुधवारको विधवा होवे, गुरु, शुक्र, शनि, चन्द्र इन वारोंमें प्रवेश हो तो सम्पदा प्राप्त होवे ॥ ४९ ॥

त्रिरागमनमुहूर्त ।

अलिधनमकरार्के पूर्वसंस्थो हि राहुः ।
घटशफर तथाजे दक्षिणस्थे च तस्मिन् ॥
वृषमिथुनकुलीरे पश्चिमे दिग्विभागे ।
हरियुवतितुलायामुत्तरस्थे च राहुः ॥ ५० ॥
अग्रतो राहु वैधव्यं दक्षिणे सुतहा भवेत् ॥
पृष्ठे पुत्रवती प्रोक्ता वामे सौभाग्यवर्धनम् ॥५१॥

भाषा—वृश्चिक, धनु, मकरके सूर्य हो तो राहु पूर्वदिशामें जानना, कुंभ, मीन, मेषके सूर्यमें दक्षिणमें; वृष मिथुन, कर्कके सूर्यमें पश्चिममें और सिंह, कन्या, तुलाके सूर्यमें उत्तरमें राहु जानना । सन्मुख राहु हो तो गौना लेनेसे कन्या विधवा होवे, दाहिने राहु हो तो

पुत्रनाश होवे, पाछ हो तौ पुत्रवती होवे और वायें हो तो सौभाग्य बढे ॥ ५० ॥ ५१ ॥

मेषे पूर्वे वृषे याम्ये मिथुने पश्चिमे स्थितः ॥
कर्कटे चोत्तरे राहुर्मासि मासि विचारयेत् ॥ ५२ ॥

भाषा–मेषके सूर्य हो तो राहु पूर्व, वृषमें दक्षिण, मिथुनमें पश्चिम, कर्कमें उत्तर एवं सिंहमें पूर्व, कन्यामें दक्षिण इत्यादि रीतिसे महीने महीने राहुका वास विचार करे, किसी आचार्यका मत है कि " त्रैमासिकं तडागादौ मासिकं ह्यंगकर्मणि । यामार्द्धं युद्धकार्येषु राहुस्तत्र विचारयेत् ॥ " परंतु प्रायः पंडितत्रिरागमनमें त्रैमासिक राहुका विचार करते हैं ॥ १५२ ॥

इति श्रीमन्मिश्रशोभारामसुतज्योतिर्वित्पण्डितनारायणप्रसादमिश्रविलिखिते बालबोधाख्यज्योतिषसारसंग्रहे संस्काररत्नं चतुर्थं समाप्तम् ॥ ४ ॥

पंचममिश्ररत्नप्रारंभः ।

तत्रादौ जन्मपत्रलेखनप्रकार ।

प्रथम आशीर्वादात्मकसहित मंगलाचरणश्लोक, फिर संवत्सर, शाके, सम्वत्सरनाम, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण, दिनमान, रात्रिमान, सूर्यांश, इष्टघटी, लग्न, पितामहादिनाम, नक्षत्रचरण, जन्मांग, चन्द्रकुंडली, ग्रहस्पष्ट, भावस्पष्ट, ग्रहमैत्रीचक्र, षड्वर्ग, षड्वर्गकुंडली फलसहित, ग्रहभावफल, दृष्टिफल, अनन्तर दशा, अन्तर्दशा, आयुर्दाय, निर्याण आदि लिखना ॥

लग्नप्रमाण ।

नागेन्दुदस्रा विधुबाणदस्रा रामाभ्ररामा गुणवेदरामा ॥ अद्र्यब्धिरामा वसुरामरामा क्रमोत्क्रमान्मेषतुलादिमानम् ॥ १ ॥

भाषा–मेष और मीनका प्रमाण २१८ पल अर्थात् ३ घडी ३८ पल जानना, एक अंश ७ पल १६ विपलका भया । वृष कुंभका प्रमाण २५१ पल अर्थात् ४ घडी ११ पल, एक अंश ८ पल २२ विपलका जानना, मिथुन मकरका प्रमाण ३०३ पल अर्थात् ५ घडी ३ पल, एक अंश १० पल ६ विपलका जानना, कर्क धनका प्रमाण ३४३ पल अर्थात ५ घडी ४३ पल, एक अंश ११ पल २६ विपलका जानना, सिंह वृश्चिकका प्रमाण ३४७ पल अर्थात् ५ घडी ४७ पल, एक अंश ११ पल ३४ विपलका जानना, कन्या तुलाका प्रमाण ३३८ पल अर्थात् ५ घडी ३८ पल, एक अंश ११ पल १६ विपलका जानना यह प्रमाण नैमिषमंडलका है ॥

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
घडी	३	४	५	५	५	५	५	५	५	५	४	३
पल	३८	११	३	४३	४७	३८	३८	४७	४३	३	११	३८

तत्काललग्नज्ञान ।

जिस राशिपर सूर्य स्थित हो सूर्योदयसमय वही लग्न होती है अर्थात् उसी लग्नका उदय जानना, जितने २ अंश सूर्यके भुक्त होते जाते हैं उतने अंश पिछले २ दिन रात्रिमें भुक्त होते हैं, जैसे मेषके सूर्य १५ अंश गत हो तो ३ घडी ३८ पल मेषके प्रमाणमेंसे आधा प्रमाण १ घडी ४९ पल भुक्त और १ घडी ४९ पल वर्तमान दिनमें जानना । तिथिपत्रोंमें प्रायः लग्नसारिणी होती है उस परसे लग्न जाननेकी यह रीति है कि, ' यत्सूर्यराश्यंशसमानकोष्ठे घट्यादिकं स्वेष्टघटीयुतं तत् ॥ तत्तुल्यघट्यादिभवोद्धि यत्र तत्तीर्यगूर्ध्वांकमितं हि लग्नम् ॥ १ ॥ ' सूर्यस्थित राशि अंशके समान कोठेमें जो घडी पल हों उनमें इष्ट घडी पल जोड देवे जितनी घडी पल हों वह जिस राशि अंशके कोठेमें हों वही लग्न उतने अंश जानना और जोडके घडी पलको कला विकला जानना ॥

जन्मपत्रलेखनोदाहरण ।

स जयति सिन्धुरवदनो देवो यत्पादपङ्कजस्मरणम् ॥
वासरमणिरिव तमसां राशिन्नाशयतु विघ्नानाम् ॥१॥
अथ श्रीमन्नृपवरविक्रमार्कीयसम्वत् १९४८ तदंतर्गतश्रीमच्छालिवाहनभूभर्तुः शाके १८१३ तत्र षष्टयब्दानां मध्ये शोभननाम्नि सम्वत्सरे तत्र याम्यायने भास्करे शरदृतौ मासानां मासोत्तमे आश्विनमासे कृष्णपक्षे तिथावेकादश्यां चन्द्रवासरे घट्यादि० ४०।२९ पुष्यनक्षत्रे घट्यादि० २।१७ परत आश्लेषानक्षत्रे सिद्धियोगे घट्यादि० ५२।४१ बवनाम्नि करणे घट्यादि ९।१० एवं परिशोधितपञ्चाङ्गशुद्धेऽहनि तत्र दिनप्रमाणं घट्यादि० २९।४० रजनीमानं घट्यादि० ३०।२० अहोरात्रं षष्टिमितम् कन्याऽर्कगतांशाः १३ भोग्यांशाः १७ तद्दिने श्रीसूर्योदयादिष्टघट्यादि० ४।१५ तदा तुलालग्नोदये श्रीमान्मिश्रमिसिरीलालात्मजजगन्नाथस्तद्गृहे पत्न्याः उभयकुलानन्दकरं पुत्ररत्नं प्रासूत । तस्य होडाचक्राऽनुसारेणाश्लेषानक्षत्रस्य प्रथमचरणे जननत्वात् डीलशर्मेति शुभम् । उह्लापने तु अयोध्याप्रसादनामेतिलोके प्रसिद्धः देवद्विजाशीर्वचनाच्चिरंजीवी

सुखी च भूयात् । भयातम् ११५८ भभोगम् ६४।१८ ॥

चंद्रकुंडली । जन्माङ्गम् । ६





इसी प्रकार जन्मपत्र लिखे विस्तारभयसे अधिक विस्तार नहीं बढाया । जन्मपत्रीप्रदीपमें अधिकविस्तारसहित जन्मपत्री लेखन-प्रकार हम लिखेंगे ।

द्वादशभाव ।

तनुर्धनं सोदरमित्रपुत्रशत्रुप्रियामृत्युशुभाः क्रमेण ॥ कर्मायसंज्ञौ व्ययनामधेयो लग्नादिभावा विबुधैरिहोक्ताः ॥ २ ॥

भाषा—१ तनु, २ धन, ३ भ्रातृ, ४ मित्र, ५ पुत्र, ६ शत्रु, ७ स्त्री, ८ मृत्यु, ९ धर्म, १० कर्म, ११ लाभ, १२ व्यय ये बारह भाव लग्नसे बारहवें घरतक पंडितोंने कहे हैं ॥ २ ॥

यो यो भावः स्वामिदृष्टो युतो वा सौम्यैर्वा स्यात्तस्य तस्यास्ति वृद्धिः ॥ पापैरेवं तस्य भावस्य हानिर्निर्दिष्टव्या पृच्छतां जन्मतो वा ॥ ३ ॥

भाषा—जो जो भाव अपने स्वामीसे युक्त वा दृष्ट हो अथवा शुभ ग्रहोंकरके युक्त वा दृष्ट हो अर्थात् शुभग्रह उस भावमें स्थित हों अथवा उनकी दृष्टि हो तो उस उस भावकी वृद्धि कहिये और पाप ग्रहोंसे

युक्त अथवा दृष्ट हो तो उस भावकी हानि कहिये । प्रश्नसमय वा जन्मसमय यह विचार करना ॥ ३ ॥

दृष्टिविचार ।

पादैकदृष्टिर्दशमे तृतीये द्विपाददृष्टिर्नवपंचमे च ॥ त्रिपाददृष्टिश्चतुरष्टके वा संपूर्णदृष्टिः किल सप्तके च ॥ ४ ॥ तृतीये दशमे मन्दो नवमे पंचमे गुरुः ॥ विंशतीं वीक्ष्यते विश्वांश्चतुर्थे चाष्टमे कुजः ॥ ५ ॥

भाषा–सूर्य, चन्द्र, बुध, शुक्र, दशवें और तीसरे स्थानको एक चरणसे नवें पांचवें स्थानको दो चरणसे, चौथे आठवें स्थानको तीन चरणसे, सातवें घरको चारों चरणसे अर्थात् सम्पूर्ण दृष्टिसे देखते हैं । तीसरे दशवें घरको शनैश्चर और नवें पांचवें घरको बृहस्पति. चौथे आठवें घरको मंगल वीस विश्वा अर्थात् सम्पूर्ण दृष्टिसे देखे है ॥ ४ ॥ ५ ॥

पुरुषजातक ।

मूर्तौ शुक्रबुधौ यस्य केन्द्रे चैव बृहस्पतिः ॥
दशमोऽङ्गारको यस्य स ज्ञेयः कुलदीपकः ॥ ६ ॥

भाषा–जिसके मूर्तिमें शुक्र हो और केन्द्र (१।४।७।१०) में बृहस्पति हो तथा जिसके दशवें घरमें मंगल हो उसको कुलदीपक जानिये ॥ ६ ॥

नास्ति शुक्रो बुधो नैव नास्ति केन्द्रे बृहस्पतिः ॥
दशमोऽङ्गारको नैव स जातः किं करिष्यति ॥ ७ ॥

भाषा–जिसके जन्मसमय शुक्र, बुध, बृहस्पति केंद्र (१। ४। ७ १०) में नहीं हो और दशम स्थानमें मंगल न हो तो वह बालक क्या करेगा अर्थात् उसका जन्म वृथा जानना ॥ ७ ॥

षष्ठे च भवने भौमो राहुः सप्तमसम्भवः ॥
अष्टमे च यदा सौरिस्तस्य भार्या न जीवति ॥ ८ ॥

भाषा—जो छठे घरमें मंगल, सातवें राहु, आठवें घरमें शनि हो तो उसकी स्त्री नहीं जीवे ॥ ८ ॥

षष्ठे च द्वादशे राशौ यदा पापग्रहो भवेत् ॥
तदा मातृभयं विद्याच्चतुर्थे दशमे पितुः ॥ ९ ॥

भाषा—छठे और बारहवें घरमें जो पाप ग्रह होवे तो माताको भय जानना और चौथे दशवें घरमें पाप ग्रह हों तो पिताको अरिष्ट जानना ॥ ९ ॥

लग्नस्थाने यदा सौरिः षष्ठे भवति चन्द्रमाः ॥
कुजस्तु सप्तमस्थाने पिता तस्य न जीवति ॥ १० ॥

भाषा—जो लग्नमें शनि, छठे चन्द्रमा, सातवें स्थानमें मंगल हो तो उसका पिता नहीं जीवे ॥ १० ॥

जन्मलग्ने यदा राहुः षष्ठे भवति चन्द्रमाः ॥
जातो मृत्युमवाप्नोति कुदृष्ट्यां त्वपमृत्युना ॥ ११ ॥

भाषा—जो जन्मलग्नमें राहु, छठे चन्द्रमा हो तो उस बालककी मृत्यु होवे और पाप ग्रहकी दृष्टि जन्मलग्न और चन्द्रमापर हो तो अकाल मृत्यु होवे ॥ ११ ॥

पातालस्थो यदा राहुश्चेन्दुः षष्ठाष्टमेऽपि च ॥
पापदृष्टोऽपि शेषेण सद्यः प्राणहरः शिशोः ॥ १२ ॥

भाषा—जो राहु चौथे हो, चन्द्रमा छठे वा आठवें हो और पाप ग्रहोंकी दृष्टि हो तो शीघ्र उस बालकका प्राण हरण होवे ॥ १२ ॥

जन्मलग्ने यदा भौमश्चाष्टमे च बृहस्पतिः ॥
वर्षे च द्वादशे मृत्युर्यदि रक्षति शङ्करः ॥ १३ ॥

भाषा-जो जन्मलग्नमें मंगल और आठवें बृहस्पति हो तो बारहवें वर्ष वह बालक मर जावे यदि शंकर रक्षक होवे तोभी नहीं जीवे॥१३॥

शनिक्षेत्रे यदा सूर्यो भानुक्षेत्रे यदा शनिः ॥
वर्षे च द्वादशे मृत्युर्देवो वै रक्षिता यदि ॥ १४ ॥

भाषा-शनिके क्षेत्र (मकर, कुंभ) में सूर्य हों और सूर्यके घर (सिंह) में शनि हो तो बारहवें वर्षमें देवरक्षित होनेपरभी वह बालक नहीं जीवे ॥ १४ ॥

षष्ठोऽष्टमस्तथा मूर्तौ जन्मकाले यदा बुधः ॥
चतुर्थवर्षे मृत्युश्च यदि रक्षति शंकरः ॥ १५ ॥

भाषा-जन्मसमय छठे, आठवें तथा मूर्तिमें जो बुध हो तो चौथे वर्षमें मृत्यु होवे, यदि शंकर रक्षा करें तोभी नहीं जीवे ॥१५॥

भौमक्षेत्रे यदा जीवः षष्ठाष्टासु च चन्द्रमाः ॥
वर्षेऽष्टमेऽपि मृत्युर्वै ईश्वरो रक्षिता यदि ॥ १६ ॥

भाषा-मंगलके क्षेत्र (मेष, वृश्चिक) में जो बृहस्पति और छठे आठवें चन्द्रमा हो तो ईश्वरसे रक्षित होनेपरभी वह बालक आठवें वर्षमें मृत्युको प्राप्त होवे ॥ १६ ॥

दशमोऽपि यदा राहुर्जन्मलग्ने यदा भवेत् ॥
वर्षे तु षोडशे ज्ञेयो मृत्युर्वै तन्नरस्य च ॥ १७ ॥

भाषा-जिसके दशवें घरमें राहु जन्मसमय होवे तो उस बालककी सोलहवें वर्षमें मृत्यु जानिये ॥ १७ ॥

तनुस्थानगतग्रहफल ।

लग्नस्थितो दिनकरः कुरुतेऽङ्गपीडां पृथ्वीसुतो वितनुते रुधिरप्रकोपम् ॥ छायासुतः प्रकुरुते बहुदुःखभाजं जीवेन्दुभार्गवबुधाः सुखकांतिदाः स्युः ॥ १८ ॥

भाषा–जो सूर्य जन्मलग्नमें स्थित हो तो अङ्गपीडा हो, मङ्गल हो तो रक्तविकारको प्रगट करे, शनि हो तो बहुत दुःख करे और बृहस्पति, चन्द्रमा, शुक्र, बुध हों तो सुख कांतिको बढावें ॥ १८ ॥

धनस्थानगतग्रहफल ।

दुःखावहा धनविनाशकराः प्रदिष्टा वित्ते स्थिता रविशनैश्चरभूमिपुत्राः ॥ चन्द्रो बुधः सुरगुरुर्भृगुनन्दनो वा नानाविधं धनचयं कुरुते धनस्थः॥१९॥

भाषा–सूर्य, शनि, मंगल यदि धनस्थानमें स्थित होवें तो दुःख बढावें और धनका विनाश करें और चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र धनस्थानमें हों तो नाना प्रकारसे धनकी वृद्धि करें ॥ १९ ॥

सहजगतग्रहफल ।

भानुः करोति विरुजं रजनी करोऽपि कीर्त्यायुतं क्षितिसुतः प्रचुरप्रकोपम् ॥ ऋद्धिं बुधः सुधिषणं सुविनीतवेषं स्त्रीणां प्रियं गुरुकवी रविजस्तृतीये ॥ २० ॥

भाषा–जो सूर्य तीसरे स्थानमें हो तो निरोग करे, चन्द्रमा हो तो कीर्तिको बढावे, मंगल हो तो अतिक्रोधी करे, बुध हो तो सब कार्य सिद्ध करे और धन बढावे, गुरु, शुक्र, शनि हों तो परम चतुर, स्वरूपवान्, स्त्रियोंका प्यारा बनावें ॥ २० ॥

सुहृत्स्थानगतग्रहफल ।

आदित्यभौमशनयः सुखवर्जिताङ्गं कुर्वन्ति जन्मनि नरं सुचिरं चतुर्थे ॥ सोमो बुधः सुरगुरुर्भृगुनन्दनो वा सौख्यान्वितं च नृपकर्मरतः प्रधानम् ॥ २१ ॥

भाषा–जन्मसमय यदि चौथे स्थानमें सूर्य, मंगल, शनि स्थित हों तो मनुष्यके शरीरको बहुत कालतक सुखहीन करते हैं और चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र ये ग्रह चौथे घरमें हों तो सुखी और राज्यमें प्रधान राजकर्मचारीके पदको प्राप्त करें ॥ २१ ॥

सुतस्थानगतग्रहफल ।

पुत्रे रविः प्रचुरकोपयुतं बुधश्च स्वल्पात्मजं शनिधरातनुजावपुत्रम् ॥ शुक्रेन्दुदेवगुरवः सुतधामसंस्थाः कुर्वन्ति पुत्रबहुलं सुखिनं सुरूपम् ॥ २२ ॥

भाषा–यदि पांचवें सूर्य हो तो बहुत कोप करनेवाला हो, बुध हो तो थोडे पुत्र उत्पन्न होवे, शनि और मंगल हों तो सन्तानरहित होवे, शुक्र, चन्द्र, गुरु हों तो बहुत पुत्र सुखी और स्वरूपवान् होवें इस प्रकार पञ्चमस्थानगत ग्रह फल करते हैं ॥ २२ ॥

रिपुस्थानगतग्रहफल ।

मार्तण्डभूमितनयो ह्यरिपक्षनाशं मन्दः करोति पुरुषं बहुराज्यमानम् ॥ शुक्रो बुधो हि कुमतिं सरुजं च जीवश्चन्द्रः करोति विकलं विफलप्रयत्नम् ॥ २३ ॥

भाषा–जो सूर्य, मंगल छठे स्थानमें हों तो शत्रुपक्षका नाश होवे और शनि हो तो अनेक राजाओंके यहां मान होवे, शुक्र, बुध हों तो कुमति होवे, बृहस्पति हो तो रोग होवे, चन्द्रमा छठे स्थानमें हो तो विकलता और प्रयत्न (उपाय) को निष्फल करता है ॥२३॥

जायास्थानगतग्रहफल ।

तिग्मांशुभौमरविजाः किल सप्तमस्था जायां कुकर्मनिरतां तनुसन्तातिं च ॥ जीवेन्दुभार्गव-

बुधा बहुपुत्रयुक्तां रूपान्वितां जनमनोहररूप-
शीलाम् ॥ २४ ॥

भाषा-जो सातवें स्थानमें सूर्य, मंगल, शनि स्थित हों तो उसकी स्त्री कुकर्म करनेवाली व थोडे सन्तानवाली होवे और जो गुरु, चन्द्र, शुक्र, बुध, सातवें स्थानमें हों तो उसकी स्त्री बहुत पुत्रोंवाली सुन्दरी मनुष्योंके मनको हरण करने योग्य रूप और शीलवती होती है ॥ २४ ॥

मृत्युस्थानगतग्रहफल।

सर्वे ग्रहा दिनकरप्रमुखा नितान्तं मृत्युस्थिता विदधते किल दुष्टबुद्धिम् ॥ शस्त्राभिघातपरि-पीडितगात्रभागं सौख्यैर्विहीनमतिरोगगणैरु-पेतम् ॥ २५ ॥

भाषा-जिसके सूर्य आदि सम्पूर्ण ग्रहोंमेंसे कोईभी ग्रह आठवें स्थानमें स्थित हो तो उस पुरुषकी बुद्धि भ्रष्ट होवे, कोई अंग शस्त्र लगनेसे पीडित होवे, सुखसे रहित और बहु रोगी होवे ॥ २५ ॥

धर्मस्थानगतग्रहफल।

धर्मस्थिता रविशनैश्वरभूमिपुत्राः कुर्वन्ति धर्म-रहितं विमतिं कुशीलम् ॥ चन्द्रो बुधो भृगुसु-तश्च सुरेन्द्रमंत्री धर्मक्रियासु निरतं कुरुते मनु-ष्यम् ॥ २६ ॥

भाषा-यदि नवम स्थानमें सूर्य, शनि, मंगल हों तो मनुष्यको धर्मरहित, मतिहीन और कुशील करते हैं तथा चन्द्र, बुध, शुक्र, गुरु हों तो मनुष्यको धर्मक्रियामें निरत करते हैं ॥ २६ ॥

कर्मस्थानगतग्रहफल ।

आदित्यभौमशनयः किल कर्मसंस्था कुर्युर्नरं बहुकुकर्मरतं कुपुत्रम् ॥ चन्द्रः सुकीर्तिमुशना बहुवित्तयुक्तं रूपान्वितं बुधगुरू शुभकर्मभाजम् ॥ २७ ॥

भाषा–यदि सूर्य, भौम, शनि दशमस्थानमें स्थित हों तो मनुष्यको कुकर्मी और कुपुत्र बनाते हैं, चन्द्रमा दशवें घरमें हो तो कीर्तिवान्, शुक्र हो तो बहु धनी और स्वरूपवान् करे, बुध गुरु हों तो शुभ कर्म करनेमें प्रीति होवे ॥ २७ ॥

लाभस्थानगतग्रहफल ।

लाभस्थितो दिनकरो नृपलाभकारी तारापतिर्बहुधनं क्षितिजश्च नारीं ॥ सौम्यो विवेकसततं सुभगं च जीवः शुक्रः करोति धनिनं रविजः सुकीर्तिम् ॥ २८ ॥

भाषा–यदि लाभस्थानमें सूर्य हो तो राजासे लाभ करावे, चन्द्रमा हो तो बहु धनी, मंगल हो तो स्त्रीसुख प्रदान करे, बुध हो तो निरन्तर विवेकी (ज्ञानी) बनावे, बृहस्पति हो तो ऐश्वर्यवान् करे, शुक्र हो तो धनवान् करे तथा शनि ग्यारहवें घरमें हो तो कीर्तिवान् करे ॥ २८ ॥

व्ययस्थानगतग्रहफल ।

सूर्यः करोति पुरुषं व्ययगो विशीलं काणं शशी क्षितिसुतो बहुपापभाजम् ॥ चन्द्रात्मजो गतधनं धिषणः कृशाङ्गं शुक्रो बहुव्ययकरं रविजः सुतीव्रम् ॥ २९ ॥

भाषा-सूर्य जो व्यय (बारहवें) स्थानमें हो तो पुरुषको दुः-शील (दुष्टस्वभाव) करते हैं चन्द्रमा बारहवें हो तो काणा करे, मंगल हो तो बहु दुःखी करे, बुध हो तो धनहीन, बृहस्पति हो तो दुर्बल अंग, शुक्र हो तो बहुत खर्च करनेवाला और शनि हो तो तीक्ष्ण प्रकृतिवाला करे ॥ २९ ॥

राहुकेतुफलं सर्वं मन्दवत्कथितं बुधैः ॥ ३० ॥

भाषा-राहुकेतुजनित सम्पूर्ण फल शनिभावफलके समान पंडितोंको कहना चाहिये ॥ ३० ॥

उच्चनीचग्रह ।

रविर्मेषे तुले नीचो वृषे चन्द्रस्तु वृश्चिके ॥
भौमश्च नक्रकर्के च स्त्रियां सौम्यो झषे तथा ॥३१॥
गुरुः कर्के च नक्रे च मीनकन्ये सितस्य च ॥
मन्दस्तुलायां मेषे च कन्या राहुगृहस्य च ॥ ३२ ॥
राहुर्युग्मे तु चापे च तस्मात्सप्तमगः शिखी ॥
प्रोक्तं ग्रहाणामुच्चत्वं नीचत्वं च क्रमाद्बुधैः ॥ ३३ ॥

भाषा-सूर्यकी मेष राशि उच्च, तुला राशि नीच जानना; चन्द्रमाकी वृषराशि उच्च और वृश्चिक नीच राशि जानना; मंगलकी उच्च राशि मकर और नीच राशि कर्क जानना; बुधकी उच्च राशि कन्या और नीच राशि मीन जानना; बृहस्पतिकी उच्च राशि कर्क और मकरराशि नीच जानना; शुक्रकी उच्च राशि मीन और नीच राशि कन्या जानना; शनैश्चरकी उच्च राशि तुला और नीच राशि मेष जानना; कन्याराशि राहुका घर है, राहुकी उच्च राशि मिथुन और धनु राशि नीच जानना; राहुसे सातवें घरमें केतु रहा करता है इस प्रकार ग्रहोंकी उच्च नीच राशियां क्रमसे पंडितोंने कही हैं जो ग्रह जिस राशिका स्वामी है उस ग्रहका वह राशि घर है और

जो ग्रह सूर्यके साथ सूर्यके मण्डलमें हो वह ग्रह अस्त जानना ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥

त्रिभिः स्वस्थो भवेन्मंत्री त्रिभिरुच्चैर्भवेन्नृपः ॥
त्रिभिर्नीचगतैर्दासः त्रिभिरस्तं गतैर्जडः ॥ ३४ ॥

भाषा—तीन ग्रह जिसके जन्मसमय अपने घरमें स्थित हों वह मंत्री होवे, तीन ग्रह उच्चके हों तो राजा अथवा राजाके समान होवे, तीन ग्रह नीचके हों तो दासभावको प्राप्त होवे, तीन ग्रह अस्त होवें तो जड होवे ॥ ३४ ॥

यह पुरुषजातक अति संक्षेपसे यहां लिखा विस्तारपूर्वक 'नारायणज्योतिष' के जातकभागमें लिखेंगे ॥

स्त्रीजातक ।

समे विलग्ने यदि संस्थिताः स्युर्बलान्विताः शुक्रबुधेन्दुजीवाः ॥ स्यात्कामिनी ब्रह्मविचार-चर्चापरागमज्ञानविराजमाना ॥ ३५ ॥

भाषा—यदि जन्मलग्न सम राशि हो और उसमें शुक्र, बुध, चन्द्र, बृहस्पति बली होके स्थित हों तो वह स्त्री ब्रह्मविचारमें चर्चा करने-वाली और श्रेष्ठ ज्ञानसे युक्त होवे ॥ ३५ ॥

सप्तमे भार्गवे जाता कुलदोषकरा भवेत् ॥
कर्कराशिस्थिते भौमे स्वैरा भ्रमति वेश्मसु ॥ ३६ ॥

भाषा—जिसके सातवें घरमें शुक्र हो तो वह स्त्री कुलको दूषित करे और जो कर्कराशिमें मंगल स्थित हो तो वह स्त्री स्वेच्छानुसार दूसरेके घरमें वास करे ॥ ३६ ॥

पापयोरन्तरे लग्ने चन्द्रे वा यदि कन्यका ॥
जायते च तदा हन्ति पितृश्वशुरयोः कुलम् ॥ ३७ ॥

भाषा—लग्न अथवा चन्द्रमा यदि पाप ग्रहोंके बीचमें हो तो वह

स्त्री दोनों वंश (पिता श्वशुरके कुल) को विनष्ट करनेवाली होवे ॥ ३७ ॥

लग्ने च सप्तमे पापे सप्तमे वत्सरे पतिः ॥
म्रियते चाष्टमे वर्षे चन्द्रः षष्ठाष्टमे यदि ॥ ३८ ॥

भाषा–जिस स्त्रीके जन्मसमय लग्नमें और सातवें पाप ग्रह हो तो उसका पति सातवें वर्षमें मृत्युको प्राप्त होवे और चन्द्रमा छठे वा आठवें होवे तो आठवें वर्ष पतिकी मृत्यु जानना परंतु यहां शुभ ग्रहोंकी दृष्टि हो तो नहीं ॥ ३८ ॥

द्वादशे चाष्टमे भौमे रे तत्रैव संस्थिते ॥
लग्ने च सिंहिकापुत्रे रण्डा भवति कन्यका ॥ ३९ ॥

भाषा–बारहवें अथवा आठवें मंगल हो और वहीं क्रूर ग्रह स्थित हो और लग्नमें राहु हो तो ऐसे योगसे कन्या रंडा होती है ॥ ३९ ॥

लग्नात्सप्तमगः पापश्चन्द्रात् सप्तमगोऽपि वा ॥
सद्यो निहन्ति दम्पत्योरेकं नास्त्यत्र संशयः ॥ ४० ॥

भाषा–लग्नसे सातवें अथवा चन्द्रमासे सातवें पाप ग्रह हो तो विवाहसे थोडेही कालमें स्त्री पुरुषमेंसे एककी निसन्देह मृत्यु होवे ॥ ४० ॥

निशाकरः पापखगान्तरस्थः शस्त्राग्निमृत्युं कुजभे करोति ॥ पापे स्मरस्थेऽन्यखगे च धर्मे किला-ङ्गना प्रव्रजितत्वमेति ॥ ४१ ॥

भाषा–जो चन्द्रमा पाप ग्रहके मध्यमें स्थित हो तो शस्त्रसे मृत्यु कहना और जो चन्द्रमा मंगलकी राशिमें स्थित हो तो अ-ग्निसे जलकर नाश कहना, तथा जो पापग्रह सातवें स्थान अथवा नवमस्थानमें अन्य शुभ ग्रह हो तो वह स्त्री काषायवस्त्रधारी वेदा-न्तिनी होती है ॥ ४१ ॥

रविसुतो यदि कर्कमुपागतो हिमकरो मकरोपगतो भवेत् ॥ किल जलोदरसंजनिता तदा निधनता वनितासु तु कीर्तिता ॥ ४२ ॥

भाषा–जो शनैश्चर कर्कराशिमें हो और चन्द्रमा मकराशिमें हो तो जलोदररोगसे स्त्रीका नाश हो ॥ ४२ ॥

सप्तमे दिनपतौ पतिमुक्ता क्षोणिजे च विधवा खलु बाल्ये ॥ पापखेचरविलोकनयाते मन्दगे च युवती जरती स्यात् ॥ ४३ ॥

भाषा–जो सातवें स्थानमें सूर्य हो तो उस स्त्रीको उसका पति त्याग देवे और मंगल सातवें स्थानमें हो तो बाल्यावस्थामें विधवा हो, तथा जो सातवें पाप ग्रह हो तौ यौवनावस्थामें विधवा हो और जो सातवें स्थानमें शनैश्चर हो तो बुढापेमें विधवा होवे ॥ ४३ ॥

तनुस्थानगतग्रहफल ।

मूर्तौ करोति विधवां दिनकृत्कुजश्च राहुर्विनष्टतनयां रविजो दरिद्राम् ॥ शुक्रः शशाङ्कतनयश्च गुरुश्च साध्वीमायुःक्षयं च कुरुतेऽत्र च शर्वरीशः ॥ ४४ ॥

भाषा–मूर्तिमें सूर्य मंगल हों तो उस स्त्रीको विधवा करे, राहु हो तो सन्तानहीन, शनि हो तो दरिद्रा, शुक्र, बुध, गुरु हों तो साध्वी, चन्द्रमा हो तो आयु क्षय करे ॥ ४४ ॥

धनस्थानगतग्रहफल ।

कुर्वन्ति भास्करशनैश्चरराहुभौमा दारिद्र्यदुःखमतुलं नियतं द्वितीये ॥ वित्तेश्वरीमविधवां

गुरुशुक्रसौम्या नारीप्रभूततनयां कुरुते शशाङ्कः ॥ ४५ ॥

भाषा-सूर्य, शनि, राहु, भौम यदि दूसरे स्थानमें हों तो दारिद्र्य और दुःखको करते हैं; गुरु, शुक्र, बुध हों तो धनवती और सौभाग्यवती करते हैं; चंद्रमा दूसरे हो तो स्त्रीको बहुपुत्रवती करे ॥ ४५ ॥

सहजस्थानगतग्रहफल ।

शुक्रेन्दुभौमगुरुसूर्यबुधास्तृतीये कुर्युः सतीं बहुसुतां धनभोगिनीं च ॥ कन्यां करोति रविजो बहुवित्तयुक्तां पुष्टिं करोति नियतं खलु सैंहिकेयः ॥ ४६ ॥

भाषा-शुक्र, चन्द्र, भौम, गुरु, सूर्य, बुध, तीसरे स्थानमें हों तो उस स्त्रीको पतिव्रता, बहु पुत्रोंवाली, धनवती, ऐश्वर्यवती करे, शनि तीसरे घरमें हो तो बहुत कन्या और धनसे युक्त करे, राहु तीसरे हो तो शरीरको पुष्ट करे ॥ ४६ ॥

सुहृत्स्थानगतग्रहफल ।

स्वल्पं पयः क्षितिजसूर्यसुते चतुर्थे सौभाग्यशीलरहितां कुरुते शशाङ्कः ॥ राहुः सपतिसहितां क्षितिवित्तलाभं दद्याद्बुधः सुरगुरुर्भृगुजश्च सौख्यम् ॥ ४७ ॥

भाषा-मंगल, शनि चौथे हों तो उस स्त्रीके दूध स्वल्प होवे, चंद्रमा हो तो सौभाग्य और शीलरहित होवे, राहु हो तो भूमि और धनका लाभ होवे, बुध, गुरु, शुक्र हों तो सुख प्राप्त होवे ॥ ४७ ॥

सुतभावगतग्रहफल ।

नष्टात्मजां रविकुजौ खलुपंचमस्थौ चन्द्रा-

त्मजो बहुसुतां गुरुभार्गवौ च ॥ राहुर्ददाति मरणं रविजस्तु रोगं कन्याप्रसूतिनिरतां कुरुते शशाङ्कः ॥ ४८ ॥

भाषा–सूर्य, मंगल पांचवें घरमें हों तो वह स्त्री सन्तानहीन होवे; बुध, गुरु, शुक्र हों तो बहु पुत्रवती होवे, राहु हो तो मरण होवे, शनि हो तो रोग होवे; चंद्रमा पांचवें स्थानमें स्त्रीके जन्म-समय हो तो उसके कन्या अधिक उत्पन्न होवें ॥ ४८ ॥

रिपुभावगतग्रहफल ।

षष्ठे शनैश्चरदिवाकरराहुजीवाः भौमः करोति सुभगां पतिसेविनीं च ॥ चन्द्रः करोति विधवा-मुशना दरिद्रां वेश्यां शशाङ्कतनयः कलह-प्रियां वा ॥ ४९ ॥

भाषा–जिस स्त्रीके छठे स्थानमें शनैश्चर, सूर्य, राहु, गुरु, भौम हों तो वह स्त्री सौभाग्यवती और पतिकी सेवा करनेवाली होवे, चन्द्रमा हो तो विधवा, शुक्र हो तो दरिद्रा, बुध हो तो वेश्या अथवा कलहप्रिया होवे ॥ ४९ ॥

सप्तमभावगतग्रहफल ।

सौरारजीवबुधराहुरवीन्दुशुक्रा दद्युः प्रसह्य मरणं खलु सप्तमस्थाः ॥ वैधव्यबन्धनभयं क्षयवित्तनाशं व्याधिप्रवासनियतं च यथा-क्रमेण ॥ ५० ॥

भाषा–शनि, मंगल, गुरु, बुध, राहु, सूर्य, चन्द्र, शुक्र ये ग्रह सातवें स्थानमें स्थित हों तो क्रमसे मरण, वैधव्य, बन्धन, भय, भय, धननाश, रोग, विदेशवास होवे यह फल करते हैं ॥ ५० ॥

मृत्युभावगतग्रहफल ।

स्थानेऽष्टमे गुरुबुधौ नियतं वियोगं ।
मृत्युं शशी भृगुसुतश्च तथैव राहुः ॥
सूर्यः करोति विधवां सुभगां महीजः ।
सूर्यात्मजो बहुसुतां पतिवल्लभां च ॥ ५१ ॥

भाषा–जिस स्त्रीके आठवें स्थानमें गुरु बुध हों तो पतिसे वियोग होवे, चन्द्रमा शुक्र तथा राहु हों तो मृत्यु होवे, सूर्य आठवें हो तो उस स्त्रीको विधवा करे, मङ्गल सौभाग्यवती और शनि बहुपुत्रवती व पतिकी प्यारी करे है ॥ ५१ ॥

धर्मभावगतग्रहफल ।

धर्मस्थिता भृगुदिवाकरभूमिपुत्रजीवाः सुधर्मनिरतां शशिजः सुभोगाम् ॥ राहुस्तथाऽर्कतनयश्च करोति वन्ध्यां नारीं प्रसूतितनयां कुरुते शशाङ्कः ॥ ५२ ॥

भाषा–जिस स्त्रीके नवें स्थानमें शुक्र, सूर्य, मङ्गल, गुरु स्थित हों तो वन्ध्यां (सन्तानहीन) करे, चन्द्रमा नवें स्थानमें होनेसे स्त्रीको बहुत पुत्रोंके उत्पन्न करनेवाली करे ॥ ५२ ॥

कर्मभावगतग्रहफल ।

राहुर्नभःस्थलगतो विधवां करोति पापे रतिं दिनकरश्च शनैश्चरश्च ॥ मृत्युं कुजोऽर्थरहितां कुलटां च चन्द्रः शेषा ग्रहाः धनवतीं सुभगां च कुर्युः ॥ ५३ ॥

भाषा–जो राहु दशवें घरमें स्थित हो तो उस स्त्रीको विधवा करे, सूर्य शनि हो तो पापकर्ममें प्रीति बढावे, मंगल मृत्यु करे,

चन्द्रमा धनहीन व कुरुटा करे, शेष ग्रह बुध, गुरु, शुक्र दशवें स्थानमें हों तो स्त्रीको धनवती और सौभाग्यवती करें ॥ ९३ ॥

लाभभावगतग्रहफल ।

आये रविर्बहुसुतां धनिनीं शशाङ्कः पुत्रान्वितां क्षितिसुतो रविजो धनाढ्याम् ॥ आयुष्मतीं सुरगुरुर्भृगुजः सुपुत्रां राहुः करोति सुभगां सुखिनीं बुधश्च ॥ ९४ ॥

भाषा—जो स्त्रीके ग्यारहवें स्थानमें सूर्य हो तो बहुपुत्रवती होवे, चन्द्रमा हो तो धनवती होवे, मङ्गल हो तो पुत्रवती होवे, शनि हो तो धनवती होवे, बृहस्पति हो तो अधिक आयुवाली होवे, शुक्र हो तो सुन्दर पुत्रोंवाली होवे, राहु ग्यारहवें हो तो सुभगा और बुध हो तो सुखयुक्त करे हैं ॥ ९४ ॥

व्ययभावगतग्रहफल ।

अन्त्ये धनव्ययकरां दिनकृच्छनिश्च वन्ध्यां कुजः पररतां कुटिलां च राहुः ॥ साध्वीं सितेज्यशशिजा बहुपुत्रपौत्रयुक्तां विधुः प्रकुरुते व्ययगो दिनांधाम् ॥ ९५ ॥

भाषा—जो बारहवें स्थानमें सूर्य शनि हो तो वह बहुत धनव्यय करनेवाली होवे, मंगल हो तो वन्ध्या होवे, राहु हो तो परपुरुषगामिनी और व्यभिचारिणी होवे, शुक्र, गुरु, बुध हों तो सरलस्वभाववाली और बहुत पुत्र व पौत्रोंसे युक्त होवे, चन्द्रमा बारहवें हो तो स्त्रीको दिनान्ध करे ॥ ९५ ॥

यह संक्षेपसे स्त्रीजातक लिखा विस्तारपूर्वक 'नारायणज्योतिष' ग्रन्थके जातकमार्गमें लिखेंगे ॥

गोचरविचार ।

मासं शुक्रबुधादित्याः सार्धमासं तु मंगलः ॥
वर्षमेकं गुरुश्चैव सपादद्विदिनं शशी ॥ ५६ ॥
राहुरष्टादशान्मासान् त्रिंशन्मासान् शनैश्चरः ॥
राहुवत्केतुरुक्तस्तु राशिभोगाः प्रकीर्तिताः॥ ५७ ॥
राशिप्रवेशे सूर्यारौ मध्ये शुक्रबृहस्पती ॥
राहुश्चन्द्रः शनिश्चान्ते सौम्यश्चैव सदा शुभः ॥५८॥

भाषा–शुक्र, बुध, सूर्य ये ग्रह एक २ महीना एक राशिको भोग करते हैं, डेढ महीना मङ्गल, एक वर्षतक गुरु, सवा दो दिन चन्द्रमा, अठारह महीने राहु, तीस महीने शनैश्चर, अठारह महीने केतु एक राशिपर रहता है इस प्रकार राशिभोग कहा है । सूर्य मंगल-राशिमें प्रवेश करतेही फलप्रदान करते हैं; राशिके मध्यमें शुक्र, बृहस्पति, राहु, चन्द्रमा, शनि ये राशिके अन्तमें होनेपर अपना (शुभाशुभ) फल देते हैं और बुध सदा फल देता है ॥५६॥५७॥५८॥

शुभा एकादशे सर्वे त्रिषष्ठदशगो रविः ॥
व्ययाष्टतूर्यगाः सर्वे नेष्टाः सौम्याः शुभा ग्रहाः॥५९॥

भाषा–ग्यारहवें सब ग्रह शुभ होते हैं. तीसरे छठे दशवें सूर्य शुभ जानना और बारहवें आठवें चौथे सब ग्रह (पाप ग्रह शुभ ग्रह) नेष्ट जानना ॥ ५९ ॥

दशैसप्तत्रिषष्ठाद्यसंस्थितश्चन्द्रमाः शुभः ॥
शुक्लपक्षे तु नवमो द्वितीयः पंचमोऽपि च ॥ ६० ॥

भाषा–दशवें, सातवें, तीसरे, छठे, पहले जो चन्द्रमा हो तो शुभ जानना, शुक्ल पक्षमें नवें, दूसरे, पांचवें हो तो शुभ जानना ॥ ६० ॥

द्विगांर्यांश्चित्रिनंदारयो गोचरे शुभदो बुधः ॥
बृहस्पतिः शुभः प्रोक्तो द्विपंचनवसप्तगः ॥ ६१ ॥

भाषा-दशवें, ग्यारहवें, दूसरे, तीसरे, नवें बुध गोचरमें शुभ होता है, बृहस्पति दूसरे, पांचवें, नवें, सातवें शुभ कहा है ॥ ६१ ॥

एकद्वित्रिदशांयेषु नवाद्रिगंभृगुः शुभः ॥ ६२ ॥

भाषा-पहले, दूसरे, तीसरे, दशवें, ग्यारहवें, पांचवें, नवें, सातवें शुक्र हो तो शुभ जानना ॥ ६२ ॥

द्विपंचमसप्तमनन्दगता चतुराङ्गगद्वादशरन्ध्रयुताः ॥ धनधान्यहिरण्यविनाशकरा रविराहुशनैश्चरभूमिसुताः ॥ ६३ ॥

भाषा-दूसरे, पांचवें, सातवें, नववें, चौथे, पहले, बारहवें, आठवें सूर्य, राहु, शनि, मङ्गल हों तो धनधान्य और हिरण्यका विनाश करनेवाले जानना ॥ ६३ ॥

जन्मनि दशमचतुर्थे त्रिषडाष्टद्वादशे तथाहि ॥ व्याधिं विदेशगमनं मित्रविरोधं सुरगुरुः कुरुते ॥ ६४ ॥

भाषा-पहले, दशवें, चौथे, तीसरे, छठे, आठवें, बारहवें यदि बृहस्पति गोचरमें हो तो व्याधि (रोग), विदेशगमन, मित्रविरोध यह फल करे ॥ ६४ ॥

गोचरसम्बन्धी विशेष विचार हम 'नारायणज्योतिष' के मुहूर्तभागमें लिखेंगे ॥

दिनदशाविचार ।

जन्मभं च चतुर्गुण्यं तिथिवारसमान्वितम् ॥
नवभिस्तु हरेद्भागं शेषं दिनदशोच्यते ॥ ६५ ॥
रविणा शोकसन्तापो शशाङ्के क्षेमलाभको ॥
भूमिपुत्रे त्वनिष्टः स्याद्बुधे प्रज्ञाविवर्धनम् ॥ ६६ ॥

गुरौ चित्तं भृगौ सौख्यं शनौ पीडा न संशयः ॥
राहुणाघातपातौ च केतोर्मृत्युसमं फलम् ॥ ६७ ॥

भाषा–जन्मनक्षत्रकी संख्याको चौगुणा करे और तिथिवारसंख्याको जोड देवे, नवका भाग देवे शेष रहे सो दशा जानना। एक शेष रहे तो सूर्यदशा शोक सन्ताप करे, दो शेष रहें तो चन्द्रदशा क्षेम और लाभ करे, तीन शेष रहें तो मंगलकी दशा मृत्युकारक जानना, चार शेष रहें तो बुधदशा बुद्धि बढावे, पांच शेष रहें तो गुरुदशा धनलाभ करे, छः शेष रहें तो शुक्रदशा सुख करे, सात शेष रहें तो शनिदशा पीडा करे, आठ शेष रहें तो राहुदशा घातपात करे, नव शेष रहें तो केतुदशा मृत्युसम करे यह दिन दिनकी दशा फलसहित जानना। ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥

छिक्काविचार ।

अग्रे कलहकृत् छिक्का चात्मछिक्का महद्भयम् ॥
ऊर्ध्वं चैव शुभं ज्ञेयं मध्ये चैव महद्भयम् ॥ ६८ ॥
आसने शयने चैव दाने चैव तु भोजने ॥
वामाङ्गे पृष्ठतश्चैव षट्छिक्का हि शुभावहाः ॥ ६९ ॥

भाषा–समुहेकी छींक कलहकारी जानना, अपनी छींक महाभयकारी जानना, ऊँची छींक शुभ जानना, नीची छींक महाभयकारी जानना। आसन (बैठे), शयन (सोते समय), दानसमय, भोजनसमय, बाईं ओर पीठ पीछी छींक शुभ जानना अर्थात् ये छः छींक शुभ हैं ॥ ६८ ॥ ६९ ॥

पल्लीपतन ।

पल्ली पतेत्तु शिरसे बहुराज्यलक्ष्मी चाग्रे पतेद्भुवितले बहुदुःखजालम् ॥ वामाङ्गभागे धनहानिमृत्युः सुखप्रदा स्यात्त्रियदक्षिणाङ्गे ॥ ७० ॥

भाषा–यदि स्त्रियोंके शिरपर पल्ली (छिपकली) गिरे तो राज्य और लक्ष्मी देवे और आगे पृथ्वीपर गिरे तो बहुत दुःख मिले, बायें अंगपर यदि छिपकली गिरे तो धनहानि और मृत्युतुल्य करे दाहिने अंगपर गिरे तो सुख देवे ॥ ७० ॥

यदि पतति च पल्ली दक्षिणांगे नराणां ॥
सुजनजनविनाशो[1] लाभकृद्वामभागे ॥
उदरशिरसि कंठे[2] पृष्ठभागे च मृत्युः ।
करपदहृदि गुह्ये सर्वसौख्यं करोति ॥ ७१ ॥

भाषा–यदि मनुष्योंके दाहिने अंगपर छिपकली गिरे तौ सुजन जनोंका विनाश हो, अथवा सुजनोंसे विरोध होवे, बायें अंगपर गिरे तो लाभ करे और उदर (पेट), शिर, कंठ वा वक्षःस्थल (छाती) पर, पीठीपर गिरे तो मृत्युतुल्य करे तथा हाथ, पांव, हृदय, गुदा इन अंगोंपर गिरे तो सब प्रकार सुखी करे ॥ ७१ ॥

अङ्गस्फुरण ।

अङ्गस्य दक्षिणे भागे प्रशस्तं स्फुरणं भवेत् ॥
अप्रशस्तं तथा वामे पृष्ठस्य हृदयस्य च ॥ ७२ ॥

भाषा–यदि पुरुषका दाहिना अंग फरके तो शुभ कहना तथा बायां अंग व पीठ हृदय फरके तो अशुभ कहना, स्त्रीका इससे विपरीत कहना ॥ ७२ ॥

नेत्रस्फुरण ।

नेत्रस्योर्ध्वं हरति सकलं मानसं दुःखजालं ।
नेत्रोपान्ते दिशति च धनं नासिकान्ते च मृत्युः ॥
नेत्रस्याधः स्फुरणमसकृत्सङ्गरे भङ्गहेतु- ।
र्वामे चैतत् फलमविकलं दक्षिणे वैपरीत्यम् ॥७३॥

---

१ विरुद्धमिति पाठान्तरम् । २ वक्षः ।

भाषा–यदि पुरुषके नेत्रका ऊपरी भाग फरके तो मनका सब दुःख दूर हो जावे और नेत्रके समीप फरके तो धनलाभ हो, नासिकाके अंतभाग समीप नेत्र फरके तो मृत्युसमान होवे, नेत्रके नीचे भाग फरकनेसे युद्धमें वारम्वार पराजय होवे, स्त्रियोंके नेत्रका फल इससे विपरीत कहना अर्थात् पुरुषका दाहिना नेत्र और स्त्रीका वायां नेत्र फरके तो यह पूर्वोक्त फल कहना ॥ ७३ ॥

कार्याकार्यप्रश्न ।

तिथिप्रहरसंयुक्ता तारका वारमिश्रिता ॥
अग्निभिस्तु हरेद्भागं शेषसत्वं रजस्तमः ॥ ७४ ॥
सिद्धिस्तात्कालिकी सत्वे रजसा तु विलम्बता ॥
तमसा निष्फलं कार्यं ज्ञातव्यं प्रश्नकोविदैः ॥ ७५ ॥

भाषा–तिथि, प्रहर, नक्षत्र, वारसंख्याको जोडकर तीनका भाग देवे १ शेष रहे तो सत्त्व, २ से रज, ३ से तम जानना, सत्त्वसे तत्काल कार्यकी सिद्धि कहना, रजसे विलम्ब कहना, तमसे निष्फल कहना इस प्रकार पंडितोंको प्रश्न जानना चाहिये ॥ ७४ ॥ ७५ ॥

पंथप्रश्न ।

तिथिः प्रहरसंयुक्ता तारकावारमिश्रिता ॥
वर्तमानं च नक्षत्रं गणयेत्कृत्तिकादितः ॥
सप्तभिस्तु हरेद्भागं शेषं तु फलमादिशेत् ॥ ७६ ॥

भाषा–तिथि, प्रहर, नक्षत्र, वारकी, संख्याको जोडे अथवा वर्तमाननक्षत्रतक कृत्तिकासे गिने सातका भाग देवे जो शेष रहे सो फल कहना ॥ ७६ ॥

एकशेषे भवेत्स्थाने द्वितीये पथि वर्तते ॥
तृतीये चार्धमार्गे तु चतुर्थे ग्रामसन्निधौ ॥ ७७ ॥

पंचमे पुनरावृत्तिः षष्ठे व्याधियुतं वदेत् ॥
शून्यं ज्ञेयं सप्तमे वै चैतत्प्रश्नस्य लक्षणम् ॥ ७८ ॥

भाषा–एक शेष रहे तो स्थानहीपर कहना, दो शेष रहें तो मार्गमें कहना, तीन शेष रहें तो आधे मार्गमें कहना, चार शेष रहें तो ग्रामके समीप कहना, पांच शेष रहे तो आकर फिर लौट जाना कहना, छः शेष रहें तो रोगयुक्त होना कहना, सात शेष रहें तो शून्य फल कहना ये पंथाप्रश्नके लक्षण कहे ॥ ७७ ॥ ७८ ॥

कार्यसिद्धिप्रश्न ।

दिशाप्रहरसंयुक्ता तारकावारमिश्रिता ॥
अष्टभिस्तु हरेद्भागं शेषं प्रश्नस्य लक्षणम् ॥ ७९ ॥

भाषा–दिशा, प्रहर, नक्षत्र, वारकी संख्याको जोडकर आठका भाग देवे शेषांकसे प्रश्नका फल कहे ॥ ७९ ॥

पंचैके त्वरिता सिद्धिः षट्तुर्ये च दिनत्रयम् ॥
त्रिसप्तके विलंबश्च द्वौ चाष्टौ न च सिद्धिदौ ॥ ८० ॥

भाषा–५।१ शेष रहें तो तुरंत सिद्धि होवे, ६।४ शेष रहें तो सिद्धि ३ दिनमें होवे, ३।७ शेष रहें तो विलम्बसे कार्यसिद्धि होवे और २।८ शेष रहें तो कार्यसिद्धि नहीं होवे ॥ ८० ॥

गर्भिणीप्रश्न ।

तत्प्रश्नलग्ने रविजीवभौमे तृतीयसप्ते नवपंचमे च ॥ गर्भः पुमान्वै ऋषिभिः प्रणीतश्चान्यग्रहे स्त्रीविबुधैः प्रणीता ॥ ८१ ॥

भाषा–प्रश्नसमय यदि लग्नमें, तीसरे, सातवें, नवें, पांचवें सूर्य गुरु मंगल हों तो गर्भिणीके गर्भसे पुत्रकी उत्पत्ति कहना और अन्य ग्रह चन्द्र, बुध, शुक्र, शनि हों तो कन्याकी उत्पत्ति कहना ऐसा ऋषियोंने कहा है ॥ ८१ ॥

आषाढस्यासिते पक्षे दशम्यादिदिनत्रये ॥
रोहिणीकालमाख्याति सुखदुर्भिक्षलक्षणम् ॥ ८२ ॥
रात्रावेव निरभ्रं स्यात्प्रभाते मेघडम्बरम् ॥
मध्याह्ने जलबिन्दुः स्यात्तदा दुर्भिक्षकारणम् ॥८३॥

भाषा–आषाढके कृष्णपक्षकी दशमीसे तीन दिन (१० । ११ । १२) रोहिणीनक्षत्र हो तो सुभिक्ष, मध्यम, दुर्भिक्ष ये फल क्रमसे जानना, रात्र मेघरहित हो, प्रातःसमय मेघ गर्जे, मध्याह्नसमय जलकी बूंदें गिरें ऐसे लक्षण हों तो दुर्भिक्षका कारण जानना ॥८२॥८३॥

कुंभकर्कवृषा मीनमकरौ वृश्चिकस्तुला ॥
जललग्नानि चोक्तानि लग्नेष्वेतेषु सूर्यभम् ॥
भवत्येव सदा वृष्टिर्ज्ञातव्या गणकोत्तमैः ॥ ८४ ॥

भाषा–कुंभ, कर्क, वृष, मीन, मकर, वृश्चिक, तुला ये जललग्न हैं इनमें यदि सूर्यनक्षत्रप्रवेश हो तो पंडितोंकरके वृष्टि होना जानना चाहिये ८४

अश्विनीमृगपुष्येषु पूषविष्णुमघासु च ॥
स्वात्यां प्रविशते भानुर्वर्षते नाऽत्र संशयः ॥ ८५ ॥

भाषा–अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य, रेवती, श्रवण मघा, स्वाति इन नक्षत्रोंमें सूर्यप्रवेश हो तो निःसन्देह वर्षा होवे ॥ ८५ ॥

आर्द्रादिदशकं स्त्रीणां विशाखास्त्रिनपुंसकम् ॥
मूलाच्चतुर्दशं पुंसां नक्षत्राणि क्रमाद्बुधैः ॥ ८६ ॥
वायुर्नपुंसके भे च स्त्रीणां भे चाभ्रदर्शनम् ॥
स्त्रीणां पुरुषसंयोगे वृष्टिर्भवति निश्चितम् ॥ ८७ ॥

भाषा–आर्द्रा आदि दश नक्षत्र स्त्रीसंज्ञक, विशाखासे तीन नक्षत्र नपुंसकसंज्ञक, मूलसे चौदह नक्षत्र पुरुषसंज्ञक जानना, नपुं-

सक नक्षत्र नपुंसकनक्षत्रमें प्रवेश हो अथवा नपुंसकनक्षत्रमें स्त्रीनक्षत्र प्रवेश हो तो वायु चले, स्त्रीनक्षत्रमें स्त्रीनक्षत्र प्रवेश हो तो मेघोंकी छाया रहे परन्तु वर्षा नहीं होवे और स्त्रीनक्षत्र पुरुषनक्षत्रमें प्रवेश हो वा पुरुषनक्षत्र स्त्रीनक्षत्रमें प्रवेश हो तो निश्चय वर्षा होवे ॥८६॥८७॥

सूर्यचन्द्रमण्डलफल ।

रविशशिपरिवेषे पूर्वयामे च पीडा ।
रविशशिपरिवेषे मध्ययामे च वृष्टिः ॥
रविशशिपरिवेषे धान्यनाशस्तृतीये ।
रविशशिपरिवेषे राज्यभंगश्चतुर्थे ॥ ८८ ॥

भाषा-सूर्य वा चन्द्रमाका मंडल जो पहले प्रहरमें हो तो मनुष्योंको पीडा होवे, दूसरे प्रहरमें हो तो वृष्टि होवे, तीसरे प्रहरमें हो तो धान्यका नाश होवे, चौथे प्रहरमें हो तो राज्यभंग होवे ॥८८॥

पशुप्रश्न ।

द्युमणिभान्नवभेषु वने पशुं तदनु षट्सु च कर्णपथे स्थितम् ॥ अचलभेषु गतं गृहमागतं द्वयगतं गतमेव मृतं त्रिषु ॥ ८९ ॥

भाषा-जो सूर्यनक्षत्रसे नव नक्षत्रतक पशु खो जावे तो वनमें कहना, अनन्तर छः नक्षत्रतक मार्गमें कहना, फिर ७ नक्षत्रतक घरमें आया कहना, तदनन्तर २ नक्षत्रतक आनेवाला नहीं ऐसा कहना, फिर ३ नक्षत्रतक मर गया कहना । प्रश्नविषयका पूरा विचार ' प्रश्नमार्त्तण्ड ' में लिखेंगे ॥ ८९ ॥

नष्टवस्तुप्रश्न ।

अन्धकं तदनु मन्दलोचनं मध्यलोचनमतः सुलोचनम् ॥ रोहिणीप्रभृतिभं चतुर्विधं नूनमत्र गणयेत्पुनः पुनः ॥ ९० ॥

अन्धे सद्यः प्राप्यते वस्तु नष्टं कष्टात्प्राप्यं मन्दनेत्रे च तद्वत् ॥ दूराच्छ्राव्यं मध्यनेत्रे न लभ्यं न श्रोतव्यं नैव लभ्यं सुनेत्रे ॥ ९१ ॥

भाषा–रोहिणीको लेके चार नक्षत्र क्रमसे अन्ध, मन्दलोचन, मध्यलोचन, सुलोचन संज्ञावाले जाने सो चक्रसे स्पष्ट गणनाकी रीति जानना, अन्ध नक्षत्रमें खोई वस्तु शीघ्र मिले, मन्दलोचनमें खोई वस्तु कष्टपूर्वक (यत्नसे) मिले, मध्य नक्षत्रमें खोई वस्तु दूरसे सुन पडे, सुलोचनमें खोई वस्तु न सुन पडे और न प्राप्त होवे ॥ ९० ॥ ९१ ॥

अन्ध	रो	पु	उ	वि	पू	श	अ
मंदलोचन	मृ	ऽश्ले	ह	ऽनु	उ	पू	भ
मध्यलोचन	आ	म	चि	ज्ये	श्र	उ	कृ
सुलोचन	पु	पू	स्वा	मू	ध	रे	रो

मघादि चार्यमांतं च समीपे वस्तु दृश्यते ॥
हस्तादि वसुपर्यन्तमन्यहस्ते च दृश्यते ॥ ९२ ॥
शतताराद्यमान्तं तु स्वगृहे वस्तु दृश्यते ॥
अग्न्यादिसार्पपर्यन्तमदृष्टं दूरगं तथा ॥ ९३ ॥

भाषा–मघासे उत्तराफाल्गुनीतक खोई हुई वस्तु समीप दीख पडे, हस्तसे धनिष्ठातक खोई हुई वस्तु दूसरेके हाथमें दीख पडे, त भिषासे भरणीतक खोई वस्तु नहीं दीख पडे, कृत्तिकासे आश्लेषातक खोई वस्तु नहीं दीख पडे और दूर सुन पडे ॥ ९२ ॥ ९३ ॥

तिथिवारं च नक्षत्रं प्रहरेण समन्वितम् ॥
दिक्संख्यया हतं चैव सप्तभिर्विभजेत्पुनः ॥ ९४ ॥
एकेन भूतले द्रव्यं द्वयं चेद्भाण्डसंस्थितम् ॥
तृतीये जलमध्यस्थमन्तरिक्षे चतुर्थके ॥ ९५ ॥

तुषस्थं पंचमे तु स्यात्षष्ठे गोमयमध्यगम् ॥
सप्तमे भस्ममध्यस्थमित्येतत्प्रश्नलक्षणम् ॥ ९६ ॥

भाषा–तिथि, वार, नक्षत्र, प्रहर इनकी संख्याको मिलाय जिस दिशामें प्रश्नकर्त्ता बैठा होवे पूर्वादि उस संख्यासे गुणे अथवा दिशा आठ कही हैं सो आठसे गुणे अथवा दिक् नाम दशका है सो दशसे गुणे और सातका भाग देवे जो १ शेष रहे तो पृथ्वीमें वस्तु जानना, २ शेष रहें तो किसी पात्रमें वस्तु जानना, ३ शेष रहें तो जलके बीच वस्तु जानना, ४ शेष रहें तो अन्तरिक्षमें वस्तु रक्खी जानना, ५ शेष रहें तो तुष (भूसी)में वस्तु जानना, ६ शेष रहें तो गोबरमें वस्तु जानना, ७ शेष रहें तो भस्म (राख) में वस्तु जानना यह प्रश्नका लक्षण कहा ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥

विशेष ज्ञातव्य ।

ताराशुद्धं क्षौरं रविगुरुशुद्धा व्रतं दीक्षा ॥
शुक्रविशुद्धा यात्रा सर्वं शुद्धं शशाङ्केन ॥ ९७ ॥

भाषा–क्षौरकर्ममें ताराकी शुद्धि, व्रत और दीक्षामें सूर्य और गुरुकी शुद्धि, यात्रामें शुक्रकी शुद्धि, सब कामोंमें चन्द्रमाकी शुद्धि देखके मुहूर्त बताना ॥ ९७ ॥

सम्वत्सरफल ।

प्रभवाद्द्विगुणं कृत्वा त्रिभिर्न्यूनं च कारयेत् ॥
सप्तभिस्तु हरेद्भागं शेषांके फलमादिशेत् ॥ ९८ ॥
एकं चत्वारि दुर्भिक्षं पंचद्वाभ्यां सुभिक्षकम् ॥
त्रिषष्ठं तु समं ज्ञेयं शून्ये पीडा न संशयः ॥ ९९ ॥

भाषा–प्रभव आदि सम्वत्सरसंख्याको दूना करके तीन घटा देवे सातका भाग देवे जो अंक शेष रहे उससे फल कहे, जो १ । ४

शेष रहें तो दुर्भिक्ष जानना, ५।२ रहें तो सुभिक्ष कहना, ३। ६ रहें तो सम भाव जानना, शून्य शेष रहे तो पीडा जानना ॥९८॥९९॥

वारानुसारमासफल ।

पंचाऽर्कवासरे रोगाः पंच भौमे महद्भयम् ॥
पंचाऽर्किवारा दुर्भिक्षं शेषा वाराः शुभप्रदाः१००॥

भाषा—महीनेमें पांच रविवार हों तो रोग होवे, पांच मङ्गल होनेसे महाभय होवे, पांच शनि हों तो दुर्भिक्ष होवे, शेष (चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शुक्र) होवें तो शुभ जानना ॥ १०० ॥

चन्द्रग्रहणविचार ।

भानोः पंचदशे ऋक्षे चन्द्रमा यदि तिष्ठति ॥
पौर्णमास्यानिशाशेषे चन्द्रग्रहणमादिशेत् ॥१०१॥

भाषा—सूर्यनक्षत्रसे पन्द्रहवें नक्षत्रमें जो चन्द्रमा हो तो पूर्णमासीको प्रतिपदाकी सन्धिमें रात्रिसमय चन्द्रग्रहण होता है ॥ १०१ ॥

सूर्यग्रहणविचार ।

विधूनग्रस्तनक्षत्रात्षोडशं यदि सूर्यभम् ॥
अमावास्यादिवाशेषे सूर्यग्रहणमादिशेत् ॥ १०२ ॥

भाषा—जिस चान्द्रमासमें पूर्णिमाके नक्षत्रसे सोलहवां नक्षत्र सूर्य स्थित नक्षत्र हो अथवा प्रतिमासकी अमावास्याके दिन सूर्य चन्द्र एक राशिपर होते हैं परंतु एक नक्षत्रपर उस दिन हों तो प्रतिपदाकी सन्धिमें दिनके समय सूर्यग्रहण होता है ॥ १०२ ॥

घातचन्द्रविचार ।

जन्मस्थो मेषराशेः स्याद्वृषभस्य तु पंचमः ॥
नवमो मिथुनस्य [illegible]ः द्वितीयः कर्कटस्य च ॥१०३॥
षष्ठस्तु [illegible] कन्यायां दशमः स्मृतः ॥
तृतीय[illegible] ॥ [illegible]श्चिकस्य च सप्तमः ॥ १०४ ॥

चतुर्थो धन्विनो ज्ञेयो मकरस्याष्टमस्तथा ॥
कुंभस्यैकादशः प्रोक्तो मीनस्य द्वादशः स्मृतः १०५
घातचन्द्रा इमे वर्ज्या यात्रायां राजदर्शने ॥
विवादे वाहनारोहे युद्धे भैषज्यसेवने ॥ १०६ ॥

भाषा–मेषराशिवालेको जन्मचन्द्रमा, वृषको पांचवां, मिथुनको नवां, कर्कको दूसरा, सिंहको छठा, कन्याको दशवां, तुलाको तीसरा, वृश्चिकको सातवां, धनुको चौथा, मकरको आठवां, कुंभको ग्यारहवां, मीनको बारहवां चन्द्रमा घातिक कहा है. यात्रा, राजदर्शन, विवाह, वाहनके चढने, युद्ध और औषधसेवनमें वर्जित करे ॥ १०३ ॥ ॥ १०४ ॥ १०५ ॥ १०६ ॥

तीर्थयात्राविवाहान्नप्राशनोपनयादिषु ॥
मांगल्यसर्वकार्येषु घातचन्द्रं न चिन्तयेत् ॥१०७॥

भाषा–तीर्थयात्रा, विवाह, अन्नप्राशन, उपनयन आदि मङ्गलकार्यमें घातचन्द्रका विचार न करे ॥ १०७ ॥

ऋणिधनिविचार ।

स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत् ॥
अष्टभिस्तु हरेद्भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत् १०८

भाषा–अपने वर्गको दूना करके परवर्गसंख्या जोडकर आठका भाग देवे एवं परवर्णको दूना कर निज वर्गसंख्या मिलाय आठका भाग देवे जिसका शेष अंक अधिक संख्यावाला हो वह ऋणी जानना ॥१०८॥

तत्कालपंचांग ।

सूर्योदयाद्गतघटीदलमिश्रिता च ।
वारर्क्षयोगतिथयो निजभागहार्य्याः ॥
सद्यो हि राजगमनाय सुखं प्रदिष्ट-
मुद्दालकेन मुनिना भणितं पुरस्तात् ॥ १०९ ॥

भाषा–सूर्योदयसे गत घटीमें उससे आधी संख्या मिलाय अर्थात् इष्ट घटीको ड्यौढा करे उसमें ७ का भाग देके शेषांकसे सूर्यादि वार जाने, २७ का भाग देके अश्विन्यादि नक्षत्र और विष्कुंभ आदि योग जानना, १५ का भाग देके प्रतिपदादि तिथि जानना, शीघ्र राजयात्राके निमित्त यह पञ्चांग विचारे यह उद्दालकमुनिने पूर्व वर्णन किया है ॥ १०९ ॥

गुर्वादित्यविचार ।

यद्येकराशौ गुरवोऽर्कयोगे न कारयेत्सर्वशुभं वरिष्ठम् ॥ ऋक्षान्तरेऽर्कैज्ययदैकराशौ तदा न दोषो कथितो मुनीन्द्रैः ॥ ११० ॥

भाषा–यदि गुरु, सूर्य एक राशिपर हों तो शुभ कार्य नहीं करे परन्तु यदि नक्षत्रभेद हो और जो एक राशिपर सूर्य गुरु हों तो कुछ दोष नहीं ऐसा मुनियोंने कहा है ॥ ११० ॥

चन्द्रभ्रमणविचार ।

अजमुखहरिचापाद्यादिचारुक्रमेण ।
भ्रमतितरादिशायां चन्द्रमा चाष्टदिक्षु ॥
घन[१७]तिथि[१५]शशिनेत्र[२१]भूप[१६]मेघा[१७]श्रुतींदु[१४]- ।
खभुजं[२०]तिथि[१५]घटीभिर्दक्षिणाग्रे शुभं स्यात् ॥ १११ ॥

भाषा–मेष, सिंह, धनु आदिका चन्द्रमा पूर्व आदि आठों दिशाओंमें क्रमसे १७।१५। २१।१६।१७।१४।२०।१५ घटीपर्यंत भ्रमण करता है, चन्द्रराशि १३५ में क्रमसे चक्रमें लिखे अनुसार दिशा जानकर आवश्यक कार्य निमित्त चन्द्रमा दहिने और समुहे शुभ विचार कर बताना ॥ १११ ॥

ई. १५	पू. १७	अ. १५
उ. २०	सर्वघटी १३५	द. २१
वा. १४	प. १७	नै. १६

नामराशिप्रधानता ।

देशे ज्वरे ग्रामगृहप्रवेशे सेवासु युद्धे व्यवहारकार्ये ॥ द्यूते च दानादिषु नामराशिर्यात्राविवाहादिषु जन्मराशिः ॥ ११२ ॥

तथाच । देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके ॥ नामराशिप्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत् ॥ ११३ ॥

भाषा–देश, ज्वर, ग्रामवास, गृहप्रवेश, सेवा, युद्ध, व्यवहारकार्य, द्यूतकर्म, दान आदि कामोंमें नामराशिसे विचार करे, यात्रा विवाह आदि कार्योंमें जन्मराशिसे विचार करना योग्य है ॥ ११२ ॥ ११३ ॥

सीमन्ते च विवाहे च चतुर्थीसहभोजने ॥
दाने व्रते मखे श्राद्धे पत्नी तिष्ठति दक्षिणे ॥११४॥

भाषा–सीमन्तकर्म, विवाह, चतुर्थी और भोजनकर्म, दान, व्रत, यज्ञ, श्राद्धमें स्त्री दाहिनी ओर बैठती है ॥ ११४ ॥

द्वादशस्थचन्द्रपरिहार ।

पट्टबन्धनचौलान्नप्राशने चोपनायने ॥
पाणिग्रहणप्रयाणे च चन्द्रमा व्ययगः शुभः॥११५॥

भाषा–पट्टबन्धन, मुंडन, अन्नप्राशन, उपनयन, विवाह, यात्रा इन कर्मोंमें चन्द्रमा बारहवां शुभ होता है ॥ ११५ ॥

ग्रन्थसमाप्तिसमय ।

रामकृत्वङ्कचन्द्रेऽब्दे माधवस्यासितेतरे ॥
पंचम्यां शनिवारे च ग्रन्थः सम्पूर्णतां गतः ॥ १ ॥

भाषेयं रचिता प्रेम्णा श्रीनारायणशर्म्मणा ॥
अत्र कुत्राप्यशुद्धं चेत्क्षन्तव्यं विबुधैर्नरैः ॥ २ ॥

भाषा-विक्रमीय सम्वत् १९६३ वैशाखशुक्लपंचमी शनिवारके यह ग्रन्थ पूर्ण भया यह भाषा प्रेमसे पंडित नारायणप्रसादमिश्रने रचना करी, यहां कहीं कुछभी अशुद्धता हो तो पंडितजनोंको क्षमा करना चाहिये ॥ १ ॥ २ ॥

इति श्रीमन्मिश्रशोभारामात्मजज्योतिर्वित्पण्डितनारायणप्रसादमिश्रविलिखिते बालबोधाख्यसारसंग्रहे मिश्ररत्नं पंचमं समाप्तम् ॥५ ॥

इति भाषाटीकासहितो बालबोधज्योतिषसारसंग्रहः समाप्तः ।

७।६।१३

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-
गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना,
कल्याण-मुंबई.

जातकसंग्रह भाषाटीकोपेत।

संसारमें विशेषकरके उसी ग्रंथका समादर है जो कि अपने सजातीय ग्रंथोंमें साररूप है क्योंकि कालचक्रकी विकराल गतिसे अब वह समय नहीं है, जिसमें समस्त शास्त्रोंके रहस्यके जाननेकी बुद्धि शक्ति सामर्थ्य प्रागल्भ्य धारणा दीर्घायुरूप सामग्री प्राप्त हो, आधुनिक समयके मनुष्य प्रथम तौ अल्पायु होते हैं तिसपरभी अनेकानेक रोगभय फिर बहुधा विघ्न इतनेपरभी दुर्भाग्य और बुद्धिहीनता आदिसे संकुचित होते चले जाते हैं, फिर कहिये समस्त शास्त्रोंका तत्त्वज्ञान एक व्यक्तिमें किस प्रकार आ सक्ता है इसी कारण समस्त जातकग्रंथोंसे सार २ लेकर जिन विचारोंकी कि जन्मपत्रफला देशमें आवश्यकता होती ह वह सबही समस्त जातकग्रंथोंसे लिखे गये हैं जैसे प्रथमभावके विचारमें रूप, वर्ण, चिह्न, जाति, आयु, सुख, दुःख इत्यादि; द्वितीयभावके विचारमें धन-सुख, नेत्रावयव इत्यादि; तृतीयभावके विचारमें भ्रातृपराक्रम इत्यादि; चतुर्थभावके विचारमें गृह, ग्राम, चतुष्पदवाहन-भूमि, मित्रमातृपितृसुख इत्यादि; पंचमभावके विचारमें रोग, शत्रुपीडा इत्यादि सप्तमभावके विचारमें जाया, व्यापार, गमन, आगमन इत्यादि; अष्टमभावके विचारमें दुर्ग, अल्प, कष्ट, मरणहेतु इत्यादि; नवमभावके विचारमें भाग्य, तीर्थ, धर्मसं-बंधिकार्य इत्यादि; दशमभावके विचारमें, राज्य, मुद्रा, व्यापार, राजमान, महत्पद, पितृसुख इत्यादि; एकादशभावके विचारमें गज, अश्व, सुवर्ण, वस्त्र लाभालाभ इत्यादि; द्वादशभावके विचारमें हानि, दान, व्यय, कपट इत्यादि विषय प्रसिद्ध २ जातकग्रंथोंके प्रमाणसे संगृहीत हैं इसके अतिरिक्त पंचमहा-पुरुषलक्षण और चौरासी योग और सब प्रकारके राजयोग प्राचीन महर्षिप्रणीत जातकग्रंथोंसे लिखे गये हैं, कोई विशेष बात छोडी नहीं गईहै जो अन्य जातकग्रंथोंमें पाई जावे। यह ग्रंथ मूलमात्र तौ छपही चुका था परन्तु इसमें सर्वत्र गूढ २

